वर्ष २
खण्ड १

भविष्य

संख्या २
पूर्ण संख्या ५२

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

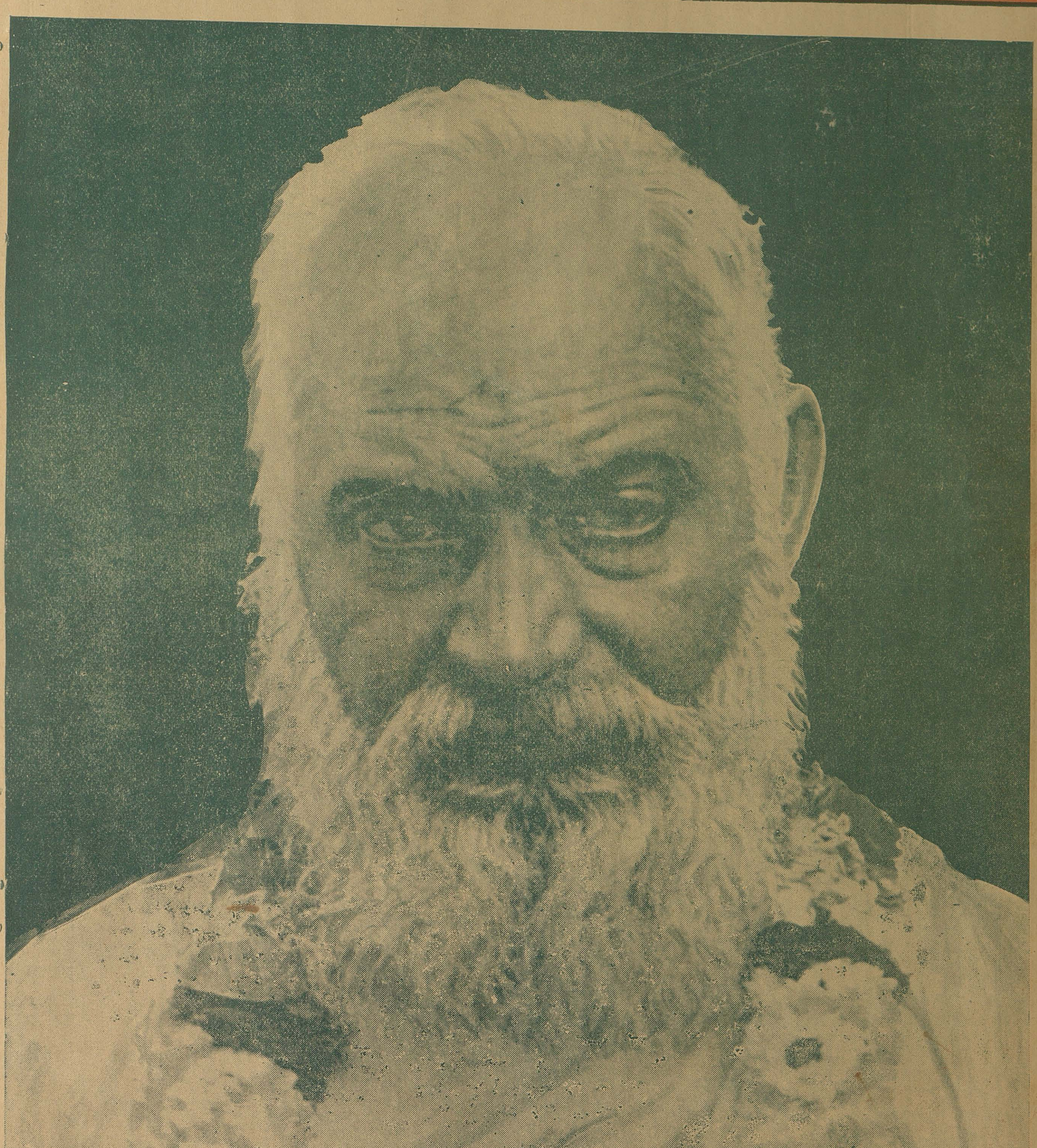

भारतीय धारा सभा के (भूतपूर्व) प्रेज़िडेण्ट और सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ एवं वक्ता—श्री० विट्ठलभाई पटेल

दीवाली का अनूठा उपहार

इस अङ्क का मूल्य लगभग ३) रु०

ग्राहकों को मुफ़्त !

का

राजपूताना-अङ्क

"भविष्य" और "चाँद" के विद्वान् लेखक—

डॉक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी-लिट्, विशारद

के सम्पादकत्व में प्रकाशित होगा !

इसकी विशेषताएँ :—

राजपूताने की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दशा का

सच्चा चित्र और सुधार के उपाय

इसमें निम्न-लिखित लेख प्रकाशित करने का उद्योग किया जा रहा है :—

- वर्तमान राजपूत कौन हैं—हूण या आर्य ?
- मेवाड़—प्रताप से पूर्व और पीछे (सचित्र)
- राजपूताने के प्रसिद्ध युद्ध
- राजपूताने के प्रसिद्ध क़िले (सचित्र)
- जौहर और भीषण आत्मोत्सर्ग (सचित्र)
- मुग़ल-कालीन राजपूताना (सचित्र)
- राजपूताने की रियासतों से अङ्गरेज़ी सरकार की सन्धियाँ।
- राजपूताना और मराठे
- राजपूतों के अन्तःपुर
- रियासतों का राज-प्रबन्ध
- राजपूताने में राजनैतिक असन्तोष
- बीजोलिया और बूँदी
- ग़ुलाम और बेगार
- राजपूताने के कर
- मारवाड़ी व्यापारी
- राजपूताने के अङ्गरेज़ी अफ़सर
- डिङ्गलकाव्य
- मीराबाई के भजन
- जयपुर का अजायबघर
- राजपूत चित्र-कला

इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि।

शीघ्र ही ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

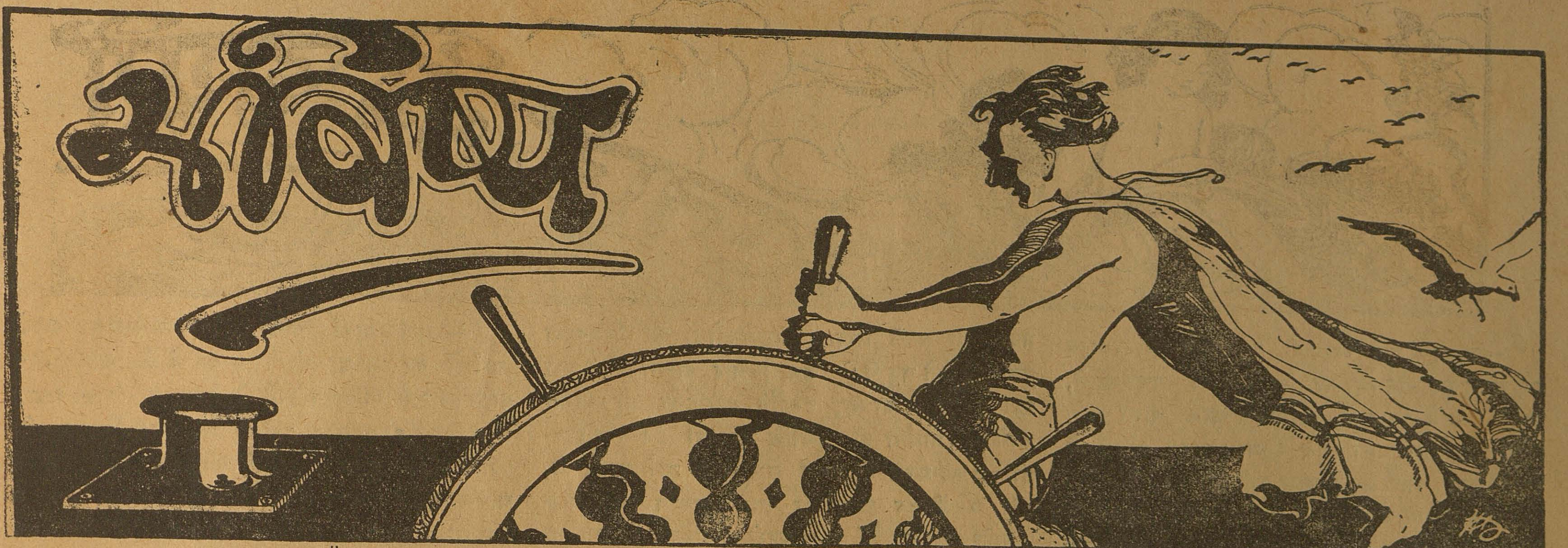

वर्ष २, खण्ड १ | इलाहाबाद—सोमवार ; १९ अक्टूबर, १९३१ | संख्या ३, पूर्ण संख्या ५३

ढाका में फिर भयङ्कर डकैती :: डाक के थैले लूटे गए

इलाहाबाद के किसानों में असन्तोष की भीषण आग

लगान चुकाने के लिए बैल और ज़ेवर बिक गए

(निज सम्वाददाता द्वारा)

इलाहाबाद, १७ अक्टूबर

श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन ने इलाहाबाद ज़िले में सत्याग्रह की आज्ञा दिए जाने के सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी को जो पत्र लिखा है उसका कुछ अंश इस प्रकार है :—

जब दिल्ली समझौते के अनुसार हमने करबन्दी के आन्दोलन को रोका था तो हम को आशा थी कि अब गवर्नमेण्ट सहानुभूति से काम लेगी और किसानों पर अत्याचार न होंगे। पर अब हो यह रहा है कि कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन से छुट्टी पाकर गवर्नमेण्ट ज़मींदारों के साथ मिल कर किसानों को कुचलने में जुट पड़ी है। किसानों को दबाना, बेदख़ल करना, मारपीट करना, पुलिस की सहायता से लगान वसूल करना मामूली बातें हो गई हैं। सन् १३३८ फ़सली का लगान चुकाने के लिए ही किसानों को बैल और अपने घर के दो चार ज़ेवर बेच देने पड़े थे, या बहुत अधिक ब्याज पर क़र्ज़ लेना पड़ा था। अब सन् १३३९ के नए वर्ष में सरकार ने २ आना ७ पाई फ़ी रुपया छूट देने की घोषणा की है। पर खेती की उपज का दाम आधे से भी कम हो गया है। इसलिए यह सम्भव नहीं कि किसान अनाज आदि की बिक्री से लगान चुका सकें। फल यही होगा कि फिर उनको तङ्ग किया जायगा और मार-पीट होने लगेगी। इस परिस्थिति में हम को यही उचित जान पड़ता है कि किसानों को लगान क़तई न देने को कहें। हम जानते हैं कि इससे भी कष्ट में पड़ना, होगा पर बराबर चक्की में पिसते रहने की अपेक्षा लड़कर मर जाना अधिक अच्छा है।

लाहौर में षड्यन्त्रों का लम्बा सिलसिला

आठ आदमियों पर गुप्त-पर्चे बाँटने का अभियोग

लाहौर, १६ अक्टूबर

तीसरा षड्यन्त्र का मुक़दमा आज क्रान्तिकुमार, सोहनलाल, मोहम्मद अफ़ज़ल, प्यारेलाल, गुरुदासराम, कल्यानसिंह, टीकाराम और हरीदत्त के विरुद्ध ऐडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० लेविस के इजलास में पेश हुआ। लाला दुनीचन्द पाँच अभियुक्तों की ओर से सफ़ाई के वकील की हैसियत से उपस्थित हुए और दो की ओर से मि० सरनदास। क्रान्तिकुमार ने इस बात के विरोध में कि उनके एक सम्बन्धी को अदालत में आने की आज्ञा नहीं मिली थी, कोई वकील नहीं खड़ा किया। रायबहादुर ईशरदास मेहता सरकारी वकील थे। पहिला सरकारी गवाह खरायतचन्द्र कॉन्स्टेबिल ने कहा कि गत १ अगस्त को तिलक-दिवस की मीटिङ्ग में मैंने अभियुक्त सोहनलाल को भीड़ के अन्दर हरे पर्चे फेंकते हुए देखा था। मैंने उसे पकड़ने की कोशिश की, किन्तु पकड़ नहीं सका। मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलीस को फ़ोन किया और उनका हुक्म पाकर पर्चों को उनके स्थान पर ले गया। खरायतचन्द्र ने कहा कि सोहनलाल मेरे साथ दयालसिंह कॉलेज में पढ़ता था, इसलिए मैं उसे जानता हूँ। मैं सोहनलाल को नौजवान-भारत-सभा की मीटिङ्गों और जुलूस में शामिल होते देखता था। मीटिङ्ग में उपस्थित अन्य अभियुक्तों को भी मैं जानता हूँ। जिरह में खरायतचन्द्र ने कहा कि पर्चे जब फेंके गए, उस वक्त, भीड़ तितर-बितर हो रही थी।

दूसरे गवाह भारत प्रिण्टिङ्ग प्रेस के स्वामी के लड़के रामनाथ ने कहा कि वे पर्चे मेरे पिता के प्रेस में छपे थे। अभियुक्त कल्यानसिंह प्रेस में फ़ोरमैन था। इस तरह के पर्चे मेरे प्रेस में जुलाई, १९३१ में छपते थे। पुलीस ने ३० अगस्त को तलाशी ली और रङ्गीन पर्चे उठा ले गई। कुछ दिन पहले अभियुक्त मोहम्मद अफ़ज़ल ने दु-पिठे पर्चे की छपाई पूछी थी। मैंने बतला दी। अफ़ज़ल ने मुझसे कहा कि वह पर्चे की कॉपी कल्यानसिंह को दे देगा। शनिवार को मोहम्मद अफ़ज़ल और हरीदत्त आए और सीधे कल्यानसिंह के पास चले गए और पर्चे की कॉपी उसको दे दी। कल्यानसिंह ने मुझसे कहा कि १ रु० ५ आने उसने काग़ज़ में ख़र्च किए और बाक़ी मुझे दे दिया! दूसरे दिन पुलीस पर्चे ले गई। मुक़दमा २३ अक्टूबर के लिए मुल्तवी कर दिया गया।

बम्बई, १७ अक्टूबर

आज गोलमेज़ परिषद् के प्रतिनिधियों का आख़िरी दल 'वायसरॉय' जहाज़ से लन्दन के लिए रवाना हो गया। प्रतिनिधियों में सर चिमनलाल सेतलवाड, कावसजी जहाँगीर, अब्दुल क़य्यूम, ग़ुलाम हुसैन हिदायतुल्ला, जमाल मुहम्मद, राजा शेर मुहम्मद ख़ाँ और श्री० जाधव थे। जहाज़ पर सम्वाद-दाता के पूछने पर अब्दुल क़य्यूम ने कहा कि मैं प्रान्तों के फिर से बाँटे जाने में विश्वास नहीं रखता। क्योंकि इससे राष्ट्रीयता की वृद्धि नहीं होगी, वरन् एक जाति पर दूसरी जाति का अधिकार अधिक बढ़ जायगा। सर जमाल मुहम्मद ने कहा कि मुझे विश्वास है कि साम्प्रदायिक प्रश्न का ऐसा निर्णय हो सकेगा जो सब के लिए सन्तोषजनक हो। सर कावसजी जहाँगीर ने आशा प्रकट की कि जब हम भारत लौट कर आएँगे तो यहाँ के व्यापार और कारबार की दशा उन्नत हो जायगी।

ढाका, १७ अक्टूबर

जिनार्दी रेलवे स्टेशन पर रात के समय नवयुवकों के एक सशस्त्र दल ने डाक पर फिर डाका डाला। डाकू डाक के चार थैले लेकर ग़ायब हो गए।

—ऑल इण्डिया कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी ने प्रकाशित किया है कि वर्किङ्ग कमिटी की बैठक ता० २७ अक्टूबर को दोपहर के समय दिल्ली में डॉ० अन्सारी के मकान पर होगी।

—बम्बई के अछूतों की तरफ़ से श्री० बी० जे० देउरकर ने नीचे लिखा तार महात्मा गाँधी और भारत-मन्त्री को भेजा है :—

"बम्बई के अछूत, जिनमें महार, चमार, मोची, मेहतर, भङ्गी आदि सम्मिलित हैं; आपकी राष्ट्रीय माँगों के पक्ष में हैं। वे डॉ० अम्बेदकर के प्रतिनिधित्व को अस्वीकार करते हैं और उन्होंने आप पर जो असामयिक और नीच आक्षेप किए हैं, उनकी निन्दा करते हैं।"

लन्दन, १७ अक्टूबर

म० गाँधी आज दिन के ग्यारह बजे सेण्ट पैङ्क्रास से नटिङ्घम् के लिए रवाना हो गए, जहाँ वे रविवार को रहेंगे। उनके साथ में उनके लड़के, श्रीमती मीरा बहिन और उनके सेक्रेटरी हैं। रवाना होते समय कुछ लोग उनको देखने को इकट्ठे हो गए थे।

—ढाका में एक व्यापारी ६० तोला सोना लिए हुए अपने घर लौट रहा था। रास्ते में दो नवयुवकों ने, जिनके पास रिवॉल्वर थे, आक्रमण करके सोना छीन लिया और भागने का प्रयत्न किया। परन्तु लोगों ने पकड़ लिया। माल उनके पास नहीं मिला।

श्री० परेशनाथ मुकर्जी नामक व्यक्ति को कलकत्ते के प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने एक कारतूस रखने के अभियोग में छः मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी है। अभियुक्त ने बेकर होस्टल में जाकर कहा था कि मैं मुसलमान हूँ और मेरा पास खो गया है। उसने लोगों से कुछ रुपया माँगा, जिससे वह ढाका पहुँच सके। होस्टल वालों को उस पर ठग होने का शक हुआ और उसे पुलीस के सुपुर्द कर दिया। तलाशी लेने पर उसके पास एक भरा हुआ कारतूस मिला।

—चटगाँव के पुलीस इन्स्पेक्टर ख़ाँ बहादुर एहसानउल्ला की हत्या के मुक़दमे की कार्रवाई में अभियुक्त हरीप्रशाद ने एक घण्टे तक अपना बयान दिया। उन्होंने कहा—३० अगस्त को मैं निज़ामत पल्टन में फ़ुटबॉल मैच देखने गया था। खेल समाप्त होने पर क्रैकर फटने की ख़बर सुनी और देखा कि लोग दौड़ रहे हैं। मैं भी दक्षिण की ओर दौड़ा और पीछे से मुझे किसी ने मारा। मैं बेहोश हो गया और जब होश आया, तो मैंने अपने को कोतवाली में पाया। वहाँ मुझे बुरी तरह पीटा गया और दूसरे प्रकार से सताया गया और मुझसे क़बूल कर लेने के लिए कहा गया। तकलीफ़ों को सहन न कर सकने पर मैंने वह बयान देना मञ्जूर कर लिया, जो मुझसे क़बूल करने को कहा गया था। दूसरे दिन मुझे अपने गाँव ले जाया गया। वहाँ मुझे और मेरे बालदैन को बाँधा गया और पीटा गया। घर भी जला दिया गया। शहर लौटने पर मुझे सब डिवीज़नल ऑफ़िसर के मकान पर ले जाया गया, जहाँ मैंने क़बूल करने से इन्कार कर दिया। जेल में भी मुझे पीटा गया। वहाँ सब डिवीज़नल ऑफ़िसर ने काग़ज़ों से, जो उन्हें पुलिस द्वारा दिए गए थे, बयान लिखा। अभियुक्त ने कहा, मुझे धमका कर हस्ताक्षर कराया गया था। अभियुक्त ने मैजिस्ट्रेट को चोट के निशान भी दिखाए।

—इन्स्पेक्टर पुलिस की हत्या वाले मुक़दमे के अभियुक्त हरीप्रसाद भट्टाचार्य ने अपने बयान में कहा है कि छः महीने पहले मेरा परिचय 'आरमरी रेड केस' के अभियुक्त सूर्यसेन (जिसकी गिरफ़्तारी के लिए सरकार ने ५ हज़ार रुपए इनाम देने की घोषणा की है) से हुआ। सूर्यसेन ने मुझसे इन्स्पेक्टर अहसानुल्ला को मारने को कहा और एक रिवॉल्वर तथा १२ कारतूस दिए। उनको लेकर मैं शहर में आया। २९ अगस्त को खेल मैदान में पहुँचा। पर उस दिन मौक़ा न लगा। दूसरे दिन मुझे इन्स्पेक्टर के मारने में कामयाबी हुई। मैंने चार गोलियाँ छोड़ीं और दो अपने को रक्खी, पर रिवॉल्वर बिगड़ गया और न चल सका। तब मैंने उसे फेंक दिया।" यह बयान ज्यूरी के सामने पढ़ा गया और जज ने इसे गवाहियों में शामिल कर लिया।

—सिक्खों के राष्ट्रीय नेता सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर ने एक बयान प्रकाशित किया है, जिसमें कहा गया है कि—"ऑल पार्टीज़ सिक्ख कॉन्फ़्रेन्स ने जो प्रस्ताव पास किए हैं, वे राष्ट्रीय दल के सिक्खों के मत को प्रकट नहीं करते, सिक्ख कॉङ्ग्रेसमैनों को निमन्त्रण पत्र नहीं भेजे गए थे[जन दो-चार लोगों को किसी तरह बुलाया गया था, उन्होंने कॉन्फ्रेन्स को स्थगित करने की प्रार्थना की, क्योंकि झङ्ग की प्रान्तीय राजनीतिक कॉन्फ्रेन्स भी उन्हीं तरीक़ों में होने वाली थी, और उसमें इन लोगों का जाना ज़रूरी था। झङ्ग कॉन्फ्रेन्स की तारीख़ें बहुत पहले से नियत भी की जा चुकी थीं। पर इन लोगों की प्रार्थना बिना विचार के अस्वीकृत कर दी गई।

"कॉङ्ग्रेस ने अब भी सिक्ख लीग या अन्य किसी सक्ख संस्था क अपेक्षा अधिक सिक्ख प्रतिनिधियों की माँग पेश की है। सिक्ख कॉङ्ग्रेसमैनों की बात की उपेक्षा करने से ऑल पार्टीज़ सिक्ख कॉन्फ्रेन्स के प्रस्तावों का महत्व बढ़ नहीं गया है। राष्ट्रीय दल के सिक्खों की निगाह में सम्प्रदायवादी सिक्खों की १७ माँगें उसी प्रकार उन्नति-विरोधी हैं, जैसी कि मुस्लिम लीग की १४ माँगें।

श्री० रॉय को छोड़ दो !

विदेशों में ज़ोरदार आन्दोलन

श्री० एम० एन० रॉय की डिफेन्स कमिटी के संयुक्त मन्त्री श्री० ब्रजेशसिंह सूचित करते हैं:—

"जर्मनी की कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से श्री० एम० एन० रॉय की गिरफ़्तारी का विरोध करने के लिए हैम्बर्ग नगर में एक बहुत बड़ी सार्वजनिक सभा हुई है। सभा ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास करके श्री० एम० एन० रॉय की गिरफ़्तारी का विरोध किया है और पत्र के रूप में इस प्रस्ताव को हैम्बर्ग में रहने वाले ब्रिटिश राजदूत के पास भेज दिया है। पत्र में श्री० एम० एन० रॉय को छोड़ देने के लिए कहा गया है। जर्मन पार्लामेण्ट के कम्यूनिस्ट सदस्य मि० जड्डाश ने सभा में भाषण करते हुए प्रस्ताव का हृदय से समर्थन किया। जनता ने भी उसे हर्ष-ध्वनि के साथ स्वीकार कर लिया।"

"श्री० एम० एन० रॉय को छोड़ने के प्रस्ताव, जर्मनी के अनेक भागों से और स्वीडेन, एल्सका और जेकोस्लोवैकिया देशों से बराबर आ रहे हैं।"

—दिल्ली के मुसलमानों का एक डेपुटेशन वायसरॉय से भेंट करने वाला है। वह उनको बतलाएगा कि किसी प्रान्त का बटवारा तब तक न किया जाय जब तक उस प्रान्त की मुसलमान जनता की सम्मति न जान ली जाय।

—भारत सरकार का कम्यूनिक है कि १६ अक्टूबर, १९३१ से एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाने वाले 'एक्सप्रेस' तारों पर दो आना और 'ऑर्डिनरी' पर एक आना 'सरचार्ज' वसूल किया जायग। उसी तारीख़ से सरकारी अफ़सरों और व्यापारी फ़र्मों के तार के पतों पर २५ रु० सालाना या १५) छःमाही की फ़ीस ली जायगी फ़ीस उस समय से ली जायगी। जब कि तार के पतों की वर्तमान मियाद ख़त्म हो जायगी और उनको फिर से जारी कराय जायगा।

—लाल कुर्ती वालों और कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं का झगड़ा दोनों तरफ़ के नेताओं के बीच बहुत देर तक बातचीत होने के पश्चात् तय हो गया। श्री० अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ाँ ने अफ़ग़ान जिरगा और पुरानी सीमा प्रान्त कॉङ्ग्रेस कमिटी के बन्द होने की घोषणा की है। अब एक नई संस्था 'सीमा प्रान्तीय जिरगा' के नाम से स्थापित की गई है, जिसमें २४ सदस्य हैं। इनमें से पाँच पुरानी कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य हैं। इस नई संस्था का सदर मुक़ाम उटमनगई में रहेगा

—गवर्नर-जनरल ने एक नया ऑर्डिनेन्स जारी किया है जिसका नाम है 'सन् १९३१ का ऑर्डिनेन्स न० ८' इसके अनुसार पञ्जाब एमेण्डमेण्ट, द्वारा जो अधिकार विशेष अदालतों के कमिश्नरों को दिए गए हैं, वे देहली प्रान्त में भी प्रचलित किए जायँगे। इस एमेण्डमेण्ट का आशय यह है कि अगर कोई अभियुक्त जान-बूझ कर ऐसा काम करे कि वह अदालत में न आ सके अथवा मुक़दमे की कार्रवाई में बाधा डाले, तो कमिश्नरों को अधिकार है कि उसकी ग़ैरहाज़िरी में मुक़दमे की कार्रवाई जारी रक्खें। अभियुक्त को इस बात का अधिकार रहेगा कि उसका वकील अदालत में मौजूद रहे।

—पञ्जाब-मेल में सफ़र करते हुए कर्नल हैक्स्ट की हत्या के सम्बन्ध में यशवन्तसिंह और दलपत को कालेपानी की जो सज़ा सुनाई थी, उस फ़ैसले के विरुद्ध अभियुक्तों की ओर से एडीशनल जुडिशियल कमिश्नर की अदालत में अपील की गई है। अपील की सुनवाई २८ अक्टूबर को होगी।

—लाहौर नौजवान भारत सभा की प्रेज़िडेण्ट श्रीमती शकुन्तला देवी और शिमला की कॉङ्ग्रेस कार्य करने वाली श्रीमती लक्ष्मी देवी, जिन्होंने ज़मानत न देकर एक साल की सज़ा स्वीकार कर ली थी, कल ज़मानतों के दे दिए जाने के कारण छोड़ दी गईं। दोनों महिलाएँ मैजिस्ट्रेट के फ़ैसले के विरुद्ध अपील करने वाली हैं।

—चटगाँव का १५ वीं अक्टूबर का समाचार है कि ज्यूरी के फ़ैसले से सहमत न होकर एडीशनल सेशन्स जज ने हरिप्रसाद भट्टाचार्य के मामले को, जिस पर ख़ान-बहादुर अहसानुल्ला पुलिस इन्स्पेक्टर की हत्या करने और बिना लाइसेन्स हथियार रखने का अभियोग लगाया गया है, हाई कोर्ट में विचारार्थ भेज दिया है।

—कलकत्ता की सशस्त्र डकैती के सम्बन्ध में नोआखाली (बङ्गाल) के श्री० रजनीचन्द्र मित्र वकील के मकान की तलाशी हुई। आपके बड़े लड़के श्री० सुबोधचन्द्र मित्र के नाम, जो कि कलकत्ता में क़ानून के विद्यार्थी हैं, डकैती के सम्बन्ध में कलकत्ता की पुलीस की तरफ़ से वारण्ट निकाला गया है।

विमल प्रतिभा देवी की ज़मानत मञ्ज़ूर

कलकत्ता, १६ अक्टूबर

स्पेशल ट्रिब्यूनल ने श्रीमती विमल प्रतिभा देवी को उनके स्वास्थ्य के विषय में दो डॉक्टरों की गवाहियाँ लेकर, दो हज़ार की दो ज़मानतों पर छोड़ दिया। अदालत में उनके मुँह से ख़ून फिर निकला था।

—ढाका में ताँतो बाज़ार लूट के सम्बन्ध में रुचीन्द्र सरकार, कृष्णपद चक्रवर्ती और एक नवयुवक १४ अक्टूबर की रात को गिरफ़्तार कर लिए गए। १२ अक्टूबर की रात में गिरफ़्तार अपूर्व रॉय, लालन नाहा और डॉ० शैलेन रॉय का भतीजा आज छोड़ दिए गए।

—कलकत्ते के श्री० मणिशोल को जो हिजली नज़रबन्द-कैम्प से स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रेज़िडेन्सी-जेल में बदल दिए गए थे, वीरभूमि ज़िले के नलहाटी ग्राम भेज दिया गया है। उनका स्वास्थ्य अब भी बहुत ही ख़राब । उनकी माँ मरण-शय्या पर पड़ी हैं, जिन्हें देखने की उन्होंने आज्ञा माँगी थी, किन्तु वह नामञ्ज़ूर कर दी गई।

—वर्मा के आलनताङ्ग विद्रोह के मामले में विशेष अदालत ने २६ आदमियों में से ११ को फाँसी और शेष को कालेपानी की सज़ा दी थी। अभियुक्तों की ओर से हाईकोर्ट में अपील की गई, जिसमें ६ आदमियों को फाँसी की सज़ा बहाल रही और २ को कालेपानी की कर दी गई और १८ कालेपानी की सज़ा वालों में से २ की अपील मञ्ज़ूर हुई और १६ की अपील ख़ारिज कर दी गई।

— सूरत में भी हाल ही में मुस्लिम राष्ट्रीय दल की स्थापना हो गई। रसूल मियाँ साहब नवगाँव, प्रेसीडेण्ट और मेसर्स आज़िम के० शेख़ और नूरमियाँ एच० शेख़ मन्त्री चुने गए।

—१४ अक्टूबर को बेरारहाट (बङ्गाल) में ३ बजे शाम को हथियार-बन्द और सादे कॉन्स्टेबिलों तथा पुलिस अफ़सरों से भरी हुई एक लॉरी पहुँची और उसने रघुनाथपुर डकैती तथा विस्फोटक पदार्थों की तलाश में श्री० मणीन्द्रनाथ बसु, निशिकान्त चक्रवर्ती, मन्मथनाथ मित्र, रानदजान्त राय चौधरी, मणीन्द्रनाथ घोष, भूपेन्द्रनाथ नाग और जतीन्द्रनाथ विश्वास, इन सात सज्जनों के मकानों की तलाशियाँ ली गईं। किसी मकान में कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली।

— पुर्निया ज़िला के किशनगञ्ज से पिपरीथान रेलवे स्टेशन में डाका पड़ने का समाचार आया है। कहा जाता है कि डाकुओं के एक दल ने स्टेशन के मुसाफ़िरों पर आक्रमण किया जिससे दो मर गए और अनेक घायल हुए और रेलवे कर्मचारी भाग गए।

डाकू नक़द और सोना लेकर ग़ायब हो गए। एक सोनार जिसके पास सोना, चाँदी और रुपए थे, मरा हुआ पाया गया।

—कलकत्ते में चटगाँव-काण्ड पर वक्तृता देने के सम्बन्ध में श्री० नरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती राजद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—पटना के अवसर प्राप्त डिस्ट्रिक्ट और सेशन्स जज रायबहादुर ज्योतिर्मय चटर्जी के घर में सेंध लगा कर चोर काफ़ी नक़द और ज़ेवर चुरा ले गए।

—शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमिटी को टेलीफ़ोन द्वारा शिमले से ख़बर मिली है कि प्रसिद्ध अकाली नेता सरदार खड़गसिंह, जो १११ आदमियों का जत्था लेकर दस्का सत्याग्रह के लिए जा रहे थे, १२४-ए दफ़ा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए और स्यालकोट जेल भेज दिए गए। जत्था आगे बढ़ता जा रहा है।

१६ अक्टूबर का तार है, उन्नाव कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट पं० विश्वम्भर दयाल त्रिपाठी पर डिप्टी कलेक्टर पं० चन्द्रमोहन नाथ द्वारा चलाया गया मानहानि का मुक़दमा आज अदालत में पेश हुआ। पं० चन्द्रमोहन नाथ आज अदालत में आए, किन्तु उन्होंने अदालत से प्रार्थना की कि उनकी तबीयत ठीक न होने की वजह से मामला आज फिर मुलतवी किया जाय। पं० विश्वम्भर दयाल के वकील ने इसका विरोध किया और कहा कि डिप्टी कलेक्टर के स्वाथ्य की सिविल-सर्जन द्वारा जाँच कराई जाय और इसका ख़र्च अभियुक्त की ओर से दिया जाएगा। अदालत ने स्वाथ्य की जाँच कराना अनावश्यक समझा और मुक़दमे को ३० अक्टूबर तक के लिए मुलतवी कर दिया।

विदेश

—इटली देश में २४१ आदमियों का एक बहुत पुराना दल गिरफ़्तार हुआ है। अदालत में वे लोहे के एक बड़े पिंजड़े में लाए गए थे। ये अभियुक्त एक बहुत बड़े और पुराने आतङ्कजनक कार्य करने वाले दल के बचे हुए सदस्य हैं। आधी शताब्दी से यह दल सिसली में मनमानी करता आ रहा है। लड़कियों को दल के सदस्यों के साथ विवाह करने के लिए बाध्य करना, लोगों को दल के सदस्यों को नौकर रखने लिए बाध्य करना और ज़मींदारों को अपनी जायदादें नाम-मात्र मूल्य पर बेचने के लिए बाध्य करना, इस दल के कार्य रहे हैं। दल के हुक्म के अनुसार कार्य न करने पर हत्या तक का दण्ड दिया जाता था।

—कैनसास (अमेरिका) से 'ईसा के शिष्य' नामक सम्प्रदाय वालों ने, जिसके अनुयाइयों की संख्या अमेरिका में १५ लाख है, महात्मा गाँधी को भारत लौटने से पहले अमेरिका आने का निमन्त्रण देने का निश्चय किया है। सम्प्रदाय के पादरियों ने भी महात्मा जी को यह विश्वास दिलाने का निश्चय किया है कि "अमेरिका में वे एक तमाशे की तरह न समझे जाएँगे, वरन् एक महान नेता के समान उनका आदर होगा।"

'चाँद' की पुरस्कार-प्रतियोगिता का परिणाम

'भविष्य' की आगामी संख्या
(ता० २६ अक्टूबर)
में प्रकाशित होगा।

अपनी कॉपी के लिए हमारे एजेण्ट से कह रखिए।

— लन्दन का समाचार है कि 'साम्राज्यवाद विरोधिनी लीग' ने अङ्गरेज़ मज़दूरों के नाम एक खुली चिट्ठी प्रकाशित कराई है कि टोरी गवर्नमेण्ट के साथ ही लेबर-गवर्नमेण्ट भी इस बात के लिए दोषी है कि उसने भारत के ३१ मज़दूर-दल के नेताओं पर मुक़दमा चला रक्खा है। ये नेता भारत में मज़दूर-दल का सङ्गठन कर रहे थे। उन पर जो दफ़ा लगाई गई है उसमें आजन्म कालेपानी तक की सज़ा दी जा सकती है। अङ्गरेज़ मज़दूरों का कर्तव्य है कि मि० मैकडॉनेल्ड और टॉमस के इस कुकृत्य का पूर्ण विरोध करें।

— ख़बर है कि विलायती कपड़ों पर भारी चुङ्गी लगने और देशी कपड़ों की ओर भारतीयों का ज़्यादा झुकाव होने के कारण विलायती व्यापारी, ख़ासकर जापानी मिल-मालिक, भारत में कपड़े की मिल खोलने और देशी मिलों को ख़रीदने का विचार कर रहे हैं।

—अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ की कौन्सिल ने एक गुप्त सभा करके चीन-जापान युद्ध के मामले में विचार करने के लिए अमेरिका को भी निमन्त्रित करने का निश्चय किया। कहा जाता हैं कि चीन ने इस बात को स्वीकार कर लिया है, परन्तु जापानी प्रतिनिधि ने इस विषय में जापान गवर्नमेण्ट को लिखा है। सम्भवतः जापान गवर्नमेण्ट का रुख़ अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ के विधान के अनुसार होगा।

—६४ वोटों के विरुद्ध ८२ वोटों से आयर्लैण्ड की पार्लामेण्ट ने मौजूदा शासन विधान स्थगित कर देने का निश्चय किया है। प्रेसिडेण्ट ने कहा कि राज्य उलट देने का व्यापक षड्यन्त्र किया गया है।

—जेरूसलम के समाचार-पत्रों की इस ख़बर से बड़ी सनसनी फैल गई है कि पदच्युत ख़लीफ़ा अब्दुल मजीद विश्व मुस्लिम कॉङ्ग्रेस में सम्मिलित होने के लिए यहाँ आ रहे हैं और वह फिर ख़लीफ़ा घोषित किए जायँगे। बीरुत की एक ख़बर है कि ईराक़ के बादशाह फ़ैज़ल और पदच्युत ख़लीफ़ा में इस विषय पर समझौता हो गया है और भारतीय मुस्लिम राजे और नवाब जेरूसलम में ख़िलाफ़त स्थापित करने के लिए आर्थिक सहायता देंगे। परन्तु इस विषय पर बारीकी के साथ विचार करने वालों का कहना है कि न तो बादशाह फ़ैज़ल और न उनके भाई अमीर अब्दुला अपने ख़ानदान के बाहर वाले को ख़लीफ़ा नियुक्त करने का समर्थन करेंगे।

—मि० बाल्डविन ने कञ्ज़रवेटिव दल के नाम एक मेनीफ़ेस्टो निकाला है, जिसमें आग्रह किया है कि नेशनल गवर्नमेण्ट में उनका बराबर शामिल रहना आवश्यक है। क्योंकि राष्ट्र के व्यापार की दशा को सन्तोषप्रद बनाए बिना दिवाला निकल जाना निश्चित है। यह आवश्यक है कि सरकार को जनता द्वारा अधिकार प्राप्त हो। राष्ट्र इस बात को प्रकट कर दे कि वह उस पार्टी से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता, जो इस गम्भीर परिस्थिति को बिगाड़ कर घोर हलचल उत्पन्न कर देना चाहती है। मि० बाल्डविन ने कहा कि पौण्ड की क़ीमत घटा देने से काम नहीं चलेगा। शीघ्र सफलता देने वाला और प्रभावशाली अस्त्र; कर लगाना ही है। इससे आने वाले माल में ही कमी न पड़ेगी, बल्कि दूसरे मुल्क अपने यहाँ के कर कम कर देंगे। खेती की दशा ऐसी भयङ्कर हो रही है कि उसके उद्धार के लिए शीघ्र ही कोई ज़ोरदार उपाय करना आवश्यक है। मि० बाल्डविन ने कहा है—"सहायता का सब से अच्छा तरीक़ा गेहूँ का बाक़ायदा और निश्चित भाव बाँध देना है। बाहर से सस्ता माल आना रोक देना चाहिए। इस सम्बन्ध में साम्राज्य के आपस के समझौते बहुत महत्वपूर्ण हैं। साम्राज्य की समस्या उस आर्थिक एकता को प्राप्त करने से हल हो सकती है, जिसके लिए हम इतने दिनों से कोशिश कर रहे हैं।

मुझे आशा है कि कनाडा साम्राज्य की आर्थिक कॉन्फ़्रेन्स का निमन्त्रण फिर से भेजेगा। यह अवसर इसके लिए अत्युत्तम है, क्योंकि इस समय इस निमन्त्रण को किसी एक पार्टी ही नहीं, वरन् राष्ट्रीय सरकार स्वीकार करेगी। मेरा विश्वास है कि इस समय साम्राज्य की आर्थिक एकता का आदर्श चारों तरफ़ फैला है, और इस एकता की नींव बहुत अच्छी और पक्की तरह से तथा समस्त ब्रिटिश जनता की सम्मति से रक्खी जा सकती है।

लन्दन में नेशनल लेबर क्लब की ओर से महात्मा गाँधी का स्वागत करते हुए १३ अक्टूबर को मि० हेन्डरसन ने कहा, कि मुझे आशा है कि चुनाव के बाद गोलमेज़ के प्रतिनिधि फिर से कार्य प्रारम्भ कर देंगे और कॉन्फ़्रेन्स को सन्तोषजनक रूप से समाप्त करेंगे। महात्मा गाँधी ने कहा कि, "अगर हमें अपनी स्वाधीनता के लिए लाखों जानें भी देनी पड़ेंगी तो मैं उसे कुछ नहीं समझूँगा। परन्तु मुझे आशा है कि कॉङ्ग्रेस अपना युद्ध बराबर अहिंसामय और सत्यमय रक्खेगी। चाहे एक जान देकर हो या लाखों जानों को देकर हो। मैं आशा और प्रार्थना कर रहा हूँ कि भावी इतिहास लिखने वाला यह कह सके कि हिन्दुस्तान लड़ा और उसने अपनी स्वधीनता बिना रक्त बहाए प्राप्त कर ली।

बातचीत

['भविष्य' के प्रत्येक ग्राहक तथा एजण्ट को इसे ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए !]

ग्राहकों से—

पाठकों को विदित ही होगा कि शीघ्र ही पोस्टकार्ड का मूल्य दो से तीन पैसा और लिफ़ाफ़ों का मूल्य एक से डेढ़ आना होने जा रहा है ! काग़ज़ पर १०) रुपया सैकड़े की ड्यूटी लग चुकी है और आज ही कल में ५) रुपया सैकड़ा और भी ड्यूटी बढ़ जाने की ख़बर है। सारांश यह कि आम तौर से पत्र-सञ्चालकों के रास्ते में अधिक से अधिक रोड़े अटकाए जाने का प्रयत्न किया जा रहा है। ऐसी हालत में समाचार-पत्रों को आज के निर्धारित चन्दों में चलाना दिनोंदिन असम्भव होता जा रहा है। पत्रकारों के पास दो ही साधन शेष रह गए हैं—(१) या तो पत्र का चन्दा बढ़ा दिया जाय या (२) वर्तमान ख़र्च में अधिक से अधिक कमी की जाय। अस्तु।

हमने तब तक चन्दा न बढ़ाने का ही निश्चय किया है, जब तक हम अन्य उपायों द्वारा पत्र चला सकें। ख़र्च की कमी के सम्बन्ध में केवल इतना ही निवेदन करना है कि जहाँ तक सम्भव हो सका है, अब तक कोई बात उठाई नहीं रक्खी गई है। अब केवल हमारे पास ख़र्च घटाने की एक ही सूरत शेष रह गई है और वह यह कि अनावश्यक पत्रों का उत्तर कार्यालय से न जाय। पत्रोत्तर देने के बजाय प्रत्येक ग्राहक के आए हुए पत्र अथवा पत्रों का उत्तर 'भविष्य' के प्रत्येक अङ्क में प्रकाशित होता रहेगा। (१) चन्दे के समाप्ति की सूचना, (२) पता बदलने की सूचना, (३) चन्दा पहुँचने की सूचना तथा इसी प्रकार की कुल सूचनाएँ "भविष्य" तथा "चाँद" के प्रत्येक अङ्क में छपा करेंगी। पाठकों से प्रार्थना है कि भविष्य में वे पत्रोत्तर की प्रतीक्षा न करके "बातचीत" शीर्षक स्तम्भ को ध्यानपूर्वक पढ़ लिया करें और निम्न-लिखित बातों का ध्यान रक्खें :—

(१) अपना ग्राहक-नम्बर हमेशा याद रक्खें, नोट कर लें (क्योंकि प्रायः नम्बरों के हिसाब से ही उन्हें उत्तर मिला करेगा)

(२) अपना चन्दा समाप्त होते ही, जब तक भी उन्हें ग्राहक रहना हो, उतने दिनों का चन्दा मनीऑर्डर द्वारा भेज दिया करें (क्योंकि रजिस्ट्री के ख़र्च में भी एक आने की वृद्धि हो गई है और वी० पी० मँगाने से व्यर्थ में उन्हें रजिस्ट्री के तीन आने अधिक देने होंगे।

(३) यदि ग्राहक बनना हो तो अपना चन्दा मनीऑर्डर द्वारा भेज दें और व्यर्थ में पत्र न लिख कर 'कूपन' पर ही अपना आशय प्रकट कर दें (यह स्मरण रक्खें कि पुराने ग्राहकों को अपना ग्राहक-नम्बर तथा नए ग्राहक को "नया ग्राहक" 'कूपन' पर अवश्य लिख देना चाहिए)।

(४) पता आदि बदलने की सूचना आते ही कार्रवाई कर दी जायगी और इस बात की सूचना 'भविष्य' के उसी सप्ताह के अङ्क में प्रकाशित कर दी जायगी (यदि सूचना प्रकाशित न हो तो समझना चाहिए कि पत्र कार्यालय में नहीं पहुँचा)।

(५) जिन लोगों को पत्रोत्तर की आवश्यकता हो, उन्हें या तो जवाबी पोस्टकार्ड अथवा टिकटदार लिफ़ाफ़ा साथ भेजना चाहिए नहीं तो पत्रोत्तर नहीं दिया जायगा।

यदि ग्राहकों ने हमारी इस विनम्र प्रार्थना पर समुचित ध्यान दिया तो हज़ारों रुपए, जो डाकख़ाने की भेंट हो जाते हैं, बच जायँगे और इन्हीं रुपयों को पत्र-सञ्चालन में लगा कर चन्दा न बढ़ाया जायगा।

एजेन्टों से—

'भविष्य' तथा 'चाँद' के एजन्टों को उपरोक्त सारी बातों को ध्यानपूर्वक पढ़ कर समझ लेना चाहिए और साथ ही निम्नलिखित बातों पर भी विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए :—

(१) अपना हिसाब एक निश्चित तिथि को बिना तक़ाज़ा किए अथवा बिल भेजे भेज देना चाहिए, क्योंकि भविष्य में बिल नहीं भेजा जायगा।

(२) जिस सप्ताह से 'भविष्य' (साप्ताहिक) की कॉपियाँ बटाना या बढ़ाना हो उससे ठीक ८ रोज़ पूर्व इस बात की सूचना कार्यालय को दे देनी चाहिए। दैनिक "भविष्य" सम्बन्धी इस प्रकार की सूचना कम से कम दो दिन पहले कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।

(३) 'भविष्य' में प्रकाशित प्रत्येक सूचना को ध्यानपूर्वक पढ़ लेना चाहिए और उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए।

(४) हमें खेद है, छपे हुए 'कूपन' (टिकट) भेजने पर तथा हमारे बार-बार लिखने पर भी एजन्टों ने 'जुबली-अङ्क' के सम्बन्ध में ज़रा भी ध्यान नहीं दिया और जब कॉपियाँ घट गईं तो वे तार उड़ाने लगे। हमारे पास केवल २ रोज़ के भीतर अधिक कॉपियों के लिए लगभग ५० तार आए हैं। इसके अर्थ यह हुए कि ३७) रु० तार वालों को भेंट हो गए और फल भी कुछ नहीं हुआ। यदि पहले से ही हमारी सूचनाओं पर वे ध्यान दिए होते तो दूनी-तिगुनी संख्या में "जुबली-अङ्क" बेच कर वे स्वयं भी लाभ उठा सकते थे और देशवासियों की सेवा भी कर सकते थे। व्यर्थ का तार और पत्रों का व्यय भी बचाया जा सकता था। जिन लोगों का हिसाब नहीं आया था उनकी कॉपियाँ रोक दी जाने से उनको जो हानि हुई वह तो हुई ही, पर साथ ही उनके स्थायी ख़रीदारों को भी इस अङ्क के लाभ से वञ्चित रक्खा गया। इस प्रकार उन्होंने अपनी लापरवाही के कारण कितना भारी नैतिक अपराध किया—यह वे स्वयं समझ सकते हैं।

(५) सारांश यह कि 'भविष्य' तथा 'चाँद' के एजन्टों से हमारी प्रार्थना है कि भविष्य में हिसाब के लिए यहाँ से तक़ाज़े तथा तार आदि नहीं भेजे जायँगे।

जिन एजन्टों का हिसाब ठीक समय पर हमें नहीं मिलेगा, उनकी कॉपियाँ, बिना किसी प्रकार की सूचना दिए ही, रोक दी जावेंगी और वे सारी हानि उनके ज़मानत से काट ली जावेगी और यदि दूसरे सप्ताह भी ऐसा ही हुआ तो ज़मानत ज़ब्त करके उनका नाम एजन्टों की श्रेणी से तुरन्त अलग कर दिया जायगा।

जिन एजन्टों से इन साधारण सी बातों का भी पालन नहीं हो सकता, उन्हें तुरन्त अलग हो जाना चाहिए।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर की आज्ञा से

* * *

'भविष्य'
(साप्ताहिक संस्करण)
की
सजिल्द फ़ाइलें

'भविष्य' की पूरे १ साल की ४ सजिल्द फ़ाइलें बन कर तैयार हैं। फ़ी फ़ाइल का मूल्य ५) रु० और चारों फ़ाइलें साथ लेने वालों से १५) रु० मात्र। डाक-व्यय अलग। ऑर्डर के साथ ५) रु० पेशगी भेजना ज़रूरी है।

व्यवस्थापक 'भविष्य'
चन्द्रलोक—इलाहाबाद

'ब्लॉक'
हमसे ख़रीदिए !

'चाँद' तथा 'भविष्य' में छपे हुए इकरङ्गे ब्लॉक यदि कोई सज्जन ख़रीदना चाहें तो उन्हें वे आधे मूल्य अर्थात् ३ आने प्रति वर्ग इञ्च के हिसाब से दे दिए जावेंगे; किसी भी छोटे ब्लॉक का मूल्य २) से कम न होगा। डाक-ख़र्च ख़रीदार को देना होगा।

मैनेजर—'भविष्य'
चन्द्रलोक—इलाहाबाद

हिजली गोली-काण्ड-कमीशन की कार्यवाही और मनोरञ्जक बयान

["भविष्य" के विशेष तार]

खड़गपूर, ७ अक्टूबर

नरेश सोम ने कहा कि पगली घण्टी बजने पर मैं अपने कमरे से बाहर निकला और सन्तोष मित्र के पास खड़ा हो गया। उसी समय गोली चलने लगी। दो और जो पास में खड़े थे, गिर पड़े। उसके बाद सन्तोष को गोली लगी और वह पीड़ा से चिल्लाता हुआ गिर पड़ा। मैं सन्तोष को अपने कमरे में ले जाना चाहता था। ज्योंही मैं उसको उठाने के लिए झुका कि मेरे भी गोली लगी। मैं भी सन्तोष के पास गिर पड़ा और किसी को यह कहते सुना कि कुछ नज़रबन्द मर गए।

घटना के बाद जब कमाण्डेण्ट आया, मैंने उससे कोई शिकायत नहीं की, क्योंकि मुझे मालूम हुआ कि जो कुछ हुआ है, वह अधिकारियों की अनुमति से हुआ है, नहीं तो सिपाही अकारण गोली नहीं चला सकते थे। गवाह ने फिर कहा, एक महीने के अनुमान गुज़रा होगा, जब हम लोगों का मासिक भत्ता ३२ रुपए से घटा कर २७ कर दिया गया था। मैंने अख़बारों में पढ़ा था कि यह मकान के बुर्ज पर रोशनी करने के कारण हुआ है। मैंने सुना कि दो-तीन अवसरों पर कैम्प के कुछ झोपड़ों में आग लग गई।

मिस्टर दास गुप्त के प्रश्न पर गवाह ने उत्तर दिया कि मुझे कमाण्डेण्ट से भत्ता घटाने की बाबत कोई सूचना नहीं मिली।

सरकारी वकील रायबहादुर नरेन्द्रनाथ बैनर्जी के प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा कि हम लोग घर में तमाशे के लिए रोशनी करते थे। उसका किसी ख़ास घटना से कोई सम्बन्ध होता था, यह मैं नहीं कह सकता। मैं इस कैम्प में चार महीनों से हूँ। इस बीच में १२ बार से अधिक रोशनी की गई है। मुझे नहीं मालूम कि पहिली बार रोशनी करने के बाद बुर्ज का रास्ता रोक दिया गया था। कई बार बुर्ज के रास्ते का अड़गड़ा (Bar) नज़रबन्दों ने हटा कर रोशनी की थी। मुझे नहीं मालूम कि कैम्प के डॉक्टर को किसी नज़रबन्द ने छुरी मारी थी।

गवाह के कहने के अनुसार गोली २०-३० मिनिट तक चलती रही और १०० से १५० फ़ैर तक हुए होंगे।

दास गुप्त के जवाब में गवाह ने कहा कि सारी चिल्लाहट, जो मैंने सुनी, सिपाहियों की ही थीं।

खड़गपूर, ८ अक्टूबर

हिजली जाँच-कमिटी के सामने आज नज़रबन्द कुञ्ज बोस ने अपने बयान में कहा कि नज़रबन्दों के कैम्प के बुर्ज में बहुधा रोशनी की जाती थी। अब भी की जाती है। इसने ज़ोर देकर कहा कि इससे किसी भी बाहरी घटना का सम्बन्ध न था। ता० १६ सितम्बर की रात वाली घटना का सङ्केत करते हुए कहा कि जब मैं तारक की परिचर्या कर रहा था, क्योंकि उसको घातक चोट लगी थी, कुछ सिपाही अन्दर घुस आए और हम दोनों को मारा। इसके बाद तारक में प्राण का पता न था।

दास गुप्त के उत्तर में गवाह ने कहा कि इन्स्पेक्टर मार्शल का व्यवहार नज़रबन्दों के साथ अच्छा न था, नज़रबन्दों और इन्स्पेक्टर में तअल्लुक़ हो जाने के बाद मुझे मालूम हुआ कि इन्स्पेक्टर को कैम्प में घुसने से कमाण्डेण्ट ने रोक दिया था। उसके बाद मैंने इन्स्पेक्टर को कैम्प के भीतर १५ सितम्बर को देखा था।

दूसरे गवाह मनोरञ्जन राय ने, जो नज़रबन्दों के कैम्प में एक मेस (भोजन प्रबन्ध) का मैनेजर था, मिस्टर दास गुप्त के प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैनेजर होने के कारण मिस्टर बेकर से मुझे बहुत काम पड़ता था। मैंने उन्हें सदा युक्ति-सङ्गत और शिष्टाचार वाला पाया। कमाण्डेण्ट नज़रबन्दों के गान-वाद्य में शामिल हुआ करते थे और सप्ताह में तीन दिन कैम्प के भीतर दफ़्तर किया करते थे। यह बात डलहाउसी इन्स्टीट्यूट की घटना तक रही। इस घटना पर एङ्गलो-इण्डियन सम्वाद-पत्रों में भयभीत करने वालों के अत्याचारों की तीव्र आलोचना की गई थी। इसके बाद धीरे-धीरे मिस्टर बेकर के स्वभाव में परिवर्तन होने लगा, यहाँ तक कि वह अशिष्ट हो गए और मालूम होने लगा कि वह हम लोगों की बात सुनना नहीं पसन्द करते, जैसा कि पहिले करते थे। इन्स्पेक्टर मार्शल की बाबत गवाह ने कहा कि मैंने सुना है कि इन्स्पेक्टर नज़रबन्दों के आचरण पर क़वायद के समय ताने के साथ आलोचना करते थे, इसका नज़रबन्दों ने प्रतिवाद किया और नज़रबन्दों की शिकायत पर मिस्टर बेकर ने इन्स्पेक्टर को कैम्प में आने की मनाही कर दी। इसके बाद मैंने १५ सितम्बर की रात तक इन्स्पेक्टर मार्शल को कैम्प में नहीं देखा। घटना के दिन अनुमान ८ बजे सायङ्काल को मुझे इन्स्पेक्टर मार्शल प्राङ्गण में दिखाई पड़े थे। बहुत से सन्तरी उनकी आज्ञा पर परेड कर रहे थे। उसी समय मैंने इन्स्पेक्टर को यह कहते सुना कि 'काहे गोली नहीं किया।"

घटना के दिन ही तीसरे पहर मैं और कई दूसरे नज़रबन्द प्राङ्गण में नज़रबन्द दिनेश सेन को बिदा करने व मिलने गए उस समय एक सिपाही ने हमें गाली दी। जब मैंने उसके शब्दों का प्रतिवाद किया तो मेरे पास जो खड़े थे उन्हें सिपाही ने धक्का दिया। मैंने फिर प्रतिवाद किया और दूसरे नज़रबन्द से कहा कि आओ कैम्प को लौट चलें। ज्योंही हम लोग मकान पहुँचे थे कि पगली घण्टी सुनाई पड़ी। मिस्टर बेकर तब इन्स्पेक्टर मार्शल के साथ कुछ सिपाही लिए हुए दाख़िल हुए। कमाण्डेण्ट ने पूछा कि तुम्हें मालूम है कि फाटक पर नज़रबन्दों ने सिपाहियों के ऊपर आक्रमण किया था? गवाह ने सिपाहियों पर नज़रबन्दों के हमला करने का इन्कार किया और जो दरवाज़े पर खड़े थे उनकी तरफ़ इशारा किया। फिर गवाह ने कहा कि जब मिस्टर बेकर निरीक्षण करने के बाद कैम्प से जाने लगे, मैंने उनसे कहा कि पगली घण्टी बजाने के बदले आप हम लोगों को ही बुला लेते। इस पर मिस्टर बेकर ने जवाब दिया कि अगर ज़रूरत होगी तो बुलवा लेंगे। दूसरे दिन प्रभात में हमें मिस्टर बेकर ने बुलवाया, लेकिन हम लोग उस समय आती हुई दुर्गापूजा के प्रबन्ध पर बातचीत में लगे थे, न जा सके और तीसरे पहर मिस्टर बेकर से मिले। सिपाही का बयान लिया गया, लेकिन वह अपने कुव्यवहार का कोई कारण न दे सका। हम लोग यह समझ कर लौट आए कि मिस्टर बेकर सिपाही के साथ उचित कार्रवाई करेंगे।

फिर गवाह ने कहा कि मिस्टर आर० आर० गार्लिक की हत्या के बाद फिर बुर्ज पर रोशनी की गई। मैंने निश्चय किया तो मालूम हुआ कि रोशनी करने का कारण कुछ आरोपितों का डलहाउसी स्क्वायर बॉम्ब के मुक़दमे में छूट जाना था, क्योंकि वह कुछ नज़रबन्दों के मित्र थे।

गवाह ने कहा कि गोली चलने के बाद हमने किसी से शिकायत नहीं की, क्योंकि हमने समझा कि बिना उच्च अधिकारियों की आज्ञा के सिपाही लोग गोली नहीं चला सकते थे।

सरकारी वकील के पूछने पर गवाह ने कहा कि मैंने मिस्टर बेकर से सुना कि नज़रबन्द पङ्कज को कोठरी में बन्द रहने की आज्ञा दी गई थी, क्योंकि उसने कैम्प के डॉक्टर पर आक्रमण किया था।

मिस्टर दास गुप्त के प्रश्न पर गवाह ने कहा कि मैं कम से कम एक सिपाही को तो पहचान सकता हूँ, वह लम्बा, गोरा और दाढ़ी वाला था, इसने १६ सितम्बर की घटना में भाग लिया था।

खड़गपूर, १० अक्टूबर

सिराजुलहसन सन्तरी ने अपने बयान में कहा, कि चन्द्रसिंह सन्तरी के एक या आधी मिनट गोली चलाने के बाद मैंने देखा कि १५-१६ बाबू तार के बीच के छेद में होकर मेरी तरफ़ झपटे आ रहे हैं। मैंने टोंका तो एक ने आकर मेरी किरच छीन ली, तब मैंने हट कर गोली चलाई और किरच माँगी और चले जाने को कहा। फिर गोली चलाई। अन्त में तीसरे फ़ैर के बाद बाबू लोग फाटक की ओर हट कर चले गए। पहली फ़ैर हवा में की थी, दूसरी-तीसरी फ़ैरें हलकी थीं। मैंने बाबुओं का चिल्लाना और गोलियों की आवाज़ सुनी थी। रहमान ख़ाँ हवलदार के आने पर गोली चलाना बन्द हुआ। बाद में मि० बेकर व मि० मार्शल आए, और सन्तरियों का निरीक्षण करते हुए फाटक की ओर चले गए।

नज़रबन्दों के वकील के जवाब में साक्षि ने कहा कि यह सत्य नहीं है कि गारद झपट पड़ी, जो कोई भी हमारी बन्दूक़ पर से किरच छीनने की चेष्टा करे उस पर गोली चलाना हमारा साधारण कर्तव्य है। पहरे पर ख़ाली बन्दूक़ रखने की आज्ञा थी, वैसी ही मेरी बन्दूक़ थी। हुक्म था कि कोई किरच छीने तो उस पर तीन फ़ैर छर्रों का करो। इन छर्रों से ५-६ क़दम पर खड़े हुए बाबुओं को चोट नहीं आई। यह असत्य है कि मेरी फ़ैर से १ बाबू को खाने के कमरे में चोट आई। मैं बन्दूक़ छीनने वालों में से किसी को नहीं पहचान सकता।

हवलदार रहमान ख़ाँ ने बयान किया कि मैं पगली घण्टी सुन कर जागा और गोली-बारूद लेकर भीतर गया और पहले फ़ैर करने वाले के पास जाकर सब पूछा, उसने गोली चलाने से रोका। वकील के उत्तर में गवाह ने कहा कि बेकर साहब घटनास्थल पर १० बजे रात में आए। पहले सुना था कि दो नज़रबन्द मरे और १५-१६ घायल हुए। यह सच नहीं है कि मैं फाटक पर इसलिए नहीं गया कि जो हिदायत मैंने बङ्गाली बाबुओं को मारने की दी है, मेरी ग़ैर-हाज़िरी में उसके अनुसार काम हो। मैं अपने को सरकार का नौकर समझता हूँ, बङ्गाली जनता का नहीं। नज़रबन्दों के वकील ने कहा कि यही मनोवृत्ति तो इस दुर्घटना की जड़ है।

११ तारीख़ को और बहुत से सिपाहियों के बयान हुए। इन्होंने कहा कि बाबुओं को डराने के लिए फ़ैर किए थे, मारने के लिए नहीं। फ़ैर हवा में किए थे। हमें फ़ैर करने का हुक्म नहीं मिला था।

सरजकसिंह ने कहा १०० गज़ के अन्तर से गोली चली थी। वकील के प्रश्न के उत्तर में कहा कि मैंने बाबुओं को रोकने के लिए बन्दूक़ के कुन्दों से काम नहीं लिया। बात असल यह थी कि कुन्दों से काम लेने से बन्दूक़ ख़राब हो जाती। मैं सरकारी माल को एक बाबू की जान से ज़्यादा क़ीमती समझता हूँ।

तीनकौड़ी सेन रिज़र्व सब इन्स्पेक्टर ने कहा कि १६ सितम्बर को नज़रबन्द हेमन्तकुमार तालुक़ेदार का भाई मिलने आया था। उस मुलाक़ात के समय मैं था। मैंने तालुक़ेदार को अपने भाई से कहते सुना कि नज़रबन्द लोग लोहे के छड़ों और मसहरी के बाँसों से सिपाहियों पर हमला करने को तैयार थे। इन्होंने यह भी कहा कि इस तैयारी की ख़बर सुनने के बाद तुरन्त ही उपद्रव आरम्भ हो गया।

सभापति के पूछने पर साक्षि ने कहा कि मुझे याद नहीं कि यह बात मैंने पुलिस से कही है या नहीं। इन्स्पेक्टर सी० डब्ल्यू० मार्शल ने बयान किया कि मैं नज़रबन्दों के कैम्प में घटना के बाद तुरन्त पहुँचा। कमाण्डेण्ट बेकर के साथ अन्दर घुसा, सन्तरियों के पास सब जगह गया और फ़ैरों का हाल सुना। किसी-किसी नज़रबन्द ने मुझसे कहा कि हममें कुछ घायल हो गए हैं और डॉक्टरी सहायता की दरकार है। मैं और कमाण्डेण्ट बेकर घर में गए, ज़ख़्मी देखे और अस्पताल सर्जन के पास गए और तुरन्त चिकित्सा का प्रबन्ध हुआ। मैंने हवलदार शेखरसिंह से पूछा कि बिना हुक्म आदमियों ने गोली कैसे चलाई? उसने कहा कि जाँच से मालूम हुआ है कि नज़रबन्दों ने सिपाहियों पर सोडा की बोतलों, मसहरी के बाँसों और लोहे के छड़ों से आक्रमण किया था जिससे दो सिपाही ज़ख़्मी हुए। तब फ़ैर किए गए। जो नज़रबन्द जान से मरे या घायल हुए उनकी बाबत गवाह ने कहा कि मैंने किसी को प्रधान मकान के बाहर नहीं पाया। नज़रबन्दों से मालूम हुआ था कि दो मरे और २७ घायल हुए। सिपाहियों ने अलबत्ता कहा था कि हम लोग मकान के भीतर नहीं गए, लेकिन उन्होंने स्वीकार कर लिया था कि कुछ सिपाहियों की बाबुओं के साथ हाथा-पाई हुई।

मई में एक दिन नज़रबन्द फ़ौजी क़वायद करते थे। मैंने इसे अनुचित समझ कर क़वायद के निरीक्षक से रोकने को कहा। उन्होंने कहा कि कमाण्डेण्ट से लिखा लाओ तब मानेंगे। मैं कैम्प से चल दिया तो वह हल्ला करने लगे। इस झगड़े में कमाण्डेण्ट ने मुझे कैम्प में आयन्दा जाने से रोक दिया।

सरकारी वकील के प्रश्न पर गवाह ने कहा कि मुझे १६ छर्रों के और १२ गोलियों के कारतूस ख़र्च हुए मिले।

१२ अक्टूबर को हिजली-काण्ड की जाँच-कमिटी के सामने गवाही देते हुए इन्स्पेक्टर मार्शल ने कहा कि मैं नज़रबन्दों को साम्राज्य का दुश्मन नहीं, वरन् उत्तम नवयुवक सज्जन समझता हूँ। १६ सितम्बर की रात की घटना का ज़िक्र करते हुए जिरह में उन्होंने कहा कि मैंने शेखरसिंह से टेलीफ़ोन द्वारा ख़बर पाई कि कैम्प में कुछ उपद्रव हुआ है और गोलियाँ चलाई गई हैं। दस मिनटों के अन्दर मैं घटना-स्थल पर आ गया। गोली चलाने के बारे में मुझे रहमत ख़ाँ के बयान पर इतमीनान हो गया। मुझे सिपाहियों से दूसरे दिन मालूम हुआ कि उनसे कुछ नज़रबन्दों से हाथा-पाई हुई थी। कैम्प के अन्दर उस रात को घुसने वाले सिपाहियों की ठीक संख्या ३० और ४० थी। मैंने यह जाँच नहीं की कि मार-पीट में किस-किस ने हिस्सा लिया, क्योंकि मैंने इसे अनावश्यक समझा। बालराउण्ड गोलियाँ २०० गज़ तक जाती हैं और मनुष्य को ज़ख़्मी या घायल करती हैं और छर्रा ३० या ४० गज़ तक। गवाह ने कहा कि यह परिस्थिति पर निर्भर है कि सिपाही बिना उच्च अफ़सर की आज्ञा के भी गोली चला सकता है। मैं कमाण्डेण्ट से यह सुन कर प्रसन्न हुआ कि मैं कैम्प में न जाऊँ, क्योंकि मैं बहुत कामों की झञ्झट से बच जाऊँगा। मैंने यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि सिपाही मेरी या कमाण्डेण्ट की ग़ैर-हाज़िरी में कैम्प के अन्दर जा सकते हैं। ब्लाक 'ए' के मेस-मैनेजर पूर्णेन्दु दस्तीदार ने जिरह में कहा कि खड़गपुर के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलीस ने कहा कि नज़रबन्द 'बम-चिह्नित' हैं। डलहौज़ी स्क्वायर की मीटिङ्ग के बारे में गवाह ने कहा कि आतङ्ककारी आक्रमणों की उसमें निन्दा की गई और सरकार से कार्रवाई करने को कहा गया। मिदनापुर के सिविल सर्जन कैप्टेन एन० एन० चौधरी ने कहा कि मैंने सन्तोष मित्र और तारकेश्वर सेन की लाशों की पोस्टमार्टम जाँच की। दोनों की मृत्यु बन्दूक़ की गोली से हुई थी। जिस आदमी ने गोली मारी है, वह सन्तोष के सामने और दाहिनी ओर रहा होगा, किन्तु बहुत पास नहीं। तारकेश्वर को चार ज़ख़्म लगे थे जिनमें दो गोली के थे और दो तेज़ और नोकीले हथियारों के। रायसाहब अनन्त-बन्धु चक्रवर्ती, असिस्टेण्ट कमाण्डेण्ट ने कहा कि गोलियाँ पाँच मिनटों तक चलती रहीं। नज़रबन्द सावित्ताशेखर, जिनके शरीर पर लाठी और बन्दूक़ के कुन्दे की चोट के निशान थे, ने कहा कि सिपाही मेरे कमरे में घुसे और मुझे बन्दूक़ों के कुन्दों से मारा, जिससे मैं बेहोश हो गया। खड़गपुर के पुलीस इन्स्पेक्टर ख़ाँ साहब अलताफ़ हुसेन ने रायबहादुर नरेन्द्रनाथ बैनर्जी के उत्तर में कहा कि मैंने नज़रबन्दों के विरुद्ध दङ्गा करने का मुक़दमा चलाया है, सिपाहियों के विरुद्ध नहीं, क्योंकि सिपाहियों के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं की गई है। मि० निशीथ सेन के जवाब में गवाह ने कहा कि मुझे यह पता लगा है कि गोली चलाने के लिए सिपाही ज़िम्मेदार थे। मैंने सिपाहियों से प्रश्न करके यह जानने का प्रयत्न किया कि किसने दोनों नज़रबन्दों पर गोली चलाई, लेकिन उसके लिए ज़िम्मेदार आदमियों का पता अभी तक नहीं लग सका। मुझे बतलाया गया कि गोली-काण्ड इमारत के बाहर हुआ है। मैं दीवारों के गोलियों के निशान देखना चाहता था, किन्तु मैं इमारत के अन्दर नहीं जा सका, क्योंकि मुझे बतलाया गया कि नज़रबन्द लोग पुलीस-अफ़सरों को देखना भी नहीं बर्दाश्त कर सकते। कमाण्डेण्ट से पूछने पर उन्होंने कहा कि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के आने तक ठहरो, क्योंकि तुम्हारे जाने से अप्रिय बातें हो जाने का अन्देशा है। इसलिए मैं दो दिनों तक इमारत के अन्दर नहीं जा सका। मुझे यह भी बतलाया गया कि दो हमले एक साथ ही दो सन्तरी बाक्सों पर किए गए और फ़ौरन ही दूसरे पर।

'गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स ज़रूर भङ्ग होगी'

म० गाँधी गोलमेज़ में भाग न लें :: श्री० विट्ठलभाई पटेल का वक्तव्य

भूतपूर्व प्रेज़ीडेण्ट श्री० विट्ठलभाई पटेल ने एक सम्वाददाता से प्रधान मन्त्री की वक्तृता के सम्बन्ध में बातें करते हुए यह विचार प्रकट किया है—'यदि प्रधान मन्त्री की अल्पमत कमिटी की वक्तृता से गोलमेज़ के भारतीय प्रतिनिधियों को यह विश्वास नहीं पाया कि अङ्गरेज़ी सरकार कुछ करना-धरना नहीं चाहती, तो किसी भी बात से उन्हें विश्वास नहीं हो सकता कि प्रधान मन्त्री की वक्तृता गुस्ताख़ाना और अपमानजनक है। उससे यह मालूम हो जाता है कि हवा का रुख़ क्या है। यह गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के सम्बन्ध में सम्राट की सरकार द्वारा की हुई पिछली घोषणाओं पर पानी फेर देती है और उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अङ्गरेज़ी सरकार अपनी इच्छानुसार भारत के शासन में सुधार करना चाहता है और भारतीय प्रतिनिधियों की बातों की उसे परवा नहीं है। वक्तृता में असहयोग आन्दोलन का मज़ाक़ उड़ाया गया है। यह वक्तृता गाँधी-इरविन समझौते की भावना से बिल्कुल दूर है। इन सबके अतिरिक्त इनके इस कथन का कि "महाशयो, ईमानदार बनो" प्रत्येक आत्मसम्मान-प्रिय प्रतिनिधि को ज़ोरों से विरोध करना चाहिए। मेरे विचार में उनका यह कथन केवल कॉङ्ग्रेस और उनके प्रतिनिधियों के ही नहीं; वरन् समस्त भारतीय जनता के लिए कम अपमानजनक नहीं है।

"मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि किसी भी भारतीय प्रतिनिधि को इन कथनों के बाद गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में भाग नहीं लेना चाहिए। मेरा यह पहिले ही से विचार है और इसकी ओर मैंने जब से महात्मा जी यहाँ आए हैं, तभी से उनका ध्यान दिलाया है कि अगर प्रतिनिधियों को पहले यह मालूम हो जाय कि हम लोगों को मिलेगा क्या, तो साम्प्रदायिक समस्या के हल होने में बहुत सुविधा हो। इसलिए महात्मा जी का यह कहना कि सरकार जो कुछ देना चाहती है, पहिले उसे बतला दे, बिल्कुल न्यायोचित है।

"मेरा बड़े अदब के साथ यह कहना है कि महात्मा गाँधी का यह कर्तव्य है कि वह गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेने से इनकार कर दें, अगर ब्रिटिश सरकार यह रास्ता नहीं अख़्तियार करती। मेरी राय में तो यह बात शुरू में ही होनी चाहिए थी, किन्तु अब भी बहुत देर नहीं हो गई है। मेरा यह पूरा विश्वास है कि गोलमेज़ में

श्री० विट्ठलभाई पटेल

जब मूल सिद्धान्तों का प्रश्न आएगा, तो उसका भङ्ग होना अवश्यम्भावी है, क्योंकि ब्रिटिश सरकार जैसी सरकार कॉङ्ग्रेस चाहती है, वैसी देने को तैयार नहीं है। उसी प्रकार मेरा यह भी विश्वास है कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने जान-बूझ कर चालाकी से कॉन्फ़्रेन्स का क्रम ऐसा रक्खा है कि मूल सिद्धान्तों के निर्णय के पहिले प्रतिनिधिगण साम्प्रदायिक प्रश्नों के विवाद में पड़ जायँ और मुझे खेद है कि अङ्गरेज़ों की इन चालों को भारतीय प्रतिनिधियों ने नहीं समझा।"

पक्षपात का एक दयनीय पहलू!

मैजिस्ट्रेट को श्री० सहगल जी का पत्र

'चाँद' तथा 'भविष्य' के अध्यक्ष श्री० आर० सहगल ने विगत २२वीं सितम्बर को डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, इलाहाबाद के नाम एक पत्र भेजा है। इसकी एक प्रति हमारे पास प्रकाशनार्थ आई है। पत्र सार्वजनिक दिलचस्पी का है, इसलिए हम उसका अनुवाद पाठकों की भेंट करते हैं। श्री० सहगल जी का कहना है कि आज तक (१७-१०-३१) डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से लेकर गवर्नर तक ने इस पत्र के पहुँच तक की स्वीकृति भेजने की सज्जनता प्रगट नहीं की है, यद्यपि जवाब के लिए तक़ाज़े भी किए जा चुके हैं। पत्र का अविकल अनुवाद इस प्रकार है:—

महाशय,

सम्भवतः आपको यह बात मालूम होगी कि मिस्टर डबल्यू० टी० डे ने 'पायोनियर' प्रेस इलाहाबाद के कीपर, मुद्रक और प्रकाशक होने का डिक्लेरेशन दिया था; वह 'पायोनियर' पत्र के भी, जो इलाहाबाद से प्रकाशित होता है, मुद्रक और प्रकाशक थे। मुझे विश्वास है कि आपको यह तथ्य भी ज्ञात है, कि मि० डे गत ५-६ महीनों से इङ्गलैण्ड में हैं। यह भी आपको अवश्य ज्ञात होना चाहिए, कि प्रेस और पुस्तकों की रजिस्ट्री के क़ानून नं० २५ सन् १८६७ की धारा ५ की उपधारा ४ के अनुसार मुद्रक और प्रकाशक, जिसने डिक्लेरेशन दिया हो, जितनी बार ब्रिटिश इण्डिया से बाहर जाय, उतनी ही बार ऐसे मुद्रक और प्रकाशक को डिक्लेरेशन देना ज़रूरी है, जो हिन्दुस्तान में रहता हो।

आपको यह भी ज्ञात होना चाहिए कि इस महीने (सितम्बर) की १७ तारीख़ को मि० पी० एम० पोथेकारी नाम के एक महाशय ने नया डिक्लेरेशन दिया है।

उक्त बातों से प्रकट है कि 'पायोनियर' छापाख़ाना और 'पायोनियर' सम्वाद-पत्र बहुत अर्से तक बिना डिक्लेरेशन के ही चलते रहे हैं।

क्या आप मेहरबानी करके मुझे सूचित करेंगे, कि उक्त मामले में कोई सरकारी कार्यवाही की गई है या किए जाने का विचार हो रहा है?

यह बात सार्वजनिक लाभ से सम्बन्ध रखने वाली होने के कारण मैं इसकी नक़ल नीचे लिखे अधिकारियों के पास तथा प्रेस को भी भेज रहा हूँ:—

१—कमिश्नर इलाहाबाद डिवीज़न, इलाहाबाद
२—चीफ़ सेक्रेटरी, संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट, नैनीताल
३—होम-मेम्बर, संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट
४—प्राइवेट सेक्रेटरी टु हिज़ एक्सीलैन्सी दि गवर्नर संयुक्त प्रान्त।

भवदीय,
—आर० सहगल

मालिक बनाम 'कीपर' का मामला

हाईकोर्ट से तबादले की दर्ख़्वास्त नामञ्ज़ूर

इलाहाबाद, १२ अक्टूबर

पाठकों को स्मरण होगा कि अनेक पक्षपातों को दृष्टि में रखते हुए 'चाँद' तथा 'भविष्य' के अध्यक्ष श्री० सहगल जी की ओर से २१ सितम्बर को एक दर्ख़्वास्त और हलफ़नामा हाईकोर्ट में इस अभिप्राय से पेश किया गया था, कि चूँकि अब तक मैजिस्ट्रेट का रुख़ सदा पक्षपातपूर्ण रहा है इसलिए "मालिक बनाम कीपर" वाला मामला ख़ाँ साहब मौलवी रहमानबख़्श क़ादरी के इजलास से बदल कर किसी दूसरी अदालत में भेज दिया जाय। श्री० सहगल जी की ओर से कहा गया था कि (१) पहिले ही दिन सम्मन ग़लत होने पर भी मैजिस्ट्रेट का श्री० सहगल जी को एक विशेष प्रकार के पेचीदे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बाध्य करना, (२) श्री० सहगल जी भ्रातृबधू के देहान्त होने पर तथा एक ऐसी परिस्थिति में, जबकि स्वयं उन्हें ही दाह-कर्म करना पड़ा हो, मुक़दमा मुल्तवी न करने (३) श्रीमती लक्ष्मी-देवी को सरकारी गवाह की हैसियत से न बुला कर, अदालती गवाह की हैसियत से तलब करने तथा इसी प्रकार की कई अन्य बातें करके मैजिस्ट्रेट ने पक्षपात का परिचय दिया है। श्री० सहगल जी की ओर से बहस करते हुए इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर श्री० अखिलनाथ साम्याल ने अदालत से यह भी निवेदन किया कि चूँकि इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट श्री० मूडी से सहगल जी की झगड़ा हो चुका है, जिसे स्वयं डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने अपने बयान में स्वीकार किया है और चूँकि स्वयं श्री० मूडी की ओर से यह विचित्र (Unique) मामला चलाया गया है और चूँकि ख़ाँ साहब श्री० मूडी के पर्सनल असिस्टेण्ट हैं इसलिए श्री० सहगल जी को इस बात का भय है कि इस मामले में ख़ाँ साहब श्री० सहगल जी के साथ न्याय नहीं करेंगे, अतएव मामला दूसरी अदालत में भेजा जाय।

ठीक एक बजे से ३॥ बजे शाम तक बहसें होती रहीं; किन्तु जज महोदय (श्री० न्यामतुल्ला साहब) ने अन्त में श्री० सहगल जी की दरख़्वास्त नामञ्ज़ूर कर दी, परन्तु अपनी आज्ञा में जज महोदय ने श्री० सहगल जी की भ्रातृबधू की मृत्यु के अवसर पर मामला १३ दिन के लिए स्थगित न करने की निन्दा करते हुए लिखा है कि "मैजिस्ट्रेट को इस मामले में विशेष बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए था।" जज महोदय ने यह भी कहा है कि यदि सहगल जी की ओर से प्रार्थना की जाय, तो मैजिस्ट्रेट को उन गवाहों को दोबारा तलब करने की प्रार्थना पर विचार करना चाहिए, जिनकी गवाही एक ऐसे समय ली जा चुकी है, जबकि अपनी भ्रातृबधू की मृत्यु के कारण श्री० सहगल जी अदालत की कार्रवाई में भाग नहीं ले सके थे।

श्री० सहगल जी की ओर से श्री० अखिलनाथ सान्याल बैरिस्टर तथा श्री० मुकर्जी एडवोकेट ने पैरवी की तथा गवर्नमेण्ट की ओर से श्री० उमाशङ्कर वाजपेई (प्रधान गवर्नमेण्ट एडवोकेट) तथा श्री० अम्बिकाप्रसाद पाण्डेय ने, जो गवर्नमेण्ट की ओर से इस मामले में विशेष रूप से नियुक्त किए गए हैं और जिन पर श्री० भुवनेश्वरनाथ मिश्र वाले मामले के बाद से स्थानीय डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० मूडी की विशेष कृपा रही है। बहस के सिलसिले में एक बार जज महोदय ने पूछा भी था कि मि० पाण्डेय, आप इस मामले में कैसे दिलचस्पी ले रहे हैं? पाण्डेय जी ने उत्तर दि कि वे सरकार की ओर से विशेष रूप से नियुक्त किए गए हैं। सान्याल महोदय को भी कहना पड़ा कि "मि० मूडी की ही कृपा का यह फल है।" अब यह मामला २३वीं अक्टूबर को उन्हीं ख़ाँ साहब के इजलास में पेश होगा।

—नोआखाली (बङ्गाल) शहर के डॉक्टर मनमोहन चटर्जी के मकान, उनके दवाख़ाने, बङ्गाल की उनके पुत्र गोपाल चटर्जी की दर्ज़ी की दूकान आदि की स्थानीय पुलीस ने बड़े तड़के तलाशी ली। गोपाल के नाम कलकत्ता की स्पेशल ब्रांच पुलीस का वारण्ट था। कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली।

—बागरहाट बङ्गाल की पुलीस ने नवाबअली सराय के मीर की तलाशी ली। कहा जाता है कि कई कारतूसें मिलीं। नवाबअली गिरफ़्तार कर लिए गए।

—पेशावर ज़िले की होतीमर्दान तहसील में सब तरह की सभाओं, जुलूसों और प्रदर्शनों को, सिवाय उनके, जो केवल धार्मिक हों, दफ़ा १४४ के अनुसार दो महीने के लिए रोक दिया गया है।

—दिनाजपुर के मैजिस्ट्रेट से वारण्ट प्राप्त कर, पुलीस ने गत शनिवार को बड़े तड़के बालूरघाट के बाबू सुकुमारदास प्रोडर, श्री० महीन्द्रनाथ सरकार, श्री० अनिल घोष तथा श्री० आधार सिनहा के मकानों की तलाशी ली। तलाशियाँ कई घण्टे तक होती रहीं, किन्तु कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली।

—गत शनिवार को बड़े तड़के फ़रीदपुर पुलीस ने चौधरी मोहज़्ज़म हुसेन, डॉ० रासबिहारी सेन और बा० प्रफुल्लकुमार गुह, मजूमदार, भूतपूर्व मन्त्री, ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मकानों की तलाशियाँ लीं। कोई आपत्तिजनक चीज़ नहीं मिली और न कोई गिरफ़्तारी हुई।

—पिछले दो वर्षों में उत्तर भारत में १७० नवयुवकों पर हिंसात्मक और क्रान्तिकारी मुक़दमे चलाए गए और ६० युवकों के विरुद्ध इस समय मुक़दमा चल रहा है। ११ युवक मुख़बिर बन गए, ५१ को फाँसी और लम्बी-लम्बी क़ैद की सज़ाएँ दी जा चुकी हैं और २० नवयुवक फ़रार हैं। इन अभियुक्तों में सिर्फ़ ५ मुसलमान हैं और बाक़ी हिन्दू और सिक्ख हैं, जिनमें हिन्दुओं की ही संख्या अधिक है।

क्रान्तिकारी नवयुवकों के सुधार का जो आन्दोलन राजा सर दलजीतसिंह की अध्यक्षता में शिमले में आरम्भ हुआ था, उस पर आरम्भिक विचार शिमले में हो चुका है। शेष कार्रवाई लाहौर में शीघ्र ही होगी।

—लक्खीसराय का समाचार है कि पोस्टऑफ़िस का एक चपरासी डाक का थैला लिए हुए स्टेशन जा रहा था। रास्ते में किसी ने आक्रमण करके उससे थैला छीन लिया और भाग गया।

—कलकत्ते में दुर्गा-पूजा के उत्सव में बड़ा-बाज़ार सार्वजनिक दुर्गोत्सव की ओर से एक स्वदेशी प्रदर्शिनी सर पी० सी० रॉय की अध्यक्षता में खोली गई है।

—कलकत्ते में विलायती वस्त्रों की दूकानों पर महिलाओं की पिकेटिङ्ग जारी है। बड़ा बाज़ार तथा अन्य स्थानों में भी पिकेटिङ्ग हो रही है

—मेरठ-षड्यन्त्र के अभियुक्त श्री० कासले का स्वास्थ्य बहुत ख़राब हो गया है। अभी उनकी ज़मानत की अर्ज़ी पर सेशन्स जज ने विचार नहीं किया है। केदारनाथ सहगल, जो अभी हाल में ज़मानत पर छोड़े गए थे, बवासीर से पीड़ित हैं और बीमारी के अच्छे होने के चिन्ह दिखलाई नहीं पड़ते।

—अलीबाग़ (बम्बई) में श्री० हरिभाऊ जोशी पर राज-विद्रोह का अभियोग चलाया गया है।

—पुलिस ने काशी के भारत सेवा-मण्डल के शिक्षक श्री० रामानन्द के मकान की तलाशी ली थी। तीन पैकेट, जिसमें कुछ मसाला, था, दो नैपाली बरछे, और दो ख़ाली कारतूस मिले बतलाए जाते हैं। श्री० रामानन्द जी गिरफ़्तार कर लिए गए थे, किन्तु बाद में ज़मानत पर छोड़ दिए गए।

कलकत्ता की सशस्त्र डकैती का मामला

श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के लिए ज़मानत की अर्ज़ी

कलकत्ता, १२ अक्टूबर

स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने कलकत्ता की सशस्त्र डकैती का मामला पेश होने पर सरकारी वकील ने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में कहा कि डकैती के २७१) अभियुक्त कालीपद के पास पाए गए थे जिसने कि कहा जाता है, अपराध स्वीकार कर लिया है। इसके बाद सरकारी वकील ने श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के सम्बन्ध में कहा कि २ अक्टूबर को सवेरे धीरेन ड्राइवर कालीपद को बुलाने के लिए भेजा गया था जो कि भवानीपुर में रहता था। धीरेन ने कालीपद से कहा कि ,रात को डाका डालना है, उसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। कालीपद धीरेन के साथ हो लिया। निश्चय हुआ कि कालीपद जागूबाबू बाज़ार के सामने शाम को मिलेगा। कालीपद शाम को वहाँ गया। श्रीमती विमल प्रतिभा देवी भी मोटर पर मौजूद थीं। पेट्रोल ख़रीदने के बाद मोटर एम्पायर थिएटर के पास पहुँची। वहाँ कालीपद अपने किसी सम्बन्धी से मिलने के लिए उतर पड़ा। इसके बाद वह धीरेन और श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के साथ सेन्ट्रल एवेन्यू होता हुआ हार्डिञ्ज होस्टल के पास आया, जहाँ धीरेन के कुछ कहने पर मोटर धीमी कर दी गई। इसके बाद वे देशबन्धु पार्क में आए, जहाँ और लोग भी उनके साथ हो गए। महिला मोटर से उतर पड़ी और पद्मराज जैन के मकान में चली गई। धीरेन घटना-स्थल पर लोगों को पहुँचा आने और गड़ी दिखला देने के बाद पद्मराज जैन के मकान से महिला को लेने के लिए आया। श्रीमती विमल प्रतिभा देवी घटनास्थल के कुछ दूर मोटर पर दूसरे लोगों की प्रतीक्षा करती रहीं। घटना के बाद डाकू उनके साथ हो गए और मोटर रवाना हो गई। परन्तु आगे चल कर सड़क बनने की रुकावटों के कारण रुक गई और लोग गिरफ़्तार कर लिए गए।

जलपान के बाद ट्रिब्यूनल के फिर बैठने पर अभियुक्त नरहरि सेन ने अपने बयान को बदल दिया। उसने कहा कि मेरा वह बयान सिखलाया हुआ था। श्रीमती विमल प्रतिभा देवी कठघरे में अपनी कुर्सी पर झुकी हुई बैठी थीं। ट्रिब्यूनल के प्रेसिडेण्ट के कहने से आपको कठघरे से हटा कर अदालत के क्लर्क के सामने बैठने को कुर्सी दी गई।

सफ़ाई के वकील श्री० ए० सी० मुकर्जी ने श्रीमती विमल प्रतिभा देवी की ओर से ज़मानत पर छोड़ने के लिए अर्ज़ी पेश की। आपने कहा, उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और वे बहुत उच्च कुल की स्त्री हैं। प्रेसिडेण्ट ने कहा कि अभियोग लगाने के समय इस पर विचार किया जाएगा, तब तक वे जेल से उसी दिन अदालत में लाई जाएँगी जिस दिन उनकी ज़रूरत होगी। सफ़ाई के वकील ने कहा कि अभियुक्त यह वचन देने को तैयार है कि ज़मानत पर छूटने पर वे अपने कमरे से बाहर न निकलेंगी। इसके अतिरिक्त उनके मकान पर पुलीस का पहरा नियुक्त किया जा सकता है। सरकारी वकील ने ज़मानत का विरोध किया-आपने कहा कि श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के विरुद्ध बहुत ज़बरदस्त प्रमाण मौजूद हैं अस्वास्थ्य के सम्बन्ध में जेल के अस्पताल में प्रबन्ध किया जा सकता है। सफ़ाई के वकील के फिर प्रार्थना करने पर प्रेसिडेण्ट ने कहा कि कल अर्ज़ी पेश कीजिए।

मुस्लिम 'प्रतिनिधियों' की पोल!

प्रयाग में श्री० शेरवानी का ज़ोरदार भाषण!

'गाँधी-सप्ताह' के आख़िरी दिन के उत्सव में खद्दर भण्डार से एक बहुत बड़ा जुलूस निकला और श्रीमती कमला नेहरू और बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन के नेतृत्व में शहर के मुख्य-मुख्य भागों से होता हुआ पुरुषोत्तमदास पार्क में पहुँचा, जहाँ वह सभा के रूप में परिणत हो गया। जुलूस में नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लों से १३ चौकियाँ शामिल हुई थीं, जिनमें शराब की पिकेटिङ्ग और बहिष्कार से लङ्काशायर की हालत का दृश्य दिखलाया गया था। अङ्गरेज़ी शासन से पहले और उसके बाद के भारत की दशा का भी दृश्य दिखलाया गया था। जुलूस में स्त्रियाँ भी काफ़ी संख्या में शामिल थीं।

श्री० शेरवानी के सभापतित्व में सभा हुई। आपने कहा कि महात्मा गाँधी के जीवन के दो मुख्य सिद्धान्त, सत्य और अहिंसा हैं। पहले सिद्धान्त का प्रयोग तो पहले भी अनेक उच्च आत्माओं ने किया है, परन्तु दूसरे सिद्धान्त के प्रयोग के साथ आपका नाम सदैव स्मरणीय रहेगा, क्योंकि संसार के इतिहास में इस सिद्धान्त का जैसा सार्वजनिक प्रयोग सन् १९३१ में हुआ है, वैसा कभी नहीं हुआ है। हमारे संग्राम ने संसार की सभ्यता में एक नई बात पैदा कर दी है। एक साल के अन्दर सम्पूर्ण आधुनिक विचारशील जगत का ध्यान इस देश की ओर खिंच गया है। संसार का यह सबसे बड़ा प्रयोग है।

गोलमेज़ के सम्बन्ध में आपने कहा कि कॉङ्ग्रेसमैन गोलमेज़ की मौजूदा बातों से ज़रा भी निराश नहीं हैं। उन्हें तो गोलमेज़ से कोई आशा ही नहीं रही। हम शुरू से जानते थे कि जो प्रतिनिधि चुने गए हैं, वे कभी समझौता नहीं कर सकते। कुछ लोग गोलमेज़ भङ्ग करने के लिए ही गए हैं। मैं कह सकता हूँ कि अधिकांश मुस्लिम प्रतिनिधि किसी के भी प्रतिनिधि नहीं हैं।

मैं सर मुहम्मद शफ़ी से पूछता हूँ कि मुस्लिम लीग, ख़िलाफ़त कमिटी और अखिल भारतीय मुस्लिम कॉन्फ़्रेन्स के कितने सदस्य हैं? कितने सदस्य अपना वार्षिक चन्दा अदा कर चुके हैं? मैं कह सकता हूँ कि कॉङ्ग्रेस के मुस्लिम सदस्य इन संस्थाओं के सदस्यों से हज़ार गुना ज़्यादा हैं। केवल राष्ट्रीय मुस्लिम दल की देश भर में ८० शाखाएँ हैं। मि० शफ़ी और मि० जिन्ना अपनी कही हुई बातों के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। पृथक निर्वाचन को आप लोग मुसलमानों के लिए ज़हर बतला चुके हैं। आपने कहा कि राष्ट्रीय मुस्लिम दल की स्कीम ही समस्या का हल कर सकती है। मैं इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री को बधाई देता हूँ कि उन्होंने हमारे जातिवालों को किस सफलता के साथ खेल का पाँसा बनाया है।

इसके बाद बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन और मौ० शाहिद के भाषण हुए।

इलाहाबाद स्वदेशी प्रदर्शिनी

आगामी ३ नवम्बर को स्वराज्य-भवन में होने वाली इलाहाबाद स्वदेशी प्रदर्शिनी की तैयारियाँ हो रही हैं। स्वराज्य-भवन के भीतर और बाहर सब मिला कर १७२ दुकानें लगेंगी। काश्मीर और डेराइस्माइलख़ाँ सदृश दूर-दूर के शहरों से दूकानदार अपनी चीज़ें लेकर आएँगे। प्रदर्शनी की आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा कॉङ्ग्रेस अस्पताल को दिया जायगा।

—सिलचर (आसाम) का समाचार है कि एक मनीपुरी पुलीस कॉन्स्टेबिल ने कुछ समय पहले नरसिंह हाईस्कूल के एक विद्यार्थी को पीटा था। मुक़दमा चलने पर मैजिस्ट्रेट ने उस पर ५१) रु० जुर्माना किया।

नज़रबन्द की माता का आर्तनाद

घर बिकने पर दर-दर की भिखारिणी हो जाऊँगी

चटगाँव के श्री० उत्तरकुमार धर, जो हिजली कैम्प में नज़रबन्द हैं, उनकी वृद्धा माता श्री० जानकी बाला देवी ने समाचार-पत्रों में एक चिट्ठी प्रकाशित कराई है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि मेरे पुत्र श्री० उत्तरकुमार धर ने बङ्गाल-सरकार के पोलीटिकल सेक्रेटरी को लिखा था कि मुझ पर ५०० रु० का जो क़र्ज़ है वह अदा कर दिया जाय, किन्तु सरकार ने कोई ध्यान न दिया। अब क़र्ज़दार लोग मकान को, जिसमें मैं रहती हूँ, बिकवाने पर तैयार हैं। अगर मेरा मकान बिक गया तो मैं दर-दर की भिखारिणी बन जाऊँगी। मैं सरकार से पूछती हूँ कि क्या वह नैतिक रूप से इसे उचित समझती है कि वह एक निर्दोष विधवा के प्रति यह रुख़ अख़्तियार करे? सरकार मुझे केवल १० रुपए मासिक जीवन व्यतीत करने के लिए देती है। क्या कोई स्त्री इतनी थोड़ी रक़म में अपना काम चला सकती है? न्याय और औचित्य के नाम पर सरकार से यह प्रश्न करती हूँ। जनता से मेरी अपील है कि वह सरकार पर यह दबाव डाले कि वह एक निर्धन परिवार के प्रति उचित व्यवहार करे। इस सङ्कट के समय में मैं और क्या कह सकती हूँ?

—कलकत्ते में बङ्गाल प्रान्तीय हिन्दू सभा के दफ़्तर की तलाशी श्रीमती विमल प्रतिभा की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में ली गई। सभा के दो टाइप-राइटरों पुलीस उठा ले गई और कहा गया कि श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के मामले की जाँच के लिए इन टाइप-राइटरों की ज़रूरत है। श्री० पद्मराज जैन के मकान की भी तलाशी इसी सम्बन्ध में ली गई।

—१३ अक्टूबर के दोपहर को ढाका के बड़े डाकख़ाने में एक सशस्त्र दल ने डाका डाला। वहाँ पहरे पर नियुक्त पुलिस वालों ने उन पर गोलियाँ चलाईं, पर निशाना चूक गया। डाकुओं ने भी गोली चलाई जिससे दो कॉन्स्टेबिल घायल हुए, इनमें से एक की दशा चिन्ताजनक है। दो व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए, जिनके पास कहा जाता है, दो रिवॉल्वर और लूटा हुआ रुपया मिला। इस सम्बन्ध में कितने ही घरों की तलाशियाँ ली जा चुकी हैं। गॉडरिया में डॉ० बनेश्वर राय और दीगा बाज़ार में श्री० शशाङ्ककुमार के घरों की भी तलाशी ली गई।

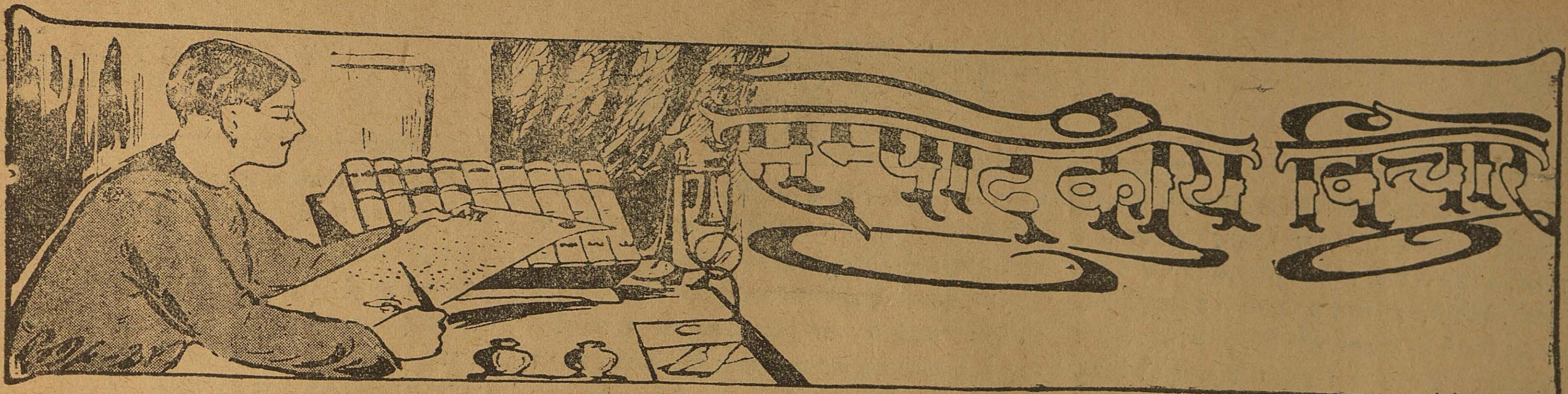

भविष्य

१६ अक्टूबर, सन् १६३१

अभी दिल्ली दूर है

भारत के भाग्य का निर्णय करने को नियुक्त की गई लन्दन की राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स के सम्बन्ध में अनेक लोगों को जो आशङ्का थी, वह दिन पर दिन सत्य सिद्ध होती जा रही है। उसमें होने वाले वाद-विवाद के फल-स्वरूप भारत की राजनीतिक समस्या सुलझने के बदले दिन पर दिन पेचीदी और मुश्किल बनती जा रही है। साम्प्रदायिक समझौते की चेष्टा के असफल होने से कॉन्फ्रेन्स के रास्ते में ऐसा रोड़ा अटक गया है कि उसका आगे बढ़ सकना ही नामुमकिन है। यद्यपि अभी कॉन्फ्रेन्स की कार्रवाई जारी है और ऐसे विषयों पर विचार किया जा रहा है, जिनका साम्प्रदायिक प्रश्न से सम्बन्ध नहीं; पर जनता समझ रही है कि कॉन्फ्रेन्स ख़त्म हो गई और अब जो कुछ हो रहा है, वह अपनी असफलता पर पर्दा डालने के लिए है।

इसका नतीजा यह हुआ है, कि भारत की राजनीतिक समस्या पहले से कहीं ज़्यादा भयजनक हो गई है। सर तेजबहादुर सप्रू जैसे कॉन्फ्रेन्स के भक्त ने भी अपने भाषण में बार-बार कहा है कि साम्प्रदायिक समझौते के असफल होने का नतीजा भारत में ऐसा भयङ्कर सिद्ध होगा कि उसको ज़बान पर भी लाना गुनाह है। उन्होंने कहा है कि हम लोग कल्पना भी नहीं कर सकते कि इसके कारण कैसे भीषण दृश्य देखने में आएँगे।

भारतीय कॉङ्ग्रेस के नेता भी इस बात को भली भाँति समझ गए हैं, और सरदार पटेल, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री० राजेन्द्रप्रसाद आदि ने स्पष्ट शब्दों में जनता को सत्याग्रह-संग्राम की तैयारी करने का आदेश दे दिया है। प्रेज़िडेण्ट पटेल तो लन्दन में बैठे हुए नित्य-प्रति महात्मा गाँधी को सबसे पहले जहाज़ से भारत लौट जाने की सलाह देते रहते हैं। उन्होंने साफ़ कह दिया है कि गोलमेज़ परिषद इङ्गलैण्ड के हित के लिए की गई है, भारत के हित के लिए नहीं।

भारत सरकार भी इस परिस्थिति की वास्तविकता से अनजान नहीं है। जहाँ भारतीय नेता शब्दों द्वारा मन के ग़ुबार को निकाल रहे हैं, वह कार्य-रूप से भावी आन्दोलन का मुक़ाबला करने के लिए तैयारी कर रही है। नया प्रेस-ऐक्ट उसका एक बहुत प्रभावशाली अस्त्र है। आर्थिक दृष्टि से यद्यपि भारत खोखला हो चुका है, तो भी वह उसे अधिकाधिक पङ्गु और आश्रित बनाने की चेष्टा कर रही है, जिससे भारतवासी ब्रिटिश माल का बॉयकॉट करने में कामयाब न हों। साथ ही वह राजनीतिक कार्यकर्ताओं, पत्र-सम्पादकों तथा लेखकों पर इतने ज़ोरों से दमन कर रही है, जितना आन्दोलन के ज़माने में भी देखने में न आया था।

अब यह सवाल है कि अगर स्वराज्य आन्दोलन ने फिर से सर उठाया तो नतीजा क्या होगा? भारतीय नेता कह रहे हैं कि चाहे हमको कैसा भी भयङ्कर बलिदान क्यों न करना पड़े, हम अपना अधिकार लेकर रहेंगे। महात्मा गाँधी 'भारतवासियों के ख़ून की गङ्गा बहाने को' उद्यत हैं। पर हमको जान पड़ता है कि इस बार सरकार का पक्ष पहले से अधिक मज़बूत हो गया है। सरकार को तीन बड़े साथी मिल गए हैं। जो ये हैं—(१) मुसलमान, (२) देशी रियासतें, और (३) अछूत।

मौ० शौकतअली साफ़ कह चुके हैं कि अगर सरकार मुसलमानों को सन्तुष्ट कर दे तो वे हर हालत में उसका साथ देंगे। वे यह भी कह चुके हैं कि चाहे गाँधी जी रहें या लौट जाएँ, हम गोलमेज़ परिषद का कार्य जारी रक्खेंगे। डॉ० अम्बेडकर कहते हैं कि गाँधी जी अछूतों के प्रतिनिधि नहीं हो सकते और अछूतों का हिन्दुओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। देशी रियासतों का तो आदर्श ही ब्रिटिश सिंहासन के प्रति वफ़ादार बने रहना है, और सर अकबर हैदरी के उद्गारों से प्रकट होता है कि सबसे आगे देशी रियासतें ब्रिटिश भारत के स्वाधीनता-संग्राम पर अच्छी तरह से विरोध करेंगी।

राष्ट्रीय दल के अधिकांश लोगों के ख़्याल से ये बातें कोरी बकवाद हैं। वे कहते हैं कि पिछले वर्ष आन्दोलन के समय भी ये सब लोग सरकार के साथ थे, और हमारे कार्य में बाधा नहीं डाल सके। पर यह ख़्याल ग़लत है। पिछली बार ये कॉङ्ग्रेस का सङ्गठित रूप से विरोध नहीं कर सके थे। दूसरी तरफ़ कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक तथा कार्यकर्ताओं का सङ्गठन काफ़ी मज़बूत था, और इसलिए विरोधी लोग उससे पार न पा सके। अब गोलमेज़ परिषद में सरकार उनको नए अधिकार और सब प्रकार के साधन देकर राष्ट्रीय आन्दोलन का मुक़ाबला करने भेजेगी। पञ्जाब में मुसलमानों की अहरार पार्टी ठीक कॉङ्ग्रेस वालों की तरह ही सत्याग्रह और पिकेटिङ्ग कर रही है। यू० पी० में भी एक 'ख़लील-दल' की स्थापना हुई है। और भी ऐसे कितने ही सङ्गठन शीघ्र बन सकते हैं। अछूतों की आदि-हिन्दू सभा अभी बहुत ज़ोरदार नहीं है, पर कौन कह सकता है कि डॉ० अम्बेडकर और उनके मित्र सरकारी सहायता पाकर अछूतों का कोई मज़बूत सङ्गठन न बना डालेंगे? कलकत्ते के अङ्गरेज़ नवयुवक भी 'राजभक्त दल' (रॉयलिस्ट) के नाम से अपना सङ्गठन कर रहे हैं, ताकि वे ब्रिटिश सरकार के विरोधियों का दमन कर सकें।

इन सब बातों को देख कर मालूम पड़ रहा है कि जो लोग महात्मा गाँधी के सरकार से समझौता करके स्वराज्य आन्दोलन को बन्द करने का विरोध करते थे, वे परिस्थिति को ठीक समझ रहे थे। साथ ही जो लोग महात्मा जी की लन्दन-यात्रा का विरोध करते थे, वे भी मूर्ख न थे। कुछ लोग ख़्याल करते थे कि महात्मा जी के लन्दन जाने से भारत की माँगों की चर्चा संसार भर में होने लगेगी और बड़े-बड़े राष्ट्रों की सम्मति हमारे पक्ष में हो जायगी; पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ हम लोगों से अधिक चालाक और कूटनीति के ज्ञाता हैं। उन्होंने गोलमेज़ परिषद द्वारा संसार को समझा दिया कि भारत के विभिन्न सम्प्रदायों में घोर फूट है और कॉङ्ग्रेस उसे मिटा सकने में असमर्थ है। इसलिए भारतवासी स्वराज्य के अयोग्य हैं। साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन के शत्रुओं को कॉङ्ग्रेस का पहले से कहीं अधिक विरोधी बना दिया।

इस प्रकार अब राष्ट्रीय दल वालों का कार्य बहुत कठिन हो गया है और सफलता की आशा पिछली बार की अपेक्षा भी कम हो गई है। यह सम्भव है कि आशा के भङ्ग हो जाने से राष्ट्रीय दल रोष से भर जाय और स्वाधीनता के लिए प्राणों का बलिदान करने को तैयार हो जाय, पर मुसलमानों, अछूतों और देशी रियासतों के सहयोग से सरकार उसके मार्ग में ज़बर्दस्त बाधा पैदा कर देगी और यह भविष्यवाणी कर सकना आसान नहीं है कि इसका परिणाम क्या निकलेगा?

❀ ❀ ❀

हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न

हम देख रहे हैं, गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न दिनोंदिन जटिल होता जा रहा है। यद्यपि बीच-बीच में कोई-कोई मनमोहक समाचार आकर आशा का सञ्चार करते रहते हैं; पर वास्तव में समझौते की कोई आशा नज़र नहीं आती।

मुसलमान सदस्य अपनी १४ बातों पर अटल होकर बैठे हैं, सिक्ख और देशी नरेश भी अपना पैर पीछे हटाना नहीं चाहते। ऐसी दशा में अल्पसंख्यक समुदायों और नरेशों के प्रश्न की मीमांसा असम्भव सी हो रही है। किन्तु मुसलमानों का प्रश्न अधिक बाधक है, अगर मुसलमान एक साथ मिल कर काम नहीं करते, तो हिन्दू समुदाय किसी प्रकार भी आँख बन्द करके आत्म-समर्पण को तैयार नहीं है। श्री० जयकर ने स्पष्ट ही कह दिया है कि जब मुसलमान लोगों की माँग युक्ति-युक्त नहीं है, तो मामला पञ्चायत को चाहे अब सौंप दिया जाय, चाहे सङ्घ-शासन-विधान में बाद में पञ्चायत द्वारा तय कराने का अधिकार रख दिया जाय अथवा सरकार स्वयं इसका निश्चय कर दे। यदि सरकार निर्णय करना अस्वीकार कर दे और मुसलमान पञ्चायत की दोनों विधियों को अस्वीकार कर दें, तो गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का टूट जाना ही वाञ्छनीय है।

हम समझते हैं, गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स ही टूटेगी, क्योंकि मुसलमान लोग बिना पहले अपना प्रश्न तय किए हुए कॉन्फ्रेन्स का काम आगे चलने में बाधा देने को प्रस्तुत हो रहे हैं; यही कारण है कि महात्मा जी भी कॉन्फ्रेन्स से खीज उठे हैं।

महात्मा जी के उकताने के और भी कारण हैं, जैसे सरकार का अभिप्राय अभी स्पष्ट न होना, कि वह क्या करना चाहती है, दूसरे पार्लामेण्ट का साधारण चुनाव शीघ्र होने के कारण गोलमेज़ का काम टलना, तीसरे अङ्गरेज़ मेम्बरों की मनोवृत्ति, किन्तु सब से बड़ा कारण हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न ही जान पड़ता है।

कैन्द्रिक शासन के सम्बन्ध में प्रथम तो मुसलमान सदस्य अपनी सारी माँगों के तय होने के पहले कोई बात उठाने ही नहीं देते, न वह डॉक्टर अन्सारी के निमन्त्रण के पक्ष में हैं, क्योंकि वह डरते हैं कि डॉक्टर अन्सारी के आने से मुसलमानों में दो दल हो

जायँगे दूसरे कैन्द्रिक व्यवस्थापिका परिषद के सदस्यों की संख्या में कितने किस वर्ग के होंगे, इसका प्रश्न हास्यजनक हो उठा है। देशी नरेश अपने पक्ष के ४० सदस्य चाहते हैं, मुसलमान लोग ३३ सदस्यों की माँग खड़ी करते हैं, दलितों और सिक्खों को भी अवश्य ही कुछ जगह देनी पड़ेगी। इस तरह अगर सौ में ३३ मुसलमानों के, ४० नरेशों के, १५ अन्य अल्पसंख्यकों के सदस्य हों तो ८८ सदस्य बँट जाते हैं। बाक़ी २० करोड़ हिन्दुओं के लिए १२ जगहें बचती हैं, जो प्रत्यक्ष ही न्यायसङ्गत नहीं कही जा सकतीं। इस परिस्थिति को हिन्दू कैसे स्वीकार कर सकते हैं ?

हम राष्ट्रपति सरदार पटेल की इस बात से कि देश को भीषण शान्तिशील समर के वास्ते तैयार रहना चाहिए और महात्मा गाँधी के इस कहने से भी, कि भारतवासी स्वतन्त्रता के लिए अपने ख़ून की गङ्गा बहा देंगे, यही अनुमान करते हैं कि सङ्घ-योजना-उपसमिति की सम्भवतः अन्त्येष्टि बहुत समीप है।

लेकिन प्रश्न यह पैदा होता है, कि क्या इस बार इस लड़ाई में मुसलमान, सिक्ख और दलित कहलाने वाले भाई भाग लेंगे या केवल २० करोड़ हिन्दुओं को ही सत्याग्रह संग्राम को चलाना पड़ेगा ? इस प्रश्न से हमारा यह मतलब नहीं है कि २० करोड़ हिन्दू सत्याग्रह संग्राम चलाने में अयोग्य सिद्ध होंगे, हमारा मतलब यही है कि सत्याग्रह संग्राम में विजयी होने पर, फिर यही देशी मुसलमान नेता, जो अखिल विश्व-मुस्लिम-सङ्घ का स्वप्न देख रहे हैं, क्या बाधक न होंगे ?

इस बार सत्याग्रह संग्राम की कृतकार्यता और उसके बाद के उचित शासन-सङ्गठन बन सकने के लिए हमारे राष्ट्रीय दल के मुसलमानों को अभी से जी-जान से कोशिश करनी चाहिए। अगर यह लोग देश की मुसलमान जनता को सङ्कुचित और ग़लत विचार वाले नेताओं के पञ्जे से छुड़ा कर, उसे वास्तविक परिस्थिति के समझाने में कृतकार्य हुए, तो हमें अपनी विजय का मधुर फल खाने को निश्चय मिल सकता है—अन्यथा परिस्थिति आज की अपेक्षा कहीं अधिक भीषण हो जायगी

मनुष्यता का लोप

उस समय मनुष्य की बर्बरता की पराकाष्ठा हो जाती है, जब वह स्वार्थान्ध होकर ज्ञान से नाता तोड़ लेता है और पशुता पर उतर आता है। हम नित्य ही देखते हैं, बानरी, कड़ी धूप में जब धरती जलती है, अपने बच्चे को नीचे रख कर उस पर बैठ जाती है, सर्पिणी, कुतिया और बिल्ली प्रभृति जीव भूख की ज्वाला में अपने नवजात अण्डे-बच्चों को उदर-दरी में धर लेता है ! पशु भूख में दूसरे का चारा छीन कर खा लेता है, लेकिन वह मनुष्य पशु से भी गिरा हुआ है, जो भूखा नहीं है; किन्तु दूसरे के मुँह का टुकड़ा, इसलिए छीनता है कि उससे सुन्दरतर भोजन अपने लिए प्रस्तुत कर सके अथवा उसे सञ्चित रख कर भावी भोग-विलास के पदार्थों की प्राप्ति के लिए निश्चिन्त हो बैठे !!

जब एक जाति दूसरी जाति पर अस्त्र-शस्त्र लेकर आक्रमण करती है और उसका धन, धरा-धाम छीन कर उसे अपना ग़ुलाम बनाती है, तो उसमें सिवा आक्रमणकारी के मानसिक और भौतिक पतन के कोई मानवी महत्ता की बात नहीं होती। जो जातियाँ अकारण किसी जाति का रक्तपात करके उस पर अपना धर्म, अपनी सभ्यता और अपना प्रभुत्व लादती हैं और फिर अपने विजेता होने का अभिमान करती हैं, वह इस बात को व्यवहार द्वारा सिद्ध करती हैं कि अभी तक सारे विज्ञान, कला, कौशल आदि की उन्नति कर लेने पर भी मनुष्य जङ्गली कुत्ते से अधिक अच्छा नहीं है !

हम देख रहे हैं कि भारत में एक ऐसा समुदाय भी है, जो अपनी सभ्यता, विद्वत्ता, चतुरता तथा अभिमान के बोझ से दब कर मरा जाता है, किन्तु फिर भी रात-दिन वह इसी चिन्ता में रहता है कि जहाँ तक हो, निर्बल का रक्तपान किया जाय। और कहाँ तक कहें, यह समुदाय, काश्मीर, चटगाँव, हिजली इत्यादि स्थानों की अमानुषिक घटनाओं को देख कर दुखी होने के बदले अपने अन्तस्तल में सुख अनुभव करता है। इसी प्रकार एक ऐसा समुदाय है, जो लूटना, मारना, काटना और नाना प्रकार की गुण्डागिरी को अपना धर्म समझता है। ऐसे लोगों को सभ्य मनुष्य कहना और समझना सभ्यता और मनुष्यता का उपहास करना मात्र नहीं, तो और क्या है ?

ऐसी विपरीत बुद्धि और कुटिल नीति के लोगों का यह नियम है कि वह अपनी नीचता के लिए अहमित हों और दूसरे को उन्हीं नीच कर्मों के लिए बुरा कहें—लाञ्छित और अपमानित करने का उद्योग करें !

भारत की जल-वायु में पल कर लाल होने वाले अधिकांश अङ्गरेज़ों और उनके सम्वाद-पत्रों में भी हम इसी दुर्बुद्धि और पतित मनोवृत्ति का समावेश पाते हैं। ये लोग क्लाइव, हेस्टिंग्स वग़ैरह पुराने और डायर, ओडायर प्रभृति नए दुष्कृति-प्रेमी और पापियों को अभिमान की दृष्टि से देखते हैं; लेकिन भारतवासी अगर अपने देश के उपक्त दुष्कृत्यों से कम घृणित काम करने वालों की उसी दृष्टि से प्रशंसा करते हैं, जिससे वह करते हैं, तो वह राज-विद्रोही समझे जाते हैं !!

जब कभी कलकत्ते के बाहर किसी क्रान्तिकारी ने किसी अङ्गरेज़ या हिन्दुस्तानी की हत्या की है या हत्या करने की चेष्टा की है, तो कलकत्ता कॉरपोरेशन ने उस कृत्य की निन्दा की। इस प्रकार की निन्दा में गोरे, काले दोनों शामिल रहे। लेकिन आज कलकत्ते के समाचार-पत्रों से ज्ञात होता है, कि हिजली और चटगाँव की पैशाचिक लीला की कॉरपोरेशन निन्दा करने उठता है तो उसके विरोध के लिए साधारण गोरे ही नहीं, किन्तु ईसाई-धर्म के ज्ञाता तथा 'स्टेट्समैन' वाले भारत-विख्यात महापुरुष (?) सर आर्थर मूर, मि० विलिअर्स और मिस्टर चैपमैन मोर्टीमर वग़ैरह खड्ग-हस्त हो जाते हैं !!

अमानुषिक काम अमानुषिक ही है; अतः हेय और निन्दनीय है, चाहे उसका करने वाला गोरा हो या काला; पीला हो या लाल; हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई। यदि सभ्यता की स्थापना का अर्थ है मनुष्यता की स्थापना तो मनुष्य मात्र के प्राणों को, पुत्र-कलत्र को और मान-मर्यादा को समान दृष्टि से देखना होगा। सत्य को सिंहासनासीन करके स्वाधीनता और दुर्वासनाओं को छोड़ना पड़ेगा। जब विद्वान लोग, जन-पद के मत को बनाने और ठीक करने वाले सम्पादकगण, जनता के अग्रगण्य लोग ही इतने पतित हो जाएँगे, कि बर्बरता और पाशविकता का समर्थन करने लगेंगे तो दूसरे लोग भी उनका अवश्य ही अनुकरण करेंगे। न्याय, नीति, समता और स्वतन्त्रता का नाम मिट जायगा और बर्बरता पराकाष्ठा को पहुँच जायगी !!

हमारी देशी रियासतें

हमारी अधिकांश देशी रियासतों में होने वाले अमानुषिक अत्याचारों की कहानी इतनी दारुण है; जिसकी कल्पना भी ब्रिटिश-इण्डिया में रहने वाले नहीं कर सकते। और ऐसा होने का कारण भी स्पष्ट है। हमारे देशी नामधारी राजाओं और नवाबों को कभी इतनी फ़ुर्सत ही नहीं मिलती, कि राज के काम को अपनी आँखों से देखें, अपनी प्रजा के दुख-सुख के हाल का स्वयम् अनुभव करें। जो अपनी प्रजा के दुख-सुख का हाल सीधा जाकर देखना नहीं चाहता, वह उनके दुखों के दूर करने का भला क्या प्रबन्ध करेगा ?

रियासत का स्वामी हिन्दू हो या मुसलमान, जो रुपया रियाया से लेता है, वह उसे अपनी निज को सम्पत्ति समझता है। अपने भोग-विलास में ख़र्च करने के बाद जो बचता है, उसमें से थोड़ा रुपया दुनिया के दिखलावे के लिए रियाया के काम में लगाता है, बाक़ी अपने उन महाप्रभुओं की प्रसन्नता के लिए समर्पण कर देता है, जिनके प्रसाद से उसे प्रजा के धन से मौज उड़ाने का मौक़ा मिलता है।

जो राजा लोग विलायत जाते हैं, वह पेरिस और इङ्गलैण्ड के होटलों, बाज़ारों और महलों में जितनी रक़में उड़ा देते हैं, उनका हिसाब ब्योरेवार लिखा जाय तो मालूम होगा कि कितना रुपया खर्च हुआ और किस-किस काम में ख़र्च हुआ। हमें विश्वास है कि ब्योरा देखने से लज्जा को भी लज्जा से अपना सर नीचा कर लेना पड़ेगा। हम राजा लोगों की बातों को जानते हैं, लेकिन क़ानून हमें अनुमति नहीं देता कि इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से लिख कर हम अपने मनोभावों को स्वतन्त्रतापूर्वक पाठकों के सामने उपस्थित कर सकें। अस्तु।

मुसलमान रियासतों में एक बड़ी भारी बात यह है कि वहाँ के मुसलमान रईस, अमीर और धनवान हिन्दुओं को अधिक सताते हैं और हिन्दुओं को, फ़र्याद करने पर प्रायः उन्हें न्याय नहीं मिलता। हिन्दू-प्रजा को मुसलमान बनाने की सीमातीत चेष्टा की जाती है। प्रायः देखा जाता है कि रियासत के स्वामी इतने बुरे नहीं होते, जितने दूसरे अफ़सर और साधारण कर्मचारी होते हैं।

रियासतों में शिक्षा का नाम तक देखने में नहीं आता। केवल राजधानी में दिखलाने के वास्ते कुछ शिक्षा का प्रबन्ध देखा जाता है। बीमारों के लिए दवा का प्रबन्ध राज्य की ओर से, शिक्षा से भी कम देखा जाता है। देहातों में अदालतें ऐसे न्यायाधीशों के हाथ में होती हैं कि जो न्याय को नीलाम करते हैं। कई छोटी रियासतों में स्वयम् राजा को भी रुपयों की ज़रूरत इसी तरह पूरी करनी पड़ती है।

बहुतों का ख़्याल है कि अङ्गरेज़ ऐडमिनिस्ट्रेटर के द्वारा राज्य का प्रबन्ध अच्छा होता है; लेकिन यह नितान्त भ्रम और भूल है। भरतपूर की प्रजा अङ्गरेज़ प्रबन्ध-कर्ता के होते हुए भी पहले की ही तरह असन्तुष्ट है। रियासतें प्रायः कर वसूल करने और अपनी हुकूमत की शान जमाने में ब्रिटिश भारत का अनुकरण करती हैं, लेकिन और बातों में ब्रिटिश भारत से भी गई बीती हैं। किसी भी रियासत में स्वतन्त्र मत देने वाला सम्वाद-पत्र नहीं पाया जाता। कोई आदमी राजनीति पर व्याख्यान नहीं दे सकता। राजा के सम्बन्ध में रियासत के अन्दर बैठ कर कुछ कहना या लिखना तो बहुत दूर की बात है। राजाओं की रक्षा के लिए जब से अङ्गरेज़ी सरकार ने क़ानून बना दिया है, तब से ब्रिटिश भारत के सम्वाद-पत्रों और वक्ताओं की लेखनी और जिह्वा रियासतों के सम्बन्ध में लिखने और कहने की बहुत कम हिम्मत करती हैं।

बड़े भारी साम्राज्य के भीतर माण्डलिकों का होना जनता के लिए हितकारी नहीं होता। महात्मा मैज़िनी का भी यही मत है, अनुभव भी यही कहता है। लेकिन रियासतों के दोषों को मिटाने पर वहाँ की प्रजा

कटिबद्ध हो जाए, तो शान्तिशील सत्याग्रह के द्वारा अपना सुधार कर सकती है।

इस सम्बन्ध में सब से मज़ेदार बात तो यह है कि यही रियासतें भारत के भावी शासन-विधान में ४० प्रतिशत प्रतिनिधित्व का कोलाहल कर रही हैं, ताकि उनकी केल-लीला में किसी प्रकार का 'अनुचित' हस्त-क्षेप न हो सके और हमारा दृढ़ विश्वास है कि हमारे राजा-महाराजाओं की यह आशा पूर्णतः सफल भी होगी—आमीन !

* * *

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की आवश्यकता

पहले कपड़े और सूत आदि की मिलें ब्रिटेन में ही थीं। वहाँ का माल सब जगह जाकर खपता था और उसे बड़ा नफ़ा होता था। धीरे-धीरे अमेरिका, जर्मनी, जापान में कारख़ानों की बहुतायत हो गई। यहाँ तक कि दूसरे देशों में भी मज़दूरी सस्ती होने या जल-वायु की सुविधा के कारण थोड़े-बहुत कारख़ाने खुल गए। उन्नति की दौड़ में सब से पीछे पड़े हुए भारत में भी हम देखते हैं कि कपड़े, सूत, जूट के अनेक भारी-भारी कारख़ाने मौजूद हैं।

इन कारख़ानों में, चाहे वे भारत में हों या और कहीं, माल की खपत का हिसाब करके माल नहीं तैयार किया जाता। जो माल मँगा कर बेचने वाले लोग हैं, वह भी अन्दाज़ से ही माल मँगाते हैं, कोई खपत का लेखा ऐसा नहीं रखते, जिससे फ़ालतू स्टॉक जमा न हो। इस तरह जब अनेक देशों में बेहिसाब माल तैयार होने लगा, तो उस सब माल के लिए पूरे ख़रीदारों का मिलना कठिन हो गया।

जिस भारत में पहले केवल ब्रिटेन का सारा माल खपता था, आज वहाँ जर्मनी, अमेरिका, इटली, तथा जापान का भी बहुत सा माल आने लगा है। भारत में जो माल तैयार होने लगा है, वह अलग ! इस दशा में ब्रिटेन के माल की खपत कम होने से ब्रिटेन को आर्थिक हानि पहुँचनी स्वाभाविक है। इसी प्रकार दूसरे देश भी, जो बहुत तादाद में माल पैदा करते हैं, उनको भी अपने माल के खपाने में कठिनाई पड़ती है। माल का स्टॉक बड़े-बड़े कारख़ानों से लेकर बाज़ार के छोटे से छोटे खुदरा दूकानदार तक के पास जब इकट्ठा हो जाता है, तब रुपए की ख़ुश्की व्यापती है। इङ्गलैण्ड का माल पहले की अपेक्षा भारत और चीन में बहुत कम बिकने लगा, इधर भारत और मिश्र आदि दूसरे स्थानों में इङ्गलैण्ड के प्रति अनेक राजनैतिक कारणों से जनता की नाराज़गी ज़्यादा बढ़ गई, इसलिए इन देशों में जो ग्रेट-ब्रिटेन का माल बिकता था, उसमें भी कमी आ गई। अनेक भौतिक और शासन-सम्बन्धी कारणों से भारत के जनता की ख़रीदने वाली शक्ति का ह्रास हो गया, यहाँ तक कि पूरा-पूरा सरकारी कर चुकाने में भी वह असमर्थ हो गई। इसलिए ग्रेट-ब्रिटेन की ओर भारत की सरकार पर रुपए की ख़ुश्की का बुरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। अब हमें कोई ऐसा प्रयत्न नज़र नहीं आता जिससे ग्रेट-ब्रिटेन अपनी पहले वाली स्थिति पर पहुँच सके। यही बात दूसरी बड़ी-बड़ी ऐसी शक्तियों की है, जिनमें नाना प्रकार के पदार्थ पैदा किए और बनाए जाते हैं। इस तरह पर सभी देशों में ग़रीबी की लहर अपना रङ्ग दिखला रही है।

उद्योग-धन्धों में, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत बढ़ी-चढ़ी हैं। इनमें अपना-अपना माल देश के बाहर भेज कर बेचने की तीव्र लाग-डाट चल रही है, इनमें से हर एक अपने माल तैयार करने के कारख़ानों में अपनी सारी बुद्धि, सारी शक्ति, सारी दौलत लगा कर ऐसा माल तैयार करने की चिन्ता में निरत रहता है और चाहा करता है कि हमारा ही माल दूसरे बाज़ारों में जाकर बिके और नफ़े में सबसे अधिक साने की थैलियाँ हमारे ही देश में बाहर से आवें !

ऐसी परिस्थिति में अगर भारतवासी ज़रा भी ढीले पड़े, तो भारत का सारा बाज़ार सस्ते विदेशी माल से भर जायगा और रही-सही थोड़ी सी कारीगरी भी मारी जायगी, खादी के प्रचार से जो थोड़ा सा काम करने को ग़रीबों को मौक़ा मिला है, समूल नष्ट हो जायगा। मौलाना शौकतअली और उनके ३-४ साथी मुसलमान चाहते हैं कि उनका लाभ हो, चाहे भारत में रहने वाले ७ करोड़ ग़रीब मुसलमान, जिनमें जुलाहे तथा दरी-कालीन वग़ैरह बनाने वाले और खेती करने वालों की तादाद १०० में ९४ से ज़्यादा है, भूखे मर जाएँ।

उचित यह है कि भारतवासी कारख़ाने वाले माल को कम नफ़े पर बेचें मज़दूरों को बारी बारी से बदल कर और अधिक मैशीन लगा कर ज़्यादा से ज़्यादा माल तैयार करें। साथ ही, हाथ से काम करने वाले कारीगरों को श्रमशीलता से काम लेना चाहिए, और देश के रहने वालों को देशी माल के व्यवहार करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

अगर हम लोग इस कठिन समय में देश को न सँभाल सके तो फिर हमारे सँभलने की आशा बहुत कम हो जायगी। जो लोग विलायती माल ख़रीदने और बेचने में ही बहिश्त का दरवाज़ा देखते हैं, उनको तो समझाना कठिन है, लेकिन जो समझते हैं कि बग़ैर रोटी खाए नमाज़ रोज़ा, भजन-पूजा असम्भव है, उन्हें तुरन्त सँभल जाना चाहिए। इस सम्पत्तिक उथल-पुथल के समय ऐसा न हो कि स्वार्थी लोग हमें धर्म के नाम पर या और तरह पर बहका कर आगे के लिए किसी काम का न रक्खें !

* * *

अखिल बङ्गाल छात्र-सम्मेलन

समस्त बङ्गाल के मुसलमान छात्रों के सम्मेलन में स्वागत-समिति के सभापति श्री० हबीबुल रहमान साहब ने जो शिक्षा छात्रों को दी है, उससे प्रकट होता है कि समझदार और निःस्वार्थ देशप्रेमी मुसलमानों में राष्ट्रीयता का भाव पूर्णरूप से जागृत हो उठा

आपने कहा कि "आप लोग बङ्गाली हैं, और आपकी मातृभाषा बङ्गला है। आपका अरब या टर्की की ओर आँख लगा कर बैठना या अपनी मातृभाषा उर्दू बनाने का परिश्रम करना आपको कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकता। मकतबों और मदरसों में साम्प्रदायिकता के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करने से मुसलमान विद्यार्थियों का जो अनिष्ट होता है, वह अमङ्गल का ही हेतु है।" राजशाही कॉलेज के प्रोफ़ेसर अबू हिना साहब ने भी इसी सिद्धान्त का समर्थन किया।

क्या ही अच्छा होता, यदि इसी प्रकार के देश-प्रेम का पवित्र स्रोत भारत के बच्चे-बच्चे के हृदय में उबल पड़ता और साम्प्रदायिकता-जनित भेदभाव का मुँह काला होता ! समय है कि हमारे देशवासी धार्मिक भेदभाव डालने वाले स्वार्थियों को, हिन्दू हों या मुसलमान, पहचान कर चलने लगें। समय चूकने पर हमें अपनी मूर्खता के लिए बहुत पछताना पड़ेगा।

* * *

मौलाना शौकतअली कुछ दूसरे इराक़ के मुल्लाओं से मिल कर कुद्स या दमिश्क में फिर से ख़िलाफ़त स्थापित करने की कोशिश में हैं। हाल में आप फ़्रान्स जाकर टर्की के भूतपूर्व ख़लीफ़ा अब्दुल मजीद से बात करके आए हैं।

पदच्युत ख़लीफ़ा के ख़र्च के लिए ३०० पौण्ड मासिक निज़ाम हैदराबाद से और १०० पौण्ड मासिक नवाब-भूपाल से मिलता है। हम समझते हैं कि सर आग़ा ख़ाँ भी ज़रूर कुछ मदद करते होंगे। लेकिन भारत के कम्बख़्त मुसलमान, जो बङ्गाल में बाढ़ के कारण भूखों मर रहे हैं, उन्हें कोई एक शम्बी भी नहीं देता। इस्लामी उख़त और तबलीग़ तो इस बेवफ़ाई के ख़िलाफ़ है।

* * *

दुबे जी की चिट्ठी

(१२वें पृष्ठ का शेषांश)

"ब्रिटिश सरकार का यह क़ानून है कि करे चाहे जो, परन्तु दोष उन्हीं का समझा जायगा, जिनकी संख्या अधिक हो।"

"यह अच्छा क़ानून है। ख़ैर, आगे चलिए।"

"सो जनाब, जब हिन्दू लोग स्वराज्य के अयोग्य समझे जाएँगे, तो वही स्वराज्य मुसलमानों को सौंप दिया जायगा।"

"मुसलमानों को कैसे सौंप दिया जायगा, वह भी क्या कोई चरस की पुड़िया है, जो दे दी जायगी कि जाओ पी डालो।"

"वह इस तरह कि स्वराज्य में जो सुविधाएँ मिलेंगी वे केवल मुसलमानों को मिलेंगी—हिन्दुओं को नहीं। मौलाना शौकतअली हिन्दुस्तान के वायसराय बनाए जाएँगे। मुसलमानों को बड़े-बड़े पद तथा नौकरियाँ मिलेंगी। उन्हें हथियार बाँधने की स्वतन्त्रता रहेगी। उन पर कोई टैक्स न होगा। जितनी भूमि है वह हिन्दुओं से छीन कर मुसलमानों को दे दी जायगी।"

"अजी बस रहने दीजिए। ऐसा जिस दिन होगा उस दिन भारत में प्रलय-काल हो जायगा—दिल्लगी थोड़ा ही है। एक नहीं, बावन शौकतअली हों तो क्या परवा है।"

मैंने कहा—बस ऐसी ही हिम्मत रक्खो तो सब ठीक हो जायगा।

"हिम्मत का आनन्द देखिएगा, ज़रा गोलमेज़ पूरी तरह से असफल हो जाने दीजिए। देखिएगा कैसे ज़ोरों से सत्याग्रह छिड़ता है।"

"अच्छी बात है, यदि गोलमेज़ असफल होने में कुछ क़सर रह गई, तो तुम विलायत चले जाना और पूरी तरह से असफल कर आना—क्यों, है न ठीक ?"

"अजी क्या ठीक है, लेकिन मामला बेढब है, भगवान ही मालिक है। ख़ैर जो पड़ेगी उसे भुगतेंगे।" इतना कह कर वह चले गए।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

स्वदेशी मेला और नुमायश

३ नवम्बर से १२ नवम्बर तक

स्व० पण्डित मोतीलाल नेहरू का पुरानी कोठी

स्वराज्य-भवन

के विशाल मैदान और कोठी में होगा।

दुकानें अभी से रुक गई हैं।

दिवाली

के पहले से बाद तक बड़ी रौनक़ रहेगी। ज़रूर आकर रोशनी, खेल-तमाशे देखिए और आनन्द उठाइए।

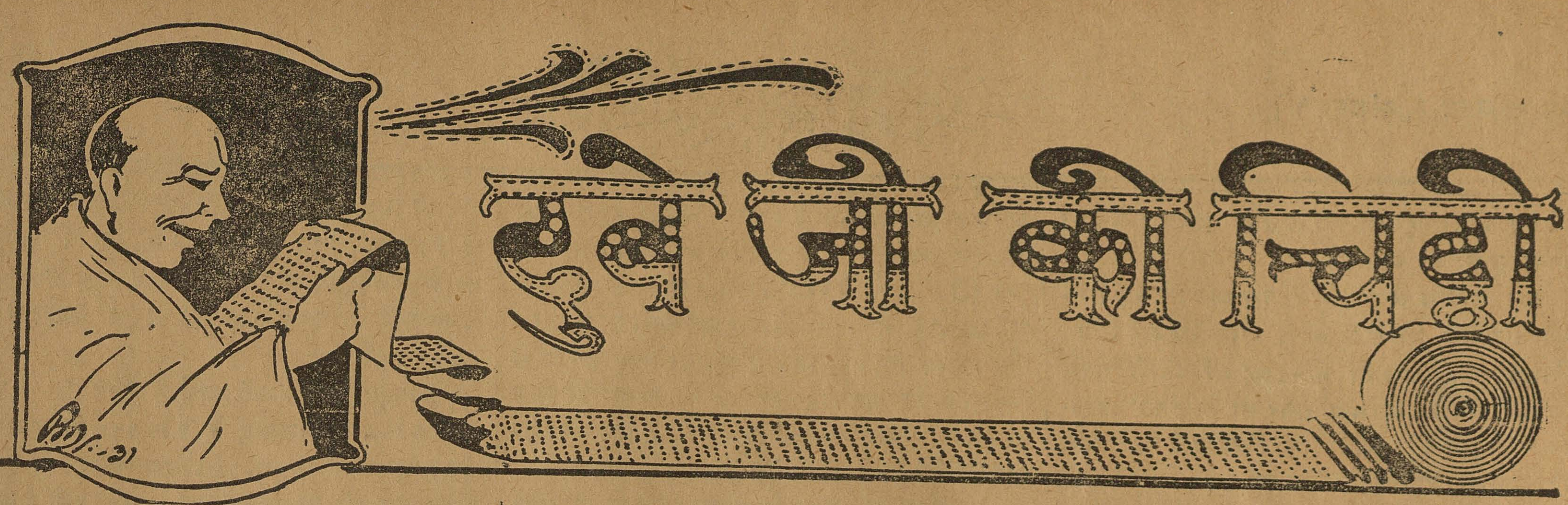

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

अपने राम से बहुधा लोग पूछा करते हैं, कि गोल-मेज़-सभा में क्या हो रहा है? अपने राम उन्हें क्या उत्तर दें? कुछ हो रहा हो तो बतावें। वहाँ तो जो कुछ हो रहा है उससे यदि कुछ न होता तो अच्छा था। भला बताइए तो सही, ये हिन्दुस्तानी स्वराज्य के योग्य हैं? ज़रा सी बात का फ़ैसला नहीं कर सकते। अङ्गरेज़ बेचारे तो स्वराज्य की गठरी बाँधे तैयार बैठे हैं, परन्तु दें किसे, कोई इस योग्य भी तो हो। जब तक साम्प्रदायिक समस्या हल न हो जाय, तब तक स्वराज्य कैसे दिया जा सकता है? कोई युक्ति ही नहीं, कोई तरीक़ा ही नहीं। इस प्रकार स्वराज्य देकर हिन्दुस्तान की जानोमाल को ख़तरे में डालना बहुत ही बड़ी ग़लती है। अङ्गरेज़ लोग अन्य प्रकार की ग़लतियाँ कर सकते हैं, परन्तु ऐसी ग़लती कभी नहीं कर सकते। अन्य प्रकार की ग़लतियाँ कैसी? यह प्रश्न हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि भारत में अधाधुन्ध दमन करने की ग़लती अङ्गरेज़ कर सकते हैं। गोलमेज़-सभा के लिए देश के सच्चे प्रतिनिधियों को न चुनने की ग़लती कर सकते हैं। देश में साम्प्रदायिकता की ज्वाला भड़का कर हिन्दू-मुसलमानों को लड़वाने की ग़लती कर सकते हैं। भारत की माँगों को ठुकरा देने की ग़लती कर सकते हैं। क्योंकि ग़लती इन्सान से ही होती है—जानवरों से नहीं। परन्तु बिना साम्प्रदायिक समस्या सुलझाए स्वराज्य दे देना एक ऐसी ग़लती है, जो इन्सान से न होनी चाहिए—विशेषतः इन्सानों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाने वाले अङ्गरेज़ों से तो ऐसी भयानक ग़लती होना असम्भव है। कल को यदि भारत में उपद्रव आरम्भ हो गया और कोई ऊँच-नीच बात हो गई तो दूसरे राष्ट्र अङ्गरेज़ों को ही बेवक़ूफ़ बनाएँगे। उन्हीं को बदनाम करेंगे कि जब ऐसी परिस्थिति थी तो स्वराज्य क्यों दिया। हिन्दुस्तानियों को कोई कुछ न कहेगा। बल्कि कोई ताज्जुब नहीं, यदि हिन्दुस्तानी भी यह कहने लगें कि "इन कमबख़्त अङ्गरेज़ों ने बैठे-बिठाए हम लोगों की जान अज़ाब में डाल दी। अभी स्वराज्य देने की कौन जल्दी पड़ी थी।" उस समय भला बताइए तो सही, अङ्गरेज़ बेचारे क्या उत्तर देंगे! है कोई उत्तर? कोई भी नहीं। एक तो स्वराज्य दें, ऊपर से उल्लू बनें, सो जनाब ऐसा नहीं होगा। अङ्गरेज़ तब तक स्वराज्य न देंगे जब तक उन्हें यह इतमीनान न हो जायगा कि हिन्दू-मुसलमान कभी नहीं लड़ेंगे। हाँ, यदि तबीयत न मानी तो कभी-कभी केवल चपतबाज़ी कर लिया करेंगे। चपतबाज़ी पूर्ण अहिंसात्मक कार्य है। चपतबाज़ी में न किसी की जान जाती है और न शरीर को विशेष कष्ट होता है। बल्कि खोपड़ी की मज़बूती पके हुए बेल की भाँति बढ़ जाती है। और फिर जो परस्पर कभी-कभी चपतबाज़ी भी न करेगा, वह शत्रु का सामना कैसे कर सकेगा? अतएव चपतबाज़ी अवश्य हुआ करे। बल्कि चपतबाज़ी का टूर्नामेण्ट हुआ करे और सबसे अच्छे चपतबाज़ को पारितोषिक दिया जाया करे, तो बहुत ही अच्छा है। यदि ऐसा हो जाय तो अपने राम भी एक सोने का कटोरा इनाम में रख दें। बशर्ते कि वह चपतबाज़ों द्वारा ज़बर्दस्ती न छीन लिया जावे, विशेषतः ऐसे समय में जब कि सोना इतना दुष्प्राप्य हो रहा है। ख़ैर, यदि सोने का कटोरा रखने में ख़तरा होगा, तो चाँदी का रख देंगे। परन्तु रक्खेंगे ज़रूर!

हाँ, तो अङ्गरेज़ लोग ऐसी ग़लती कभी न कभी कदापि न करेंगे। कुछ लोग अङ्गरेज़ों पर यह दोषारोपण करते हैं कि ये लोग स्वराज्य नहीं देना चाहते। सो यह भी अपने राम को यदि सोलह आने नहीं तो साढ़े पन्द्रह आने छः पाई अवश्य ग़लत मालूम होता है। प्रधान मन्त्री श्री० मैकडॉनेल्ड रामजी ने तो स्पष्ट कह दिया है कि वह हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने के लिए उतने ही बेक़रार हैं, जितना कि कोई भला आदमी अपना ऋण चुकाने के लिए होता है। केवल बेक़रार ही नहीं, वह इसमें हिन्दुस्तानियों की सहायता करने के लिए सूट-बूट पहने तैयार हैं। परन्तु—हें-हें-हें! पहले साम्प्रदायिक समस्या, जिसके कि हल होने की उम्मीद क़यामत तक नहीं है, हल हो जाना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि बेचारे रामजी मैकडॉनेल्ड इस समय बहुत ही परेशान हैं। सुना है, बहुधा रात में सोते से चौंक-चौंक पड़ते हैं और कहते हैं कि "हे पिता! भारत को स्वराज्य दिलवा दे! मुझे इतनी बुद्धि दे कि मैं भारत को स्वराज्य दिला सकूँ।" और इस समय तो उन्हें यह सोच खाए जा रहा है कि "यदि आगामी चुनाव में मैं प्रधान मन्त्री न बन सका, तो फिर भारत को स्वराज्य कौन देगा? इसलिए मेरा प्रधान मन्त्री बनना बहुत ही आवश्यक है। इतना आवश्यक कि जिसका कोई हद-हिसाब इस दुनिया के पर्दे पर है ही नहीं।" अतएव अपने राम का यह खुला एलान है कि इङ्गलैण्ड की वह जनता, जो भारत को स्वराज्य-सम्पन्न देखने के लिए मरी जा रही है, वह रामजी मैकडॉनेल्ड की पार्टी को इस प्रकार पार्लामेण्ट में भेजे, जिस प्रकार किसी ज़माने में भारत से फ़िजी तथा मिर्च के देश (मॉरीशस) को कुली भेजे जाते थे। तभी भारत का कल्याण होगा। अन्यथा मुसीबत ही मुसीबत है। भारत-मन्त्री तक ने इस मुसीबत का वर्णन करते हुए कहा है कि "यदि कॉन्फ़्रेंस असफल हुई तो भारत में जो कुछ होगा उसका ध्यान करने से मेरा कलेजा काँपता है।" अवश्य काँपता होगा। इसकी गवाही अपने राम अल्लाह मियाँ के दरबार में देने तक को तैयार हैं। और सच बात तो यह है कि काँपने की बात भी है। ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वराज्य देने के लिए इतने पापड़ बेले हैं कि सारा संसार भी उन्हें हज़म नहीं कर सकता। सत्याग्रह स्थगित कराया, राजबन्दियों को छोड़ा महात्मा जी के नख़रे सहे, इतना ख़र्च उठाया, अपने देशवासियों की खरी-खोटी बातें सहीं। फिर भी स्वराज्य न मिले तो डूब मरने की बात है। किसके लिए? ब्रिटिश सरकार के लिए नहीं, भारतवासियों के लिए! ब्रिटिश सरकार तो अमर है, वह तो समुद्र में भी नहीं डूब सकती।

यह भी अफ़वाह है कि सर आग़ा ख़ाँ, मि० जिन्ना, शौकतअली इत्यादि की चौकड़ी कुछ भारत-विरोधी अङ्गरेज़ों के इशारों पर नाच रही है। और यह उन्हीं की चेष्टा का फल है, जो यह चौकड़ी किसी समझौते पर स्थिर नहीं होती। यह बात भी अपने राम की समझ में नहीं आने पाती। सर आग़ा ख़ाँ बहुधा लोगों की दावतें करते रहते हैं और अपने निवास-स्थान में बुला कर गुपचुप परामर्श करते रहते हैं। बस इसी से लोगों ने यह उड़ा दिया कि मुसलमान प्रतिनिधि भारत-विरोधी अङ्गरेज़ों से मिल गए हैं। किसी को बुला कर उसका सत्कार करना भी पाप हो गया। सर आग़ा ख़ाँ अपने निवास-स्थान में दावतें न दें तो क्या सड़क पर दें। लोगों में इतनी भी समझ नहीं—हद हो गई। सर आग़ा ख़ाँ मालदार आदमी ठहरे। दूसरे इस समय मुसलमानों के प्रतिनिधि बने हुए हैं, उनको अपनी शान के अनुसार काम करना ही पड़ता है। इस पर यह सवाल उठ सकता है कि वह और लोगों को क्यों नहीं बुलाते। सो इसका उत्तर यह है कि जिससे घनिष्ठता होगी उसी को बुलाया जायगा। ऐरे-ग़ैरे नत्थू-ख़ैरों को बुला कर क्या करें। पता नहीं, लोग इन छोटी-छोटी बातों पर कैसे इतने बेढङ्गे अनुमान बाँध लेते हैं। इसका कारण यही मालूम होता है कि हृदय में जब खोट उत्पन्न हो जाता है, तो रस्सी का साँप दिखाई पड़ता है। अपने राम ऐसी बातों के इतने ख़िलाफ़ हैं कि जिसका ठिकाना नहीं। ऐसी बातों पर तो समझदार आदमियों को ध्यान भी न देना चाहिए। ध्यान देने से ख़राबी के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं। उस दिन एक साहब ने अपने राम से पूछा—"यह जो शौकतअली ने कहा है कि 'यदि हिन्दुओं ने मुझसे सुलह न की, तो मैं अङ्गरेज़ों से सुलह कर लूँगा' इसका क्या मतलब है?"

अपने राम ने उत्तर दिया—इसका मतलब यह है कि शौकतअली अङ्गरेज़ों से सुलह करके हिन्दोस्तान पर क़ब्ज़ा कर लेंगे।

उन्होंने घबरा कर पूछा—हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा कर लेंगे—यह कैसे?

"जब कर लेंगे तब देख लीजिएगा।"

"ख़ैर तब तो देखेंगे ही, इस समय आप तो कुछ बताइए।"

"सुनिए। अङ्गरेज़ तो भारत को स्वराज्य देने के लिए दाद तथा खाज के रोगी की भाँति व्याकुल हैं। कहिए हाँ।"

"अच्छा हाँ, आगे चलिए।"

"सो जनाब, जब अङ्गरेज़ देखेंगे कि हिन्दू लोग स्वराज्य नहीं लेते......।"

वह बिगड़ कर बोले—वाह! लेते कैसे नहीं, कोई भकुआ दे भी।

"मतलब यह है कि वह आपस में समझौता नहीं करते।"

"यह भी सरासर ग़लत है, समझौता मुसलमान नहीं करते।"

"हाँ-हाँ, मुसलमान नहीं करते, परन्तु इसमें दोष हिन्दुओं का ही है।"

"किस प्रकार?"

(शेष मैटर ११वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

माँ और मातृभूमि

[डॉक्टर धनीराम प्रेम]

महात्मा गाँधी ने असहयोग की दुन्दुभि बजा दी थी। सारे देश में चारों ओर एक बिजली सी दौड़ गई थी। सन् १९१८ में लोगों को राजनैतिक विषयों पर वार्तालाप करने का भी साहस न होता था। वे किसी नेता की—और नेता भी उन दिनों इने-गिने ही थे—वक्तृता सुनने जाते थे, तो लुक-छिप कर। जो विद्यार्थी थे, वे अपने अध्यापकों से डरते थे; जो क्लर्क थे, वे अपने अफ़सरों से डरते थे; जो दूकानदारी आदि का व्यवसाय करते थे, वे पुलीस से डरते थे। सभाएँ होती थीं, परन्तु बहुत कम। श्रोता आते थे, परन्तु बहुत कम। छोटे-छोटे ग्रामों में तो और भी अधिक आतङ्क छाया हुआ था। लोगों के हृदयों में से स्वाभिमान, अपने अस्तित्व का ज्ञान, अपनी बहिनों और बेटियों की प्रतिष्ठा का विचार, ये सब बिल्कुल ही लुप्त हो गए थे। जो आता, ग्रामीणों पर अपना रोब जमा लेता, जिसकी इच्छा होती, उनसे अनुचित कार्य करा लेता। अधिकांश उनमें से अशिक्षित थे। वे अपना बुरा-भला, अपनी ऊँच-नीच को नहीं समझ सकते थे। जो उनमें से कुछ समझते भी थे,वे अत्याचार सहते-सहते इतने निकम्मे होगए थे कि शिर को उठाते तक न थे। जो उनमें से शिर उठाने का साहस भी करते, वे सर्वशक्तिमयी पुलीस तथा सर्व-शक्तिमान ज़मींदारों द्वारा मार्ग में से हटा दिए जाते थे। ऐसे थे असहयोग के प्रारम्भ होने से कुछ वर्ष पहले के दिन।

कुछ वर्षों में ही उस स्वतन्त्रता के पुजारी ने क्रान्ति ला उपस्थित की थी। असहयोग का शङ्खनाद होते ही सारे देश में जागृति उत्पन्न हो गई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो राष्ट्रीय शक्ति-रूपी 'पॉवर हाउस' फ़ेल हो गया था, परन्तु महात्मा के केन्द्रीय-स्विच के दबाते ही सारे देश में विद्युत-प्रकाश हो गया था। उसे जागृति कहें, उसे आत्मोत्थान कहें, उसे आत्मज्ञान कहें? वह प्रकाश जागृति से भी अधिक जाज्वल्यमान था, आत्मोत्थान से भी अधिक उत्कर्षपूर्ण था, आत्मज्ञान से भी अधिक वास्तविक था। कुछ ही वर्षों में देश की काया-पलट हो गई थी। जिधर भी दृष्टि जाती, नए प्रकाश का चकाचौंध। न उससे नगर ख़ाली थे, न ग्राम। न उससे शिक्षित लोग अलग थे, न अशिक्षित। न उससे हिन्दू वञ्चित थे, न मुसलमान। वह आन्दोलन सर्वव्यापी था; सब उसमें समाए हुए थे, वह सब में समाया हुआ था।

जनता में से वह डर निकल गया था। वे अब न तो ज़मींदार से भय खाते थे, न पुलीस से। उनमें भी इस भाव का उदय हो गया था कि वे भी मनुष्य थे और किसी को उनके ऊपर बेजा अत्याचार करने का अधिकार नहीं था। अब सभाएँ होती थीं, और अगणित। अब नेता चारों ओर मिलते थे, और बहुतायत से। अब श्रोता आते थे और सहस्रों की संख्या में। अब लोग राजनीति की चर्चा करते थे और खुले आम। ये थे असहयोग के दिन।

२

'माँ!'

'बेटा!'

'तुमने गाँधी जी के असहयोग के बारे में सुना है?'

'हाँ!'

'यह भी सुना है कि कितने ही विद्यार्थी अपने-अपने कॉलेज और स्कूल छोड़ रहे हैं?'

'हाँ, पर इससे तुम्हारा अर्थ क्या है विमल?'

'कुछ नहीं, माँ!'

'फिर क्यों ये सब बातें कर रहे हो?'

'इसलिए कि.........'

'हाँ?'

'महात्मा गाँधी ने विद्यार्थियों के नाम यह घोषणा निकाली है कि सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ना पाप है।'

'तो क्या हुआ?'

'हुआ यही कि पाप से बचना चाहिए।'

'कॉलेज छोड़ने की इच्छा है?'

'नहीं, मैं तो कह रहा हूँ। सुना है, कलकत्ते में दो सहस्र विद्यार्थी कॉलेज से निकल आए।'

'हाँ!'

'और माँ, देखा अलीगढ़ कॉलेज तो बिल्कुल बन्द ही हो रहा है। सारे लड़के राष्ट्रीय विद्यालय में आकर पढ़ रहे हैं।'

'यह सब बातें किस लिए हैं?'

'कुछ नहीं, अभी शिवराम पाँडे का लड़का भी कॉलेज छोड़ आया है। हमारी ही क्लास में था। उसका प्रिन्सिपल के नाम पत्र तुम पढ़तीं माँ! ऐसा जोशीला पत्र लिखा है कि उसे पढ़ते ही देशभक्ति उमड़ पड़ती है।'

'अच्छा, ये बातें तो बन्द कर दो। और इतना याद रक्खो कि जब तक सब लड़के कॉलेज छोड़ने को तैयार न हों, तब तक तुम पढ़ने जा रहे हो।'

'पढ़ने तो जा रहा हूँ, लेकिन पाप......'

'लेकिन कुछ नहीं।'

विमल अपनी माता का अकेला पुत्र था। उसकी एक बहिन और थी, जिसका नाम था शारदा। माँ अपने परिश्रम से इन्हें बड़े यत्न से पाल-पोस रही थी। कई वर्ष पूर्व विमल के पिता षड्यन्त्र के अभियोग में गिरफ़्तार कर लिए गए थे। उन्हें दस वर्ष के कारावास का दण्ड मिला था। परन्तु वे जेल की यातनाओं के कारण अधिक काल तक जीवित न रह सके। जिस दिन से विमल के पिता उनके परिवार से अलग कर लिए गए थे, उसी दिन से विमल की माता ने दोनों सन्तानों को उपयोगी नागरिक बनाने के लिए समुचित शिक्षा दी थी। वह हिंसा के विरुद्ध थी। उसे अपने पति पर इतना विश्वास था कि वह उसे सर्वथा निर्दोष समझती थी। इसीलिए उसने कभी भी उससे उन बातों के भेद नहीं पूछे थे, जिनके आधार पर उस पर मुक़दमा चला था। अब जब महात्मा गाँधी ने अपना अहिंसात्मक आन्दोलन जारी किया था तो वह बड़ी प्रसन्न थी। जहाँ तक हो सकता था, वह उसमें भाग लेती थी। विमल को स्वयं उसने कॉलेज छोड़ने का आदेश नहीं दिया था। क्योंकि वह चाहती थी कि विमल स्वयं ही कॉलेज छोड़ने की व्यग्रता दिखाए। वह स्वयं उसी के हृदय में उन भावों की उत्पत्ति कराना चाहती थी, जिन भावों के द्वारा वह विमल को कॉलेज छोड़ने के लिए समझाती। जिस समय विमल ने डरते-डरते कॉलेज छोड़ने की बात कही, तो वह बड़ी प्रसन्न हुई। परन्तु उसने अपनी स्वीकृति न दी। वह देखना चाहती थी कि विमल कितने गहरे में था। वह विमल की दृढ़ता की परीक्षा करना चाहती थी।

दूसरे दिन विमल कॉलेज की ओर चला। मार्ग में भीड़ बहुत हो रही थी। वह साइकिल उस भीड़ में से नहीं चला सकता था, अतः वह साइकिल से उतर कर पैदल चलने लगा।

'आज यहाँ क्या है?'—उसने एक व्यक्ति से पूछा।

'एक सभा है।'

'कैसी सभा?'

'गाँधी जी की।'

'तो क्या गाँधी जी यहाँ स्वयं ही आ रहे हैं?'

'नहीं, उनके एक चेला का आज मुक़दमा है, उसी की सभा है।'

विमल की दृष्टि में वह व्यक्ति, जो जेल जाने के लिए तैयार था, एक देवता मालूम होने लगा। उसको देखने की उसे उतनी ही उत्कण्ठा हुई, जितनी भगवान के मन्दिर के पट खुलने पर भक्तगणों को भगवान के दर्शनों की होती है। वह साइकिल एक पास की दूकान पर रख कर सभा देखने के लिए चल पड़ा। सहस्रों का जमघट था। उस नगर से जेल जाने के लिए वह पहला ही व्यक्ति था, अतः सभी नगर-निवासी उसके दर्शनों के लिए और उस पर फूल बरसा कर अपनी देशभक्ति का परिचय देने के लिए आए थे। बड़ी कठिनता से विमल को एक ऐसा स्थान मिला, जहाँ से वह सभा के मञ्च पर का सारा दृश्य देख सकता था।

पहले सभापति का भाषण प्रारम्भ हुआ :—

'भाइयो, यह आपको विदित ही है कि महात्मा गाँधी ने अपने अहिंसात्मक असहयोग के युद्ध को छेड़ कर घर-घर में स्वतन्त्रता देवी का सन्देश पहुँचा दिया है। भारतवासी आज नींद से जग गए हैं और वे अपने अधिकारों को प्राप्त करने के निमित्त प्रत्येक प्रकार का कष्ट सहन करने के लिए तैयार हैं। स्वतन्त्रता देवी के खप्पर में आज हमारे देशवासी प्रसन्नता से अपना बलिदान चढ़ा रहे हैं। हमें गर्व है कि हम भी अपने नगर का सब से पहला और एक बहुमूल्य बलिदान उस खप्पर में डाल रहे हैं। मुझे आशा है कि यह बलिदान हमारे नगर ही नहीं, बल्कि प्रान्त के लिए भी एक आदर्श के रूप में काम करेगा।'

जब सभा समाप्त होने लगी और सब लोग कचहरी जाने के लिए तैयारी करने लगे, तब वह युवक उठा। उसका मुख-मण्डल प्रसन्नता से दमक रहा था। वह जेल जाने के लिए उतना ही प्रसन्न था, जितना कि एक निर्धन कुबेर के भाण्डार को पाकर होता है या वह, जिसको अचानक किसी घुड़दौड़ में लाखों रुपया मिल जाता है। वह विमल के ही समवयस्क था। विमल के शरीर में उसे देख कर एक विद्युत् की धारा सी दौड़ गई। क्या वह भी इसी प्रकार किसी दिन बलिदान चढ़ाता होगा और उसका मुख-मण्डल भी इसी प्रकार

ही दमक रहा होगा! इतने ही में शान्ति हुई। नवयुवक विदाई की एक कविता बना कर लाया था, उसीको वह करुण तथा वीर-रस मिश्रित स्वर में गाने लगा :—

भाई, विदा करो जाने दो।
तपस्वियों की तपोभूमि का दर्शन कर आने दो!
जहाँ कृष्ण ने जन्म लिया था,
मान कंस का चूर्ण किया था,
वहीं भेज दासत्व-पाश माता का कटवाने दो!
जहाँ तिलक भगवान रहे थे,
करते गीता-गान रहे थे,
उसी पुण्य-भू में तसले पर राष्ट्र-गीत गाने दो!
गाँधी, मोती, 'लाल' जहाँ हैं,
अली, दास, आज़ाद जहाँ हैं,
सनद देश-सेवा की जाकर मुझे वहीं पाने दो!
पारतन्त्र्य माँ का हरने को,
मणिमय मुकुट शीश धरने को,
मेरा भी बलिदान तनिक वेदी पर चढ़ जाने दो!

विमल ने यह गाना सुना, उसके सारे शरीर में सनसनी पैदा हो गई। वह गाना नहीं था, उसके लिए क्षेत्र में आने का आह्वान था। क्या ऐसी दशा में वह कॉलेज जा सकता था? वह कॉलेज की ओर चला, परन्तु उसके पैर आगे बढ़ने के लिए तैयार न थे। जब सारा देश मर-मिटने के लिए आगे आ रहा था, जब पतित से पतित व्यक्ति भी माता की वेदी पर भेंट चढ़ाने के लिए क्षेत्र में आ रहे थे, तो क्या उसका यह कर्तव्य था कि वह फिर 'गुलामी के मन्दिर' में उसी प्रकार जाता रहे? उसके हृदय में विद्रोह मचने लगा, सड़क के किनारे पड़े हुए एक पत्थर पर वह बैठ गया और सोचने लगा। अन्त में उसने अपना निश्चय बना लिया—देश की सेवा, स्वतन्त्रता का युद्ध, यही उसका कर्तव्य होगा। वह कॉलेज न जाकर घर की ओर चल दिया।

घर में शारदा बैठी हुई थी। माँ वहाँ नहीं थी। शारदा ने विमल को देखते ही कहा—भैया, क्या कॉलेज नहीं गए?

'नहीं शारदा!'

'क्यों?'

'अब नहीं जाऊँगा।'

'छोड़ दिया?'

'हाँ, इस बार ऐसी ही बात है।'

'माँ के समझाने के बाद भी?'

'तुम समझ सकती हो शारदा! हम लोगों का जन्म इसलिए नहीं हुआ कि इस प्रकार अपना समय नष्ट करते फिरें, जबकि देश अपने दासत्व का पाश तोड़ने के लिए प्रयत्न कर रहा है। हम नवयुवकों पर ही तो देश की आशाएँ हैं। क्या हम कॉलेजों में जाकर देश की कुछ सहायता कर सकते हैं। वहाँ जाकर तो हम दासता के बन्धनों को और भी सुदृढ़ बनाने में सहायक होंगे। मुझसे यह सहन न हो सकेगा शारदा! आज मैंने देखा है, एक ऐसा दृश्य, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। साधारण नवयुवक देश के लिए हँसते हुए त्याग कर रहे हैं। क्या हम शिक्षित लोग उनसे आधा त्याग भी नहीं कर सकते?'

'अब क्या करोगे?'

'ग्रामों में जाकर महात्मा गाँधी का सन्देश लोगों को सुनाऊँगा।'

इतने ही में माँ बाहर से आ गई।

'यहाँ?'—विमल को देखते ही उन्होंने पूछा।

'हाँ माँ, मैं कॉलेज नहीं गया।'

'नहीं?'

'जाही नहीं सका।'

'क्यों?'

'अब मैं कभी न जाऊँगा।'

'यह तुमने मेरी बिना आज्ञा के क्यों किया?'

'लेकिन तुम इस काम से अप्रसन्न नहीं हो सकतीं। तुम्हारे हृदय में जो घाव है, वैसे ही अनेकों घावों को भरने के लिए यह युद्ध छिड़ा है। जिस शासन-प्रणाली ने पिता जी को इस प्रकार नारकीय यातनाएँ देकर मार डाला, उसी शासन-प्रणाली को नष्ट करने के लिए यह आन्दोलन छिड़ा है। क्या तुम अपने पुत्र को उसी आन्दोलन में भाग लेने से रोकोगी?'

'आन्दोलन में भाग लेने का दृढ़ विचार है?'

'सुदृढ़।'

'कभी विचलित तो न होगे?'

'कभी नहीं।'

'तुम्हारे पीछे एक नाम है, तुम्हारे पिता का नाम। उसकी मुझे चिन्ता है, यदि उस नाम की रक्षा कर सको, यदि उस नाम पर कभी कलङ्क न लगाओ, तो मैं तुम्हें आन्दोलन में भाग लेने की सहर्ष आज्ञा दे दूँगी।'

'माँ!'

'मैं ठीक कहती हूँ, विमल।'

'मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि पिता के नाम पर कोई धब्बा न आने पावेगा।'

'युद्ध में जा सकते हो।'

विमल माँ से बच्चे की भाँति लिपट गया। माँ की आँखों से हठात् दो आँसू निकल आए, जो उसने शीघ्रता से अपने अञ्चल से पोंछ लिए।

३

दो दिन के अनन्तर ही विमल कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर में बैठा था। वह शिक्षित था, उत्साही था; अतः उसकी गणना स्थानीय कार्यकर्ताओं में होने लगी। विमल को नगर में रह कर [illegible] करने में इतना आनन्द न आता था। वह चाहता था कुछ वास्तविक कार्य करना, और वास्तविक कार्य केवल ग्रामों में ही हो सकता था। ये ग्रामीण थे, जिन्हें शिक्षित व्यक्तियों की सहायता की आवश्यकता थी। ये ग्रामीण थे, जिन पर सब से अधिक अत्याचार हो रहे थे। अतः विमल ने अपना डेरा एक छोटी सी तहसील के सदर मुक़ाम में जाकर डाला।

यह तहसील बड़ी बीहड़ तहसील थी। केवल एक पक्की सड़क थी, जो तहसील के सदर मुक़ाम को ज़िले के सदर मुक़ाम से मिलाती थी। कोई बड़ी नदी नहीं थी, केवल एक छोटी नदी थी, जो तहसील की छाती को चीरती हुई चली आती थी। भूमि अधिकतर ऊसर थी या रेतीली थी। गर्मी के दिनों में ऊपर से सूर्य अग्नि बरसाता था, नीचे से पृथ्वी आग उगलती थी। चारों ओर रेत उड़ता था। मार्ग में चलने के लिए छोटी-छोटी पगडण्डियाँ थीं, उन पर भी मनों रेत रहता था। वृक्षों का दर्शन होना भी दुर्लभ था। यदि कुछ थे, तो वे काँटों के छोटे-छोटे पौधे, जो इधर-उधर कभी-कभी उग आते थे।

तहसील का सदर मुक़ाम भी तहसील के ही अनुरूप था। छोटा सा स्थान था। न तो उसे क़स्बा कह सकते थे और न उसे ग्राम ही कह सकते थे। तहसील, स्कूल आदि की इमारतों के कारण तो वह क़स्बा कहा जा सकता था; यदि वे इमारतें उसमें से निकाल दी जातीं, तो वह एक ग्राम से भी कुछ कम ही रह जाता। इधर-उधर कुछ मड़ैयाँ थीं और तहसील के पास कुछ कच्चे मकान। जो व्यक्ति धनिक समझे जाते थे, उनके मकानों पर क़लई हो रही थी, वह भी केवल बाहरी भाग पर। भीतर से वही कच्ची ईंटें और वही गोबर की लिपाई। एक दूकान थी उस स्थान पर। वही हलवाई था, वही किराने वाला, वही पनवाड़ी और वही बजाज़ और वही कभी-कभी हकीम का काम भी करता था। जो वस्तुएँ उसके यहाँ नहीं मिलती थीं, वे और कहीं नहीं मिल सकती थीं और उनके लिए पेठ की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जो महीने में दो बार लगती थी।

उन दिनों मोटर-लॉरी की सवारी इतनी प्रचलित नहीं हुई थी, अतः विमल एक इक्के में चढ़ कर अपने शहर से चला। पाँच घण्टे के सफ़र के बाद वह उस स्थान पर पहुँचा। रात हो गई थी। गलियों में लालटेनें नहीं थीं, अतः घोर अन्धकार का राज्य था। उन्हें और भी अँधेरा बनाने के लिए कृष्ण-पक्ष सहायता के लिए आ गया था। बड़ी कठिनता के बाद विमल को लाला जी की दूकान मिली।

'पूड़ियाँ हैं आपके यहाँ?'—उसने दूकानदार से पूछा।

'नहीं तो।'

'बना नहीं सकते?'

'कितनी चाहिए?'

'यही पाव भर!'

'पाव भर के लिए भट्टी नहीं चढ़ाई जाती!'

'अकेले आदमी के लिए और क्या मन भर की आवश्यकता पड़ेगी?'

'तो हम क्या करें?'

'कोई परदेशी आता है तो तुम्हारे यहाँ यही उत्तर मिलता है?'

'परदेशी घर से बाँध कर क्यों न चले, रात-बिरात हम कहाँ तक बनावें।'

विमल को इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पहले कभी शहर से बाहर नहीं निकला था। उसने कोई ग्राम नहीं देखा था। वह समझता था कि ग्रामवाले बड़े भलेमानुस तथा अतिथि का सत्कार करने वाले होते हैं। यह व्यवहार उसकी समझ ही में न आया।

'और कुछ है?'—उसने दूकानदार से पूछा।

'पेड़े हैं।'

'खोए के या खाँड़ के?'

'खा के देख लो न।'

विमल ने पेड़े का एक टुकड़ा मुख में रक्खा। ऐसा पेड़ा कभी उसने जन्म भर न खाया था। खोए का नाम तक उसमें नहीं था। न मालूम कितने दिनों का बना हुआ रक्खा था, उसमें पुरानेपन की बू आ रही थी। विमल को भूख लगी थी, परन्तु यह पेड़ा उसके मुख में नहीं चल सकता था।

'कुछ और भी है?'

'और तो चना-गुड़ हैं।'

'लाओ वही दो।'

आध पाव चना और एक पैसे का गुड़ लेकर विमल ने अपनी क्षुधा शान्त की और पानी पीकर एक चौपाल में बिछे हुए तख़्त पर पड़ रहा।

प्रातःकाल विमल उठा। उठते ही वह रात्रि की सारी घटनाओं पर विचार करता रहा। अब उसे इस तहसील में कार्य करने की और भी आवश्यकता प्रतीत हुई। वह जानता था कि, और यदि पहले नहीं जानता था, तो अब जान गया था कि वह तहसील ज़िले में सब से अधिक पिछड़ी हुई थी, यहाँ तक कि वहाँ कॉङ्ग्रेस कमिटी तक भी न थी। जितनी ही बीहड़ तहसील थी, उतनी ही बीहड़ वहाँ की प्रजा भी थी। उसका एक कारण यह भी था कि उस तहसील में कई ज़मींदार थे, जो उतने ही बीहड़ थे। उन्हीं के कारण असहयोग का नाद वहाँ सुनाई नहीं देता था। महात्मा की पुकार वहाँ तक नहीं पहुँच पाई थी। इन सब विपत्तियों को सामने देख कर भी विमल विचलित न हुआ। उसने निश्चय कर लिया कि वह अवश्य ही वहाँ पर राष्ट्रीयता का

(शेष मैटर १७वें पेज के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

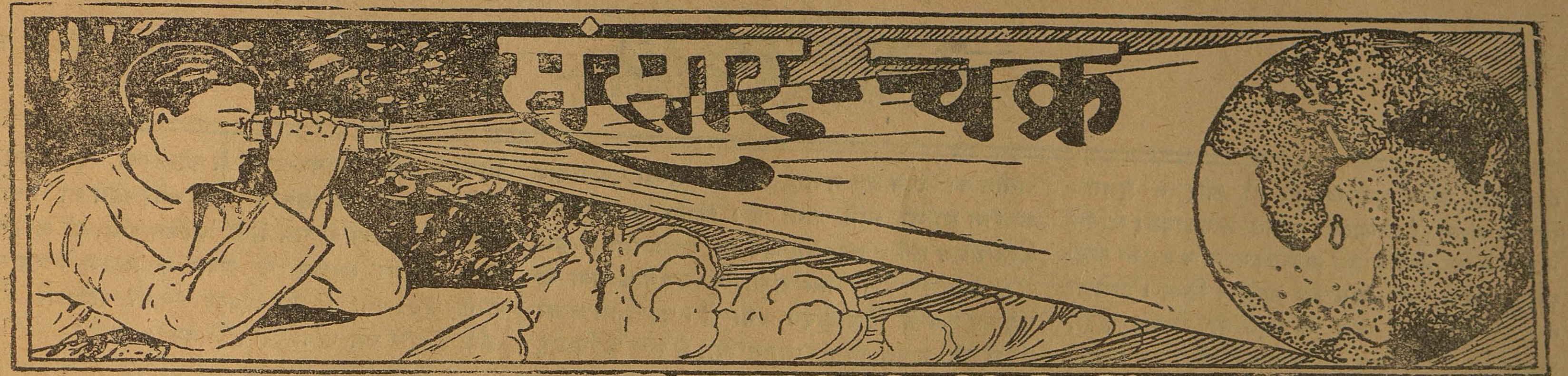

वर्त्तमान रूस

[डॉक्टर मथुरालाल जी शर्मा, एम० ए०, डि-लिट्]

गत शताब्दी के आरम्भ में महर्षि कार्ल मार्क्स ने एक ऐसे प्रजातन्त्र राज्य की कल्पना की थी, जहाँ जनता में वैषम्य का अभाव हो, जहाँ जीवन-निर्वाह के साधन सबको सुलभ हों, जहाँ व्यक्तिवाद समष्टिवाद में विलीन हो गया हो और जहाँ सामाजिक नियन्त्रण का अन्त कर दिया गया हो। मार्क्स ने इस कल्पना की सृष्टि पूँजी और श्रम के सङ्घर्ष के आधार पर की थी। उसकी धारणा थी कि वैज्ञानिक उन्नति और कल-कारख़ानों की वृद्धि के कारण जब सम्पत्ति सिमट-सिमट कर संसार के अल्पसंख्यक लोगों के पास आ जायगी और श्रमजीवी संसार अनुपयुक्त वेतन के कारण जीवन-निर्वाह की कठिनाइयों से तङ्ग आ जायगा, तब पूँजी और श्रम में घोर सङ्घर्ष होगा और अन्त में श्रमजीवियों की विजय होकर शासन-सूत्र उन लोगों के हाथ में आ जाएगा। श्रमजीवी लोग शासन का सञ्चालन इस प्रकार करेंगे, जिससे उद्योग-धन्धों का लाभ सबको समान मिले और पूँजीपतियों का हिस्सा राज्य की सम्पत्ति समझा जावे। राज्य इस सम्पत्ति को जनता के हितार्थ शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में व्यय करे। इस प्रकार पूँजीपतियों का अन्त हो जाने से वैषम्य के अन्त की और उद्योग-धन्धों के लाभ से जन-कल्याण सम्पादन की कल्पना की गई थी। थोड़े शब्दों में यही साम्यवादी शासन का आदर्श था, जो कार्ल मार्क्स ने संसार के सामने रक्खा था।

कार्ल मार्क्स की यह भयावह भविष्य-वाणी सुन कर संसार के शासक और पूँजीपति सतर्क हो गए और इधर श्रमजीवी लोग भी सङ्गठित होकर भावी सुख का स्वप्न देखने लगे। शासकों और पूँजीपतियों ने १९वीं शताब्दी में अनेक ऐसी चालों से काम लिया, जिसके कारण न तो श्रमजीवियों की दशा ही भली प्रकार सुधरी और न उनमें भारी प्रक्षोभ ही उत्पन्न हुआ। जब श्रमजीवी लोग हड़तालें करके पूँजीपतियों को वेतन-वृद्धि के लिए विवश करने का यत्न करते थे, तब सेठ लोग कारख़ानों को कुछ दिन बन्द रख कर मज़दूरों के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दिया करते थे, जिससे वे लोग भूखों मरने लगते थे और अन्त में दण्ड भोग कर पुनः काम करने लगते थे। कभी-कभी राज्य से पूँजीपतियों की सहायता की जाती थी और हड़तालियों को पुलिस तथा सेना द्वारा काम पर वापस भेजा जाता था। पूँजीपतियों की रक्षा करना शासन का कर्तव्य माना जाता था। जब स्थिति क़ाबू से बाहर जान पड़ती थी, तो मज़दूरों का कुछ वेतन बढ़ा कर उनके आँसू पोंछ दिए जाते थे और शासक लोग उनके काम की अवधि निश्चित करके तथा स्त्री-बच्चों के लिए कुछ नियम बना कर उनको सन्तुष्ट कर दिया करते थे। इस प्रकार की दुरङ्गी चालों के कारण पूँजी और श्रम के सङ्घर्ष ने गत शताब्दी में भयङ्कर रूप धारण नहीं किया और ऐसा मालूम होने लगा था कि कार्ल मार्क्स की कल्पना शायद कभी सत्य सिद्ध न हो सकेगी।

इस शताब्दी के आरम्भ में जो यूरोपीय महासमर हुआ, उसने अनेक असम्भव बातों को सम्भव कर दिया और अनेक कल्पनाओं को वास्तविकता का रूप दे दिया। संसार की अनेक परम्परागत रूढ़ियाँ महासमर के चक्र में पड़ कर चूर-चूर हो गईं, अनेक नरेशों के वंशक्रमानुगत राजमुकुट छिन गए, कई देशों की दासत्व-शृङ्खलाएँ झड़ पड़ीं, और संसार के सामाजिक सङ्गठन, धार्मिक विचार, विवाह-संस्था तथा शासन-सिद्धान्तों में भारी उथल-पुथल पैदा हो गई। इस विश्व-व्यापी घोर परिवर्तन ने कार्ल मार्क्स की कल्पना को सम्भव कर दिया और रूस में साम्यवादी सरकार स्थापित हो गई। महासमर के समय युयुत्सु सरकारें गला फाड़-फाड़ कर यह घोषणा किया करती थीं कि युद्ध का ध्येय परतन्त्र जातियों को स्वतन्त्र करना और जगत में न्याय का डङ्का बजाना है। परन्तु सूक्ष्म-द्रष्टाओं को शीघ्र ही पता लग गया था कि ये निस्सार बातें हैं और रङ्गरूट तथा धन एकत्र करने की चालें हैं। सन् १९१८ के आरम्भ में प्रत्येक देश में युद्ध के विपरीत आन्दोलन होने लगा था और लोग कहने लगे थे कि महत्वाकांक्षी उन्मत्त शासक साम्राज्यवाद तथा अपनी व्यक्तिगत तरङ्गों की वेदी पर देश के नवयुवकों का बलिदान कर रहे हैं, विजय या पराजय से जनता का कोई सम्बन्ध नहीं है। भीषण नर-संहार और अर्थ-नाश से लोग इतने त्रस्त हो गए थे कि सर्वत्र युद्ध बन्द करने के लिए पुकार सुनाई देती थी। यह आन्दोलन जर्मनी में और विशेषकर रूस में लेनिन के नेतृत्व के कारण इतना प्रबल हो गया था कि सन् १९१७ में ही वहाँ रङ्गरूटों की भरती बन्द हो गई, रूसी सेना ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया, श्रमजीवियों का प्रभुत्व हो गया, ज़ार को सिंहासन से उतार कर सपरिवार गोली से मार डाला गया और साम्यवादी शासन स्थापित हो गया। रूस में ज़ारशाही के विपरीत कई वर्षों से आन्दोलन जारी था और स्वतन्त्रता के उपासक अनेक यन्त्रणाएँ भोग चुके थे। स्वयं लेनिन कई बार देश-निर्वासन का दण्ड पा चुका था और अन्य कई देशभक्त फाँसी पर लटकाए जा चुके थे। महासमर न होता तो भी रूस एक दिन स्वतन्त्र अवश्य होता, परन्तु इसके कारण जन-जागृति, आन्दोलन, असन्तोष और प्रक्षोभ को सहायता मिल गई और जो घटनाएँ एक अरसे में क्रमशः घटित होतीं, वे बात की बात में घट गईं। जब ज़ार को ताज छीन कर गोली का शिकार बना दिया और शाही महलों में प्रजा-परिषद का अधिवेशन हुआ, तो साम्राज्यवादी सरकारों के कान खड़े हो गए और इस नवीन विचार-धारा, नवीन शासन-प्रणाली और नवीन समाज-रचना के प्रवाह को रोकने के लिए कई सरकारों ने सङ्गठित होकर तैयारियाँ कीं। रूस को तीन साल तक निरन्तर युद्ध करना पड़ा और अश्रुतपूर्व घोर आर्थिक सङ्कट तथा दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ा। परन्तु उसके योग्य नेता लेनिन ने धैर्य नहीं छोड़ा। अन्त में साम्राज्यवादी मित्र हार खाकर बैठ गए और साम्यवादी शासन की जड़ जम गई। जब से यह शासन स्थापित हुआ है, तब से अब तक क्या यूरोप, क्या अमेरिका—सर्वत्र सरकारें इसका विरोध करती रही हैं। वर्षों तक ग्रेट-ब्रिटेन ने इसको सरकार ही नहीं माना और अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने भी यही नीति जारी रक्खी। परन्तु यूरोप के सङ्गठित यत्न से भी रूस का बाल बाँका नहीं हुआ। राष्ट्र-सङ्घ में रूस को शामिल नहीं किया गया, इसकी भी उसने चिन्ता न की। कई देशों ने रूसियों को प्लेग के कीड़ों के समान समझ कर अपने देशों के बाहर किया, इससे भी रूस नहीं घबराया। फलतः अब उसकी संसार में तूती बोलने लगी है। साम्यवादी विचारों ने नगर-नगर और गाँव-गाँव में प्रवेश कर लिया है। साम्यवादी सङ्घ भी कहीं प्रकट और कहीं गुप्त—सर्वत्र स्थापित हो गए हैं और संसार के श्रमजीवियों तथा कृषकों में एक विशेष जीवन का सञ्चार हो रहा है। जर्मनी, पोलैण्ड, लुथवेनिया, फ़िनलैण्ड आदि राज्यों में साम्यवादियों की संख्या बढ़ती जाती है। स्पेन में साम्यवादी सरकार स्थापित हो गई है और चीन में साम्यवादी-दल सरकार से सतत युद्ध कर रहा है। रूसी सरकार को चाहे कई देश स्वीकार न करें, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि रूस की इस समय संसार में धाक है। उसका समाज, उसका शासन, उसका साहित्य और उसके उद्योग-धन्धे इस समय संसार के ध्यान को आकर्षित किए हुए हैं। संसार के राजनीतिज्ञ रूस की चालों को सतर्क होकर देखा करते हैं, उसके शासन-विधान का वे लोग चाहे विरोध करें, परन्तु उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। राजनीति-शास्त्र के पण्डित रूस के शासन-विधान का ज्ञान प्राप्त किए बिना पण्डित ही नहीं माने जाते। साम्यवाद का अध्ययन इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति का अङ्ग बन गया है। लेनिन, ट्राटस्की, बुख़ारिन, स्टेलिन और टॉल्सटॉय संसार के इने-गिने पुरुषों में माने जाते हैं। वास्तव में वर्तमान शताब्दी के इतिहास में यूरोपीय महासमर और रूस का साम्यवादी शासन, ये दो अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन दो घटनाओं को सर्वांश में समझे बिना वर्तमान जगत की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति समझ में नहीं आ सकती।

लेनिन कार्ल मार्क्स का परम भक्त था। मॉर्क्स के विचार उसके विचार थे और उसके ग्रन्थ लेनिन का दैनिक स्वाध्याय था। ज़ार की नृशंसता और पड़ोस में जर्मन-कैसर की निरङ्कुशता देख कर उसकी दृढ़ धारणा हो गई थी कि राज-संस्था संसार के लिए व्याधि है। अपने विचार और प्रचार के कारण उसको कई बार देश-निर्वासित होकर साइबेरिया के जङ्गलों में जब अपने दिन काटने पड़े, तब उसका यह अटल विश्वास हो गया कि राजवंश का अन्त हुए बिना संसार में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती और जनता सुखी नहीं हो सकती। उत्पीड़ित जनता की निरन्तर यन्त्रणाएँ देखते-देखते जीवन की कोमलता, धर्म की सान्त्वना और समाज की मर्यादा को वह हानिकर समझने लगा। इसलिए लेनिन ने एक ऐसे संसार की कल्पना की, जिसमें न राजा के अत्याचारों की सम्भावना हो और न धर्माचार्यों के दबाव की गुञ्जायश; जहाँ न परम्परागत

सामाजिक रूढ़ियों की अड़चनें हों और न पुरातन निष्फल संस्थाओं के कारण उन्नति में रुकावट। लेनिन ने रूस में एक नया आदर्श खड़ा किया और उसका अनुसरण करने के लिए संसार को आह्वान किया। विरोधी संसार ने इस नवीन जगत के उदय को रोकना चाहा, उसको कुचलने के लिए भरसक प्रयत्न किए। युद्ध-प्रचार, कूटनीति आदि सब अस्त्रों का प्रयोग किया गया, लेकिन लेनिन का अदम्य साहस और दुर्दम्य-धैर्य नहीं दब सका। रूस में नवीन संसार का उदय हो ही गया, और नई शासन-प्रणाली स्थापित हो गई। इस समय जो देश साम्राज्यवादी हैं या जो निरङ्कुश सत्ता से आक्रान्त हैं, उनमें भी साम्यवादियों का अभाव नहीं है। सोशलिस्ट शासन वर्तमान मज़दूर और किसानों के नेताओं का सुख-स्वप्न है और सुन्दर ध्येय है। वे समता स्थापना के भावों से प्रेरित होकर अनेक प्रकार की आपदाओं को सहन कर रहे हैं और अपने ध्येय की वेदी पर प्राण न्योछावर कर रहे हैं।

रूस की वर्तमान सरकार सोशलिस्ट सरकार है और स्टेलिन उसका प्रधान है। सोशलिस्ट शासन का प्रधान उद्देश्य सम्पूर्ण जनता के लिए उपयुक्त भोजन, उपयुक्त शिक्षा और उपयुक्त वस्त्र तथा निवास प्राप्त हो सकें, ऐसी स्थिति उत्पन्न करना है। लेनिन के साम्यवाद के बाद मध्य यूरोप में जितनी नई सरकारें स्थापित हुईं, उन सबका भी उद्देश्य यही स्थिर किया गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सोशलिस्ट सरकार प्रत्येक व्यक्ति से स्वस्थावस्था में प्रतिदिन निश्चित समय तक अनिवार्य रूप से काम करवाती है। उसका कहना है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति सरकार से यह आशा करता है कि उसकी जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए सरकार अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करे, तो सरकार भी उससे यह आशा करती है कि वह प्रति दिन काम करे और सुस्त न रहे।

रूस ने ज़ार का अन्त कर दिया और उसके वंश को निःशेष करके भविष्य में उसके वंशजों द्वारा राज्य-स्थापना की आशङ्का को असम्भव बना दिया। इस समय रूस में सम्राट या जागीरदार की चर्चा कहीं भी सुनाई नहीं देती। ज़ार के ज़माने के बड़े-बड़े सत्ताधारी जागीरदार बोलशेविक राज्य-क्रान्ति की प्रबल धारा में पड़ कर बह गए। और जो बचे, उन्होंने नवीन परिस्थिति का अनुसरण करके अपने प्राण और वंश की रक्षा की। इस समय रूस में सम्राट का नाम लेना पाप है और सोवियट सरकार की निन्दा करना राज-विद्रोह। जिस साहित्य में साम्राज्यवाद की प्रशंसा हो, राजा की आवश्यकता प्रतिपादित की गई हो और प्रजातन्त्र शासन की मीमांसा की गई हो, ऐसा साहित्य रूस में तत्काल ज़ब्त हो जाता है और लेखकों को भारी दण्ड दिया जाता है। रूसी शासन का ध्येय स्वतन्त्रता है, लेकिन इस विषय में विचार-स्वातन्त्र्य वहाँ नहीं है। पाठशालाओं में बच्चों को आरम्भ से यही शिक्षा दी जाती है कि राजा एक अत्यन्त हानिकर संस्था है। राजा के ही कारण संसार में समय-समय पर घोर रक्तपात हुए हैं, जनता की उन्नति रुकी है, और विस्तृत देशों को नारकीय यन्त्रणाएँ भोगनी पड़ी हैं। इस प्रकार रूसी बच्चे जन्म से ही बोलशेविक संस्कारों में पल कर राजसत्ता के कट्टर विरोधी बन गए हैं। रूस के देहातों में मैजिक लालटेनों, रेडियो और उपदेशकों द्वारा राज-संस्था की हानि और सोशलिस्ट शासन के लाभ बतलाए जाते हैं। प्रतिवर्ष सोवियट शासन की वर्ष-गाँठ मनाई जाती है, जिसमें किसान-राज्य की महत्ता और अन्य प्रकार के शासन की हीनता पर व्याख्यान होते हैं और अन्य कई प्रकार के प्रदर्शनों द्वारा जनता में सोवियट शासन की परमावश्यकता का प्रचार किया जाता है। वर्तमान रूस में राजा अतीत का विषय बन गया है और राज-संस्था एक प्रकार का रोग समझा जाने लगा है। क्रान्ति का सूत्रपात करते समय लेनिन का जो ध्येय था, वह वर्तमान रूस में पूरा हो गया है। जिस संसार की उसने कल्पना की थी, वह रूस में दिखाई देने लगा है। वह जिस प्रकार की सन्तान उत्पन्न करना चाहता था, वे रूस में दिखाई देने लगी हैं।

इसी प्रकार रूस ने धर्म-संस्थाओं पर भी क्रूर और निर्मम आक्रमण कर दिया है। लेनिन धर्म को मानव-समाज के लिए एक अत्यन्त हानिकर संस्था समझता था। उसकी धारणा थी कि धर्म-प्रचार की सहायता से शासक लोग प्रजा को भ्रान्त करके उसकी दासत्व-शृङ्खलाओं को सुदृढ़ बनाते हैं। नेपोलियन बोनापार्ट भी धर्म-प्रचार को राज्य-सत्ता का सहायक मानता था और वह कहा करता था कि जो लोग पुरोहितों से डरने के आदी हो जाते हैं, उनका राज्याधिकारियों से भयभीत होना स्वाभाविक बात है। इस विषय की सत्यता या असत्यता पर विस्तारपूर्वक लिखना हम अप्रासङ्गिक समझते हैं। प्रस्तुत प्रसङ्ग केवल इतना ही है कि लेनिन का मत नेपोलियन के मत से मिलता-जुलता था, इसलिए ज़ार-वंश को नष्ट करने के साथ ही साथ उसने पुरोहितों और पुजारियों के वंश को भी शक्तिहीन और निःशेष करने का प्रयत्न करना आरम्भ किया। लेनिन के जीवन-काल में यह महान कार्य समाप्त नहीं हो सका, लेकिन ट्राटस्की और स्टेलिन ने इससे आशातीत सफलता प्राप्त की है। इस समय रूस में धर्म-प्रचार करना या धर्म का अनुसरण करना, यहाँ तक कि गुप्त या प्रकट रूप से धार्मिक गीत गाना भी वहाँ जुर्म माना जाता है। अनेक भव्य और विशाल गिरजाघर सोवियट सरकार ने बन्द करा दिए हैं या उनमें सरकारी या जनता के दफ़्तर हैं; कई पाठशालाओं का काम देते हैं और कइयों में सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित हो गए हैं। घोर दुख से दुखी होकर और भारी सङ्कट से घिर कर भी यदि कोई परमात्मा को स्मरण करके शान्ति-लाभ करना चाहता है तो सोवियट सरकार उसको अपराधी मानती है। गिरजाघर के घण्टों का नाद, ऑरगन की ध्वनि और प्रार्थना का स्वर रूस में लेलिनग्राड के ब्लाडीवास्टक तक कहीं भी सुनाई नहीं देते। अनेक भगवन्निष्ठ ईसाई, जिनको धर्म का त्याग सहन नहीं हो सकता था, देश छोड़ कर विदेशों में जा बसे हैं या जेलों में ही अपना जीवन काट रहे हैं। धर्म के विरुद्ध क़ानून बनाते समय लेनिन को सब से अधिक भय की आशङ्का रशियन तुर्किस्तान में थी, परन्तु सोवियट सरकार ने मुसलमानों के विरोध को बड़ी दृढ़ता और वीरता के साथ शान्त कर दिया! पुराने मुल्लाओं ने जनता को बहुत भड़काया, जिहाद के लिए अल्लाह के भक्तों को आह्वान किया, लेकिन रूसी सरकार अपनी निर्धारित नीति से विचलित नहीं हुई। सैकड़ों आदमियों को जेल जाना पड़ा, कितनों ही को फाँसी पर चढ़ना पड़ा, कितनों की सम्पत्ति ज़ब्त हुई, पर सरकार ने दमन-नीति शिथिल नहीं की। आख़िर विरोध शान्त हो गया और रूसी तुर्किस्तान धर्म से मुक्त हो गया। इस समय ख़ीवा, बुख़ारा, ताशकन्द तथा समरक़न्द आदि मुस्लिम सभ्यता के प्राचीन नगरों में क़ुरान पढ़ना, पढ़ाना, लिखना या बेचना भारी अपराध माना जाता है। जिन मसजिदों में सहस्रों मुसलमान नित्य नमाज़ पढ़ते थे और जिनके व्योम-चुम्बी मीनारों से प्रातः और सायं मुल्लाओं की अज़ान-ध्वनि लोगों को सचेत करती थी, उन्हीं मसजिदों में अब न मुल्लाओं का पता है और न अज़ान की ध्वनि है; न वहाँ नमाज़ का पता है, न क़ुरान की चर्चा। अन्त में इसका क्या परिणाम होगा, नास्तिकता का लोगों के नैतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और धार्मिक भावों से शून्य मानव-हृदयों में कोमलता, दया और दाक्षिण्य आदि वाञ्छनीय गुण बने रहेंगे या नहीं, यह अभी भविष्य के गर्भ में है, लेकिन अभी तो सम्पूर्ण रूस सोवियट सरकार के प्रचार के कारण विश्वास करने लग गया है कि ईश्वर स्वार्थी राजाओं की सृष्टि है और धर्म पापी पुरोहितों का जाल है।

राजनैतिक और धार्मिक रूढ़ियों का अन्त करके ही सोवियट नेताओं को सन्तोष नहीं हुआ। वास्तव में केवल इन दोनों अङ्गों में क्रान्ति पैदा करने से संसार का स्वरूप नहीं बदल सकता था। परम्परागत सामाजिक रूढ़ियाँ भी ऐसी सुदृढ़ शृङ्खलाएँ हैं कि उनमें जकड़ा हुआ मानव-समाज इधर-उधर नहीं हिल सकता। सामाजिक अत्याचार राजनैतिक अत्याचारों से भी अधिक कठोर और भयावह होते हैं। इन अचल रूढ़ियों की भीषणता को लेनिन स्वयं अपने और अपने देश के जीवन में अनुभव कर चुका था, इसलिए उसके क्रान्ति के प्रोग्राम में सामाजिक उथल-पुथल भी एक आवश्यक कार्य था। यों तो राजनैतिक और धार्मिक क्रान्ति का होना अवश्यम्भावी था, लेकिन यदि सरकार सामाजिक रूढ़ियों की रक्षा करने का प्रयत्न करती या सुधारकों पर सामाजिक कट्टरों का दबाव बनाए रखती, तो रूस का समाज इतने थोड़े अरसे में इतना नहीं बदल सकता था। इस समय सम्पूर्ण यूरोप का समाज भी और का और ही हो गया है, लेकिन रूस के समाज के तो प्रत्येक अङ्ग में घोर परिवर्तन हो चला है। परिवार का सङ्गठन, पिता-पुत्र का सम्बन्ध, विवाह-संस्था, मेल-मिलाप, दावतों में व्यवहार, खेल-कूद, निवास-शैली, यात्रा, पोशाक, भोजनालय, होटलों का प्रबन्ध, जिधर देखो उधर ही परिवर्तन है, और वह ऐसा परिवर्तन है, जो कालचक्र के कारण नहीं, किन्तु राजनैतिक परिस्थिति और सरकार के प्रयत्न के कारण हुआ है। रूस के बच्चे अब देश के और सरकार के बच्चे माने जाते हैं; माता पिताओं के नहीं। माता-पिता कारख़ानों में मज़दूरी करते हैं, जिस समय स्त्री गर्भवती होती है, उसको प्रसव से पर्याप्त समय पूर्व छुट्टी मिल जाती है। प्रसव-गृह सरकार की ओर से बने हुए हैं; वहाँ बच्चा पैदा होता है, और वहीं अनेक धात्रियाँ सरकार की ओर से बच्चों का पालन और पोषण करने के लिए नियत हैं। प्रसव के बाद माता चाहे तो समय-समय पर बच्चे से मिल सकती है और वह चाहे तो उससे अपना सम्बन्ध भी तोड़ सकती है। पालन-पोषण का सम्पूर्ण भार सरकार पर होता है। सरकार ही इन बच्चों को अपने देश की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा देती है और सोवियट संस्कारों से इनको परिपुष्ट करती है। इस प्रकार पले हुए बच्चों को अपने माता-पिता से कोई स्नेह नहीं होता और न उनको किसी घर से मोह होता है। सम्पूर्ण देश उनका घर है और सोवियट सरकार उनकी माँ-बाप है। उसकी रक्षा करना उनका कर्तव्य हो जाता है और यही उनको जन्म से सिखाया जाता है। इन बच्चों का जीवन सैनिक ढङ्ग से सधा हुआ, धार्मिक भावों से शून्य और पारिवारिक ममता से मुक्त होता है। वे मैशीनों की भाँति सोवियट सरकार की आज्ञा मानते हैं और उसकी जय मनाते हैं। इस प्रकार के पालन-पोषण के कारण रूस की नई सन्तानों का व्यक्तित्व नष्ट होता जाता है। इनका सोना-बैठना, काम करना, चलना-फिरना, सब नम्बरों द्वारा होता है। धात्री-गृहों में बच्चों की देख-रेख नम्बरों से होती है। डॉक्टरनियाँ जब उनको सँभालती हैं, तो नम्बर से सँभालती हैं, पाठशाला में उनको नम्बरों से पुकारा जाता है और परेड के मैदान में उनसे नम्बरों से काम लिया जाता है। अवस्था के अनुकूल बच्चों के समूह बना दिए जाते हैं और जो कुछ काम लिया जाता

है, सब समूह से लिया जाता है। साम्यवादी जुलूसों में रूसी लड़के और लड़कियाँ सोशलिस्ट गाने गाते हुए और लेनिन की जय बोलते हुए निकलते हैं। इन लोगों क शिक्षा, रहन-सहन और व्यवसाय, सब में साम्यवाद है। साम्यवाद के अतिरिक्त और दूसरे ध्येय की ये लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। आरम्भ से ही प्रयत्न इस बात का किया जाता है कि सोशलिज़्म के अतिरिक्त और किसी ओर इन लोगों की मानसिक रुचि ही न हो, और ये लोग अन्य प्रकार के सामाजिक सङ्गठन की कल्पना भी न कर सकें।

इस प्रकार के ढङ्ग में पले हुए बच्चे पारिवारिक बन्धनों को क्या जान सकते हैं? न इन लोगों को माँ-बाप से स्नेह है, न पारिवारिक अभ्युदय की चिन्ता है, इनका ध्येय है सोशलिज़्म की सफलता और इनका उपास्य है कर्मवीर लेनिन। रूस की जनता ने ईसा और अन्य ईसाई सन्तों की उपासना करना त्याग दिया है और धर्म को तिलाञ्जलि दे दी है, परन्तु वास्तव में रूसी लोगों ने परम्परागत सन्तों की उपासना को छोड़ कर लेनिन की उपासना आरम्भ कर दी है। अनेक सन्तों की क़ब्रों को रूस में ढहा दिया गया है और अनेक सुन्दर गिरजाघरों के दर्वाज़े बन्द कर दिए गए हैं, लेकिन फिर भी यह कहा जा सकता है कि रूसियों के हृदय-तल में से उपासना की प्रवृत्ति अभी निकली नहीं है। सन्तों की उपासना छोड़ दी गई है, परन्तु लेनिन की उपासना ने उसका स्थान ले लिया है। बात यह है कि अपनी शक्ति को परिमित समझना और किसी अतीत तथा अज्ञेय शक्ति के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करना और उसकी उपासना करना मानव-हृदय का नैसर्गिक गुण है। जो लोग निर्गुण ब्रह्म की उपासना नहीं करते, वे सगुण ब्रह्म को स्थूल पदार्थों के स्वरूप में पूजते हैं और जो लोग इससे भी नीचे हैं, वे मनुष्य-पूजा करते हैं। किसी को भी पूजे, पर मनुष्य का

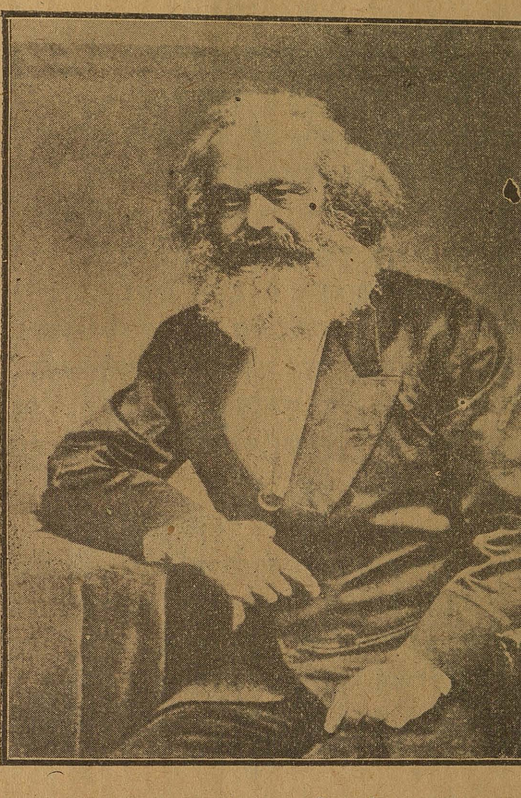

साम्यवाद के आचार्य कॉर्ल

हृदय पूजेगा अवश्य। जब रूसी सरकार ने परम्परागत धार्मिक उपासना को जुर्म बना दिया, तो मानव-हृदय उधर से हट कर एक ऐसे पदार्थ की खोज करने लगा, जिसकी आराधना, प्रशंसा और स्मृति में उसको अभीष्ट शान्ति प्राप्त हो सके। यही कारण है कि लेनिन रूसियों का आराध्य देव बन गया है। लेनिन के सिद्धान्त रूसियों का दर्शन-शास्त्र हैं, उसके शब्द उनकी गीता है और उसका कार्य-क्रम उनके जीवन का उद्देश्य है। आबाल-वृद्ध सभी स्त्री-पुरुष लेनिन के उद्देश्यों की पूर्ति में लगे हुए हैं। चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, सबको यही धुन है कि सोशलिज़्म की संसार में विजय हो और इसका जगत में प्रचार हो। लेनिन और सोशलिज़्म रूसियों का 'राम नाम' और संग्राम के समय उनका यह 'हर-हर महादेव' है। यों तो सम्पूर्ण यूरोप की महिलाएँ संसार के अन्य भू-खण्डों की स्त्रियों से अधिक स्वतन्त्र हैं, लेकिन वर्तमान रूस की स्त्रियाँ उनसे भी आगे बढ़ी हुई हैं; जीवन के किसी भी विभाग में अब वे पुरुषों का मुक़ाबिला कर सकती हैं। और परम्परागत स्त्री-पुरुष के भेद को शीघ्रता के साथ मिटाया जा रहा है। कारख़ानों में, दफ़्तरों में और पाठशाला, अस्पताल आदि संस्थाओं में तो स्त्रियाँ पुरुषों के साथ काम करती ही हैं, लेकिन अब सैनिक शिक्षा भी स्त्रियों के लिए अनिवार्य कर दी गई है। खुले हुए विस्तृत मैदानों में हज़ारों रूसी नवयुवतियाँ फ़ौजी क़वायद करती हैं और सैनिक शिक्षा ग्रहण करती हैं। यहाँ तक कि रूसी तुर्किस्तान में भी, जहाँ की मुस्लिम जनता कल-परसों तक पर्दे को धर्म का एक अङ्ग मानती थी, वहाँ भी मुस्लिम युवतियाँ मैदानों में क़वायद करती हैं और फ़ीलडिङ्ग तथा फ़ायरिङ्ग सीखती हैं। प्रचार-कार्य में रूसी सरकार स्त्रियों से बहुत काम लेती है। सरकारी धात्री-गृहों में पली हुई लड़कियाँ पारिवारिक स्नेह और नियन्त्रण से शून्य होती ही हैं। परम्परागत नैतिकता और चरित्र को वर्तमान रूस में एक अवाञ्छनीय रूढ़ि माना जाता है। इसलिए वहाँ की वर्तमान युवतियों को अपने विवाह-सम्बन्ध की पवित्रता आदि के विषय में कोई चिन्ता नहीं रहती। विषय-भोग और सन्तान उत्पन्न करना इतनी ही साधारण बात मानी जाती है कि जैसे स्नान करना या भोजन करना। अमेरिका के अन्दर युवक और युवतियों में विवाह सम्बन्धी जो उच्छृङ्खलता बढ़ती जाती है, उसके विषय में जस्टिस लिण्डसे की सम्मति को पढ़ कर जगत हैरान हो गया था, लेकिन वर्तमान रूस में अब विषयावेश की शान्ति के लिए यथानियम विवाह आवश्यक नहीं माना जाता। जो युवक और युवतियाँ कारख़ानों में साथ-साथ काम करती हैं, वे सप्ताह के अन्त में दो दिन के लिए विवाहित दम्पति की भाँति अपनी छुट्टी मना कर पुनः सप्ताह के आरम्भ में अपना काम शुरू कर देते हैं और यह कोई आवश्यक नहीं है कि उनका प्रेम सम्बन्ध बना ही रहे। दूसरे सप्ताह के अन्त में वही युवक दूसरी युवती के साथ अपनी छुट्टी मनाता है और वह युवती भी दूसरे युवक को अपना साथी बना लेती है। इस प्रकार के सम्बन्धों से जो सन्तानें उत्पन्न होती हैं, उनका पालन-पोषण कैसे होता है, इसका उल्लेख हम पहिले ही कर चुके हैं।

वर्तमान रूस एक अत्यन्त नया जगत है और उसके जीवन के प्रत्येक अङ्ग में घोर क्रान्ति है। राजनैतिक, सामाजिक या धार्मिक किसी भी प्रकार की पुरातन परम्परा को रूस वाञ्छनीय नहीं मानता। वहाँ लेनिन के ध्येय और आकांक्षाओं के अनुकूल एक अभूत पूर्व जगत की रचना की गई है, जिसमें न पुराना समाज है, न पुराना धर्म; न पहले की भाँति राजा है और न प्रजा; न वैसे बाप हैं न माँ और न सन्तान, न पुरानी कामनाएँ और न अभिलाषाएँ। इस समय सबके जीवन का ध्येय और साम्यवादी शासन का उद्देश्य है, पञ्चवर्षीय आयोजन को चार ही वर्ष में पूरा करना। रूस एक मैशीनमय देश बन रहा है। जिधर देखो उधर शीघ्रता और विपुलता के साथ जीवनोपयोगी पदार्थ उत्पन्न होते हुए दिखाई देते हैं। यूरोप ही नहीं, सारे संसार के बाज़ार रूस की सस्ती चीज़ों से पटते जाते हैं, जिनके कारण आर्थिक जगत में अनेक प्रकार की जटिल समस्याएँ उपस्थित हो रही हैं। वर्तमान रूस में थिएटर, सिनेमा, नाच, खेल, सर्वत्र पञ्चवर्षीय आयोजन की बात है और उसीसे सम्बन्ध रखने वाले कारण और परिणामों का प्रदर्शन किया जाता है। गलियों में

(शेष मैटर १८वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

माँ और मातृभूमि

(१४वें पृष्ठ का शेषांश)

प्रचार करेगा, उन ग्रामीणों में स्वतन्त्रता के भावों का उदय करेगा।

उसने एक छोटी-सी कोठरी किराए पर ली और अपने ही हाथ से भोजन बनाने की व्यवस्था की। दोपहर होने पर वह ग्रामों की ओर को निकल चला। सवारी कोई मिलती नहीं थी, क्योंकि सड़कें ही नहीं थीं। ग्राम एक-दूसरे से दूर-दूर पर थे। उनको मिलाने वाली वही रेतीली पगडण्डियाँ थीं। विमल उन्हीं में से एक पर अपना खादी का कुर्ता पहने और गाँधी-टोपी लगाए चल दिया। खाने के लिए साथ में उसने गुड़ और चने ले लिए थे। जून के दिन थे। चारों ओर आग बरस रही थी, लुएँ चल रही थीं, रेता उड़ रहा था, परन्तु विमल चलता जा रहा था। वह तो तपस्या का प्रारम्भ ही था, अभी न जाने कितनी बड़ी और अधिक कष्टकर तपस्याएँ करनी पड़ें। चलते-चलते सामने एक नदी पड़ी। नदी की चौड़ाई अधिक नहीं थी, न गहराई अधिक थी; परन्तु पानी का वेग अधिक था। विमल को किसी न किसी भाँति नदी को पार करना ही था, क्योंकि उधर कोई पुल नहीं था। न रेलें थीं, न पक्की सड़कें; पुलों की ही क्या आवश्यकता थी?

विमल ने धोती ऊपर को चढ़ा ली। गुड़ और चने की पोटली को शिर से बाँध लिया। जूतों के विषय में उसके सामने समस्या आ गई। उनको किस प्रकार बिना भिगोए ले जाया जाय। अन्त में उसे एक युक्ति सूझ पड़ी। उसने सोचा कि जूतों को उस पार फेंक क्यों न दिया जाय, ताकि उस पार जाकर उन्हें उठा लिया जाय। उसने उस उलझन से दूर होने का यही एक उपाय देखा। पहला जूता फेंका, वह उस पार जा पड़ा। दूसरा जूता फेंका, निशाना चूक गया। जूता पार न जाकर नदी में ही गिर पड़ा। शायद नदी में उस ओर देखने पर मिल जाय, यह विचार कर विमल एक लकड़ी की सहायता से नदी में घुस गया। उस ओर पहुँचने पर नदी में ठहरना कठिन हो गया, क्योंकि पानी का वेग बहुत था। वह किनारे पर निकल गया। अब क्या करे? एक ही उपाय था, नङ्गे पैरों चलना। वह चल दिया। नीचे बालू जल रही थी, परन्तु उसने चिन्ता न की। कष्ट को चुपचाप सहन करता हुआ वह धीरे-धीरे सामने के ग्राम की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँच तो गया, परन्तु पैरों पर बारह बज रहे थे। दोनों पैर बड़े-बड़े फफोलों से भर गए थे। हाँ, वह कष्टकर तपस्या की साधना की प्रथम सोपान थी, और विमल ने उसे वीरतापूर्वक समाप्त कर दिया था। उसके सामने वह एक परीक्षा थी। उसका पहला पर्चा अच्छा हुआ था। विमल अब दूसरे पर्चों की प्रतीक्षा में था।

(क्रमशः)

* * *

महात्मा गाँधी का अर्थशास्त्र

[श्री० ब्योहार राजेन्द्रसिंह जी, भूतपूर्व एम० एल० सी०]

आज पूँजीवाद तथा यन्त्रवाद संसार के ग़रीबों को पीस कर थोड़े से लोगों को अधिक धनवान बना रहा है। यन्त्रवाद गृह-उद्योगों को नष्ट कर, बड़ी-बड़ी मिलें और कारख़ाने बना कर पूँजी को एक जगह इकट्ठा कर रहा है। पश्चिमी पूँजीवाद तथा यन्त्रवाद के कुफल यूरोप भोग रहा है और उसकी हवा भारत में भी आने लगी है। लोगों ने उसीके आधार पर देश की आर्थिक उन्नति करना चाहा, किन्तु गाँधी जी ने इसका विरोध किया। क्योंकि पश्चिमी साधन भारत के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते। यहाँ का अर्थशास्त्र यूरोप के अर्थशास्त्र से भिन्न है। ग्रामों का अर्थशास्त्र शहरों से भिन्न है। भारत ग्रामों तथा गृह-उद्योगों का देश है। अतः उन्हीं की उन्नति से यहाँ की आर्थिक दशा सुधर सकती है। गृह-उद्योगों को मिटा कर मिलें क़ायम करने का प्रयत्न हमारे ग्रामों को मिटा कर ही छोड़ेगा। अधिकांश जनता ग्रामीण है और वह अपनी मूलाधार कृषि को छोड़ कर शहरों की मिलों में काम नहीं कर सकती। अतः उनके घरों ही में रोज़गार पहुँचाना होगा। गाँधी जी ने इस बात का भी अनुभव किया कि केवल कृषि से किसानों की माली हालत नहीं सुधर सकती। क्योंकि वे साल में चार मास बेकार रहते हैं। इस ज़बरदस्ती की बेकारी को दूर करना ही गाँधी जी का प्रधान प्रयत्न रहा है और इसके लिए उन्होंने ऐसा रोज़गार ढूढ़ा कि वह घर बैठे उन्हें काम दे सके। अन्त में उन्हें चर्ख़ा तथा करघा ही ऐसा धन्धा मिला, जोकि सरलता से गाँव-गाँव पहुँचाया जा सकता है।

रेनी .फुलप मिलर नामक एक जर्मन लेखक ने अपनी पुस्तक 'लेनिन एण्ड गाँधी' (Lenin and Gandhi) में तो यहाँ तक कहा है कि "महात्मा गाँधी ने लेनिन की अपेक्षा कहीं अधिक कार्ल मार्क्स की आर्थिक नीति को समझा है और उसके अनुसार उन्होंने अपने देश को औद्योगिकवाद के कुफलों से बचा लिया। लेनिन का रूस में औद्योगिक क्रान्ति करने का प्रयत्न एक लम्बी छलाँग मारने के समान था, किन्तु गाँधी ने देश की प्राचीन कला तथा उद्योग का पुनरुद्धार कर अपने को लेनिन की अपेक्षा कहीं अधिक क्रियात्मक राजनीतिज्ञ होना सिद्ध कर दिया है। रूस के क्रान्तिकारी औद्योगिक परिवर्तन ने देश की आर्थिक स्थिति पर कृत्रिम रूप से आघात किया। किन्तु खादी का आन्दोलन भारतीय आर्थिक स्थिति के अधिक अनुकूल सिद्ध हुआ है।"

ऑस्ट्रिया के प्रसिद्ध साम्यवादी श्री० जूलियस ब्रेनथाल (Julius Braunthal) ने 'महात्मा गाँधी एण्ड इण्डियन रिवोल्यूशन' (Mahatma Gandhi and Indian Revolution) नामक पुस्तक में गाँधी जी तथा विलायत के मज़दूर नेता मि० नेड ल्यूड (Mr. Ned Lud) के सन् १८११ के आन्दोलन से तुलना कर यह बतलाया है कि नेड ल्यूड के आर्थिक आन्दोलन के कारण बहुत .खूनी क्रान्तियाँ हुईं। किन्तु गाँधी के आन्दोलन ने शान्ति स्थापना की तथा सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से गाँधी ने पूँजीवाद के विरुद्ध जो आन्दोलन किया, वह ल्यूड के आन्दोलन की अपेक्षा कहीं अधिक क्रान्तिकारी है। आगे चल कर उस लेखक ने बतलाया है कि गाँधी जी ने पूँजीवाद तथा यन्त्रवाद का इसीलिए विरोध किया, क्योंकि उसके द्वारा भारतीय गृह-उद्योगों का नाश किया जा रहा था। उन्होंने इस प्रकार केवल मैशीन के दुरुपयोग का घोर विरोध किया है। गाँधी जी ने स्वयं कहा है कि "मैं मैशीनों का विरोध नहीं कर रहा हूँ, बल्कि इस पागलपन का विरोधी हूँ कि मैशीनों से मज़दूरी बच सकती है। मैं मनुष्य-समाज के सब मनुष्यों को काम देना चाहता हूँ—थोड़े से लोगों के लिए बहुतों को भूखों नहीं मारना चाहता।"

उनकी इस नीति का बहुत विरोध भी हुआ, किन्तु १० वर्षों के अनुभव से सब लोगों ने गाँधी जी के तर्क को स्वीकार कर लिया। वे मैशीनों के विरोधी समझे जाते हैं, किन्तु वे वैसे नहीं हैं। वे मैशीनों को केवल मनुष्य की सेवा में लगाना चाहते हैं, न कि मनुष्य को मैशीन की ग़ुलामी में। आजकल अधिकांश मनुष्य मैशीनों के ग़ुलाम हैं और थोड़े से आदमी उसके मालिक हैं। गाँधी जी सभी को मैशीन का मालिक बनाना चाहते हैं। मैशीनों से समय तथा मज़दूरी बचती है, पर मनुष्य और मज़दूर मरते हैं, किन्तु चर्ख़े से मनुष्यों की रक्षा होती है। कार्ल मार्क्स ने स्वयं इस मैशीनवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई है—"मैशीन काम के घण्टों को कम करती है, पर काम करने के दिन को लम्बा करती है। वह काम हल्का करती है, पर इसका प्रयोग मज़दूरों पर कार्य-भार बढ़ाने में होता है। वह मनुष्य को मैशीन पर विजय देती है, पर बहुत लोगों को उसका ग़ुलाम बनाती है। यूरोप की समस्या है थोड़े समय में अधिक काम करना, किन्तु भारत की समस्या है बेकार आदमियों को अधिक काम देना। समय बचाने वाली मैशीनों से बेकारी अधिकाधिक बढ़ती है।" गाँधी जी कहते हैं कि भारत के बेकारों को दान नहीं चाहिए—काम चाहिए, और चर्ख़ा ही वह काम दे सकता है। रिचर्ड ग्रेग सरीखे विद्वानों ने खद्दर के अर्थशास्त्र का आधुनिक विज्ञान तथा इञ्जीनियरिङ्ग की दृष्टि से समर्थन किया है और बतलाया है कि भारत के किसान ही ऐसी कलें हैं, जिन्हें काम में लगाना आवश्यक है।

इस प्रकार गाँधी जी ने अर्थशास्त्र को भी ग़रीबों के लिए उपयोग किया, जिससे थोड़ी पूँजी तथा अधिक फ़ालतू समय रखने वाले लोग भी लाभ उठा सकें। उसमें पूँजीवाद के अत्याचार तथा यन्त्रवाद के दुष्परिणाम दोनों ही मिट जावेंगे।

ग़रीबों का दुख दूर करने के लिए संसार में और भी प्रयत्न हुए हैं। रूस में पूँजीवाद को जड़ से उखाड़ने, सारी सम्पत्ति को राष्ट्रीय सम्पत्ति बना देने तथा सम्पत्ति का बराबर विभाजन करने का जो प्रयत्न चल रहा है, उससे बहुत-कुछ सफलता मिली है, किन्तु उसे गाँधी जी भारत के लिए उपयुक्त नहीं समझते। न वे पूँजी वालों ही को मिटाना चाहते हैं और न ज़मींदारों ही को। व्यक्तिगत सम्पत्ति की भावना को मनुष्य के हृदय से बिल्कुल निकाल देने को वे असम्भव मानते हैं। सब सम्पत्ति का बराबर-बराबर बँटवारा न कभी संसार में हुआ है, न हो सकता है। उनका आदर्श केवल यह है कि सम्पत्ति का उपयोग ग़रीबों की सेवा में किया जावे, जैसा कि प्राचीन भारत में होता रहा है। ग़रीबों और अमीरों के बीच में जो इतनी अधिक विषमता है, वह न रहनी चाहिए। एक तरफ़ तो घनघोर ग़रीबी और दूसरी ओर कुबेर सरीखी अटूट धन-राशि—यह विषमता दूर होनी चाहिए। सभी मनुष्य यदि बराबर धनवान नहीं

"जुबली-नम्बर"

[कविवर 'बिस्मिल' इलाहाबादी]

देखने वाले तआज्जुब में बहुत रहते हैं,
ख़ूब अख़बार है, अख़बार इसे कहते हैं!
हर बड़े-छोटे को मरग़ूब है "जुबली-नम्बर",
मुख़्तसिर यह, कि बहुत .खूब है "जुबली-नम्बर"!
आइना बन के चमकती है सफ़ाई इसकी,
और सोने पे सुहागा है छपाई इसकी!
है सजावट में अजब रङ्ग का "जुबली-नम्बर",
हमने देखा नहीं, इस ढङ्ग का "जुबली-नम्बर"!
क्यों निछावर न हो .कुर्बान न क्यों दिल हो जाय?
कोई देखे इसे 'बिस्मिल' तो वह बिस्मिल हो जाय!

* * *

[श्री० 'शातिर' इलाहाबादी]

"जुबली-नम्बर" तो ऐसा निकला, कि देखते ही बनता है। किस-किस चीज़ की तारीफ़ की जाय, हर पहलू से लाजवाब है। मैं तो सिर्फ़ इतना ही कह के चुप हूँ :—

'जो बात की .खुदा की क़सम लाजवाब की'

* * *

किन्तु कोई सज्जन मँगाने के लिए ऑर्डर न दें। क्योंकि एक भी कॉपी शेष नहीं बची है।

—व्यवस्थापक 'भविष्य'

वर्त्तमान रूस

(१७वें पृष्ठ का शेषांश)

और सड़कों पर जगह-जगह दीवारों पर मोटे अक्षरों में छपे हुए अख़बार चिपके रहते हैं, जिनमें पञ्चवर्षीय आयोजन का परिणाम, सोशलिस्ट शासन की उत्तमता और धर्म की अनावश्यकता और उसके कुपरिणाम आदि विषयक समाचार होते हैं। ये पत्र सरकार की ओर से प्रकाशित होते हैं और सरकार ही इनको इस प्रकार मुफ़्त वितरण करती है।

वर्तमान रूस में शरीर की महत्ता है और आत्मा की उपेक्षा। खाने-पीने और पहनने के पदार्थों की विपुलता होती जाती है और आध्यात्मिक प्यास को बुझाने के साधनों का अभाव कर दिया गया है। ज़ार की नृशंसता से देश मुक्त है, परन्तु लोगों में विचार-स्वातन्त्र्य नहीं है, सोवियट सरकार के शासन, ध्येय और उद्देश्य की कोई मीमांसा नहीं हो सकती और इस विषय में कोई अपने स्वतन्त्र विचार प्रकट नहीं कर सकता। इसका क्या परिणाम होगा, यह भविष्य के गर्भ में है। अभी तो वर्तमान रूस संसार में खलबली उत्पन्न कर रहा है और सब राजनीतिज्ञ दिग्गजों की आँखें उसकी ओर लगी हुई हैं।

* * *

हो सकते तो कम से कम उन्हें भरपेट खाने, बदन पर कपड़ा पहिनने, साफ़-सुथरे मकानों में रहने तथा उत्सव या बीमारी के समय के लिए काफ़ी सम्पत्ति होना चाहिए।

इस स्थिति को लाने के लिए महात्मा जी केवल एक उपाय बतलाते हैं, वह यह कि प्रत्येक मनुष्य अपनी ज़रूरत से अधिक सामग्री जोड़ने को हराम समझे। उनके अस्तेय-व्रत के अनुसार अपनी कम से कम आवश्यकताओं से अधिक चीज़ें रखना चोरी करने के बराबर है। इससे भी आगे बढ़ कर उनका एक और व्रत अपरिग्रह है, जिसके अनुसार स्वेच्छा से ग़रीबी स्वीकार करना सब से ऊँचा आदर्श माना जाता है। गाँधी जी चाहते हैं कि हम ग़रीबों के समान जीवन बिता कर उनसे अपने को एकाकार कर दें, तभी ग़रीबी की समस्या दूर हो सकती है। अभी विलायत के गिरजाघर में भाषण देते समय भी गाँधी जी ने यही उपदेश दिया है कि वे स्वेच्छा से ग़रीबी स्वीकार करें। यही महात्मा गाँधी जी का संसार को सब से महान सन्देश है, जिसे वे अपने नित्य-जीवन में आचरण करके आदर्श रूप से बतला रहे हैं।

एक दूसरा व्रत है, जिसे उन्होंने सप्त महाव्रतों में स्थान दिया है—वह व्रत है स्वदेशी। शायद ऐसा और कोई शब्द नहीं है, जिसका इतना अधिक अनर्थ किया गया हो जितना कि स्वदेशी का। किन्तु शायद ही कोई शब्द इसके समान सीधा तथा सरल हो। गाँधी जी स्वदेशी का अर्थ करते हैं कि जो हमारा पड़ोसी बना सकता है, उसे हम दूर लेने को न जावें; क्योंकि पहिले अपने निकटतम पड़ोसी की सहायता करना हमारा प्रधान धर्म है। इसके अनुसार पहिले नगर या ग्राम, फिर ज़िला, फिर प्रान्त, उसके बाद देश तथा अन्त में सारे संसार की सेवा करना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। पड़ोसी को भूखों मरने देकर दूर के मनुष्यों को खिलाना कभी धर्म नहीं हो सकता। इस भावना में विदेशियों आदि के प्रति घृणा की कोई भावना नहीं है, जैसा कि समझा जाता है। यह तत्व स्वदेशी उद्योगों की उन्नति के लिए मूलमन्त्र के समान है। ग्रामों को स्वावलम्बी बनाने का यह एकमात्र उपाय है। यदि हमारे नगर या ग्राम का निवासी दूसरी जगह के कारीगर की अपेक्षा ख़राब वस्तुएँ भी बनाता है, तो भी हमारा कर्तव्य है कि पहिले उसी की वस्तुएँ ख़रीदें।

इस स्वदेशी की धार्मिक भावना तथा पश्चिम के के बॉयकाट शब्द में कोई साम्य नहीं है। स्वदेशी घृणा या बदले की भावना से प्रेरित नहीं, बल्कि ग़रीबों के हित के उच्चादर्श से प्रेरित है। यद्यपि इसका फल विदेशी बहिष्कार होता है, किन्तु उद्देश्य स्वदेशी की उन्नति ही है। इसका प्रयोग राजनीतिक अस्त्र के रूप में भी किया गया है, क्योंकि आर्थिक तथा राजनीतिक बातें इतनी अधिक सम्बद्ध हो गई हैं कि उनको अलग-अलग करना असम्भव हो गया है।

महात्मा जी ने स्वदेशी तथा खादी को धार्मिक रूप दे दिया है। वे चर्ख़े से बढ़ कर ईश्वर की पूजा दूसरा उपाय नहीं समझते, क्योंकि इसके द्वारा ग़रीबों की सहायत े सकती है। वे इसे भारत की स्वाधीनता—आर्थिक तथा राजनीतिक स्वराज्य—का साधन मान सब से श्रेष्ठ कार्य समझते हैं। एक अङ्गरेज़ ने जब उनसे पूछा कि आपके जीवन का सब से बड़ा उद्देश्य क्या है, तो उन्होंने कहा—"यदि मैं भारत के प्रत्येक घर में चर्ख़े को पहुँचा सका तो मैं अपने जीवन-कार्य से सन्तुष्ट हो जाऊँगा। मेरे दूसरे आदर्श ईश्वर की कृपा से दूसरे जन्म में पूरे हो जावेंगे।"

* * *

महात्मा गाँधी के सामने—

जॉनबुल के सामने—

कविता-कुञ्ज

माँझी से—

[श्री० कमलाप्रसाद जी]

उस पार ! जहाँ मानस में
हो चोट नहीं तीरों की,
नीरों की जहाँ न आज्ञा
ले घूँट नयन-नीरों को।
हो शान्त स्निग्ध जगती-तल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

उस पार ! जहाँ मानस में—
लेकर न व्यथा की ढेरी,
रो ज़ार-ज़ार अबलागण
हों ज़ाराज्ञा की चेरी—
कर कोमल तन को चलदल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

उस पार ! जहाँ मानस में
चिन्ताएँ व्यथित धँसी हों,
लाखों अनाथ हो जाएँ,
उनकी बस एक हँसी हो।
दीखे न कहीं ऐसा स्थल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

मानस न जहाँ फट जाए
उनके छोटे खेलों में,
युवकों का मदमय यौवन
बीते न फ़क़त जेलों में
हो जहाँ न दग्ध द्रुगञ्चल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

हो जहाँ न सुकुमारों पर
सबलों की सीनाज़ोरी,
नित ताण्डव-काण्ड दिखाए
फाँसी की जहाँ न डोरी।
हो शस्य-श्यामला अविकल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

दिल दहल उठे शिशुओं का
काँपें अबलागण थर-थर,
जगती की नादिरशाही
कर पुञ्जीभूत जहाँ पर—
खेले न खेल कोपानल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

क्या कहा ? कौन सा दुख है ?
क्यों है जग से घबड़ाया ?
माँझी, तू पागल भी है !
यह सब कैसो है माया ?
जो देख रहा तू प्रति पल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

क्या ? वंश ? कौन सा घर है ?
फिर कथा ? अरे अज्ञानी,
मेरी है कथा व्यथा ही
है मेरी अजब कहानी।
क्यों बहक रहा ओ पागल !
उस पार मुझे भी ले चल॥

ससीम के पार—

[श्री० लक्ष्मीनारायण जी गुप्त]

जिनमें महासिन्धु के उर के—
छिपे छलकते से अवसाद—
उन घन-खण्डों को अनन्त में,
बिखराता है मन्द-बतास।

विश्वोच्छ्वास बढ़े आँधी से,
टकराते हैं वहीं समीप।
ओहो ! बुझने ही वाले हैं—
यह झिलमिल तारों के दीप।

फेनायित मदिरा ले आता—
किसकी आज्ञा से बातास ?
प्राणों में मतवाला होकर—
अब सोता है बेसुध हास।

पतिता का श्रम-बिन्दु ढुलक कर—
आगत-निर्यातन का गान।
सुना पराग-कणों को, क्योंकर—
किस अणु में है अन्तर्धान।

अखिल प्रेम थे वक्षस्थल पर—
कर अपने स्वरूप का ध्यान।
वह विषाद हाँ, माँग रहा था—
उस सुदूर से कुछ आदान।

मैं यह सोच रहा था त्योंही—
वह चढ़ मेघों पर अविराम।
कहने लगा किलक कर कुछ-कुछ,
चमकी चपला सतत ललाम।

× × ×

"वज्र का सुन मधुमय सङ्गीत,
विसर्जन का लेकर उपहार !
क्षुद्रताओं का कर-कर अन्त,
चला अब मैं ससीम के पार !!"

तू सुन कर क्या कर लेगा
तेरा है कौन ठिकाना
उर थाम सकेगा क्या तू
मैं ? मैं तो हूँ दीवाना !
यह है कठोर वक्षस्थल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

सुनना ही है तो सुन ले
हिमश्रृङ्ग ! काँप मत जाना,
तारागण ! इधर न देखो
री वायु ! इधर मत आना।
वेदने ! न हो तू चञ्चल।
उस पार मुझे भी ले चल॥

आह्वान—

[श्री० मोहनलाल जी "श्रीपति", बी० ए०

हाय लेखनी लिख कर क्या तू,
दिखलाएगी नग्न स्वरूप ?
अत्याचारों से यह भारत—
होता जाता है विद्रूप॥
इधर धर्म-अन्धों के द्वारा,
नष्ट हुआ जा रहा समाज।
उधर धनिक मद से मदान्ध हो,
छीन रहे नारी की लाज !!
होगा आज पतन फिर क्यों ना,
जाएँ क्यों न रसातल में।
सति का सत्य भङ्ग करने से—
क्यों न वज्र टूटे पल में॥
धर्म-परायणता फैली थी—
जिस भारत के चारों ओर।
धर्म-ओट में अब शिकार का
वहीं मचा है काफ़ी शोर !!
थे जो परम-पुनीत पुरी-पुर,
अथवा धवल-धर्म के क्षेत्र।
अड्डे और अखाड़े अघ के—
देख, बहाते आँसू नेत्र॥
ऋषी-मुनी, साधू-संन्यासी,
करते थे जहँ तत्व विचार।
वहाँ आज पण्डे-पुजारिगण—
करते हैं नित पापाचार !!
हे भगवान ! भक्त-भय-हारी,
करहु कृपा कर इतना काज।
एक बार फिर से तुम आकर—
रख लो भारत-माँ की लाज॥

गोलमेज़-भविष्य

[श्री० गङ्गाविष्णु जी पाण्डेय, विद्याभूषण, "विष्णु"]

टैक्स में हैं लेते कुछ, माल में हैं लेते कुछ,
बचा-खुचा द्रव्य खींच लेते एक्सचेञ्ज में।
गाँधी-इरविन-सन्धि का जो हो रहा है हाल,
ऐसा और भी कहीं है देखा ओल्ड एज में ?
भारत स्वतन्त्र कर देने का उदार भाव,
देता है दिखाई क्या किसी भी अँगरेज़ में।
दौड़े आप लोग यों भले ही जायँ लन्दन को,
किन्तु कुछ होना-जाना है न, गोलमेज़ में।

सत्याग्रह-शक्ति

सैकड़ों उपाय करते हैं, किन्तु होते व्यर्थ,
चालें कोई भी विदेशियों की चलतीं नहीं।
हो निशङ्क कार्य करती ही जाती है, ज़रा भी,
'विष्णु' जनता है लाठियों से डरती नहीं।
गाँधी के बताए हुए मार्ग पर जाती चली,
सत्य से परन्तु एक पग टलती नहीं।
शान्तिपूर्ण हिंसाहीन सत्याग्रह के समक्ष,
ब्रिटेन की कोई शक्ति काम करती नहीं।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

बम्बई की एक प्रतिभाशाली पारसी-युवती—कुमारी पीलू एम० वेसेवा वाला, जिन्हें लीड्स (इङ्गलैण्ड) विश्व-विद्यालय ने इस वर्ष "मास्टर ऑफ़ एजुकेशन" की डिग्री से विभूषित किया है।

मद्रास नेथाबाई कन्याशाला की श्रीमती सीताभाई—जो अर्थ-शास्त्र का गम्भीर अध्ययन करने के अभिप्राय से शीघ्र ही अमेरिका जाने वाली हैं।

श्रीमती सी० मायादास—जो जनेवा में होने वाली अखिल-विश्व-अन्तर्राष्ट्रीय महिला-परिषद में भारतीय-महिला प्रतिनिधि की हैसियत से पधारी हैं।

मद्रास के क्वीन्स मेरी कॉलेज की वे छात्राएँ, जो इस वर्ष ग्रेजुएट हुई हैं। यह ग्रूप केवल उन्हीं छात्राओं का है, जो केवल क्वीन्स मेरी कॉलेज से विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित हुई थीं।

श्रीमती लीलादेवी—जो इस वर्ष गुण्टूर (मद्रास) की ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं।

मेजर-जनरल जनकसिंह—जो मेजर दुबे के स्थान पर काश्मीर-स्टेट के अर्थ-सचिव नियुक्त हुए हैं।

बर्लिन (जर्मनी) के अजायबघर में रक्खा हुआ 'सारन' नामक विशाल पक्षी का ढाँचा। संसार के किसी दूसरे अजायबघर में इस विचित्र पक्षी का ढाँचा नहीं मिलेगा।

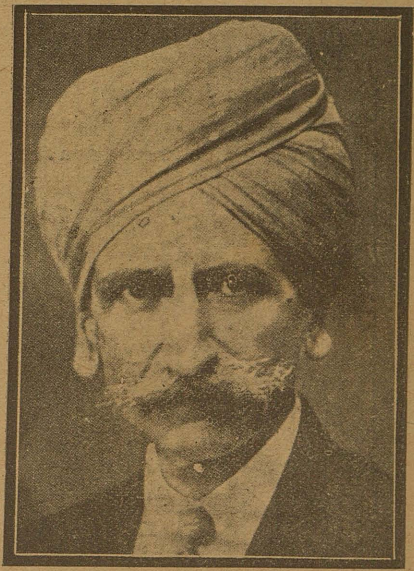

काश्मीर और जम्मू स्टेट के नए प्रधान-सचिव—राजा हरिकिशन कौल—जो शासन-चातुर्य में अपना सानी नहीं रखते।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

हवाई द्वीप की नर्तकियाँ—जो नृत्य-कला में अत्यन्त प्रवीण होती हैं। ये फूलों से सजी रहती हैं। इनके नृत्य के विषय में ग्राम के कवि लोग कविताएँ बना कर गाते फिरते हैं।

कौमारवेश और चटाई के साथ टोंगा द्वीप की एक कन्या।

☞

पाजामा पहने हुए स्कुटारो की तीन सुन्दरियाँ

स्कुटारी (अलबेनिया) में प्रायः ईसाइयों और मुसलमानों में परस्पर विवाह-सम्बन्ध होते हैं। स्त्रियाँ रेशम अथवा सूत के ढीले और बड़े-बड़े पाजामे पहिनती हैं। घर के बाहर ये अपने शरीर को बुर्क़ों से ढँक लेती हैं।

सीसी और सुअर के दाँत के आभूषणों से युक्त पालीनीशिया की एक सुन्दरी।

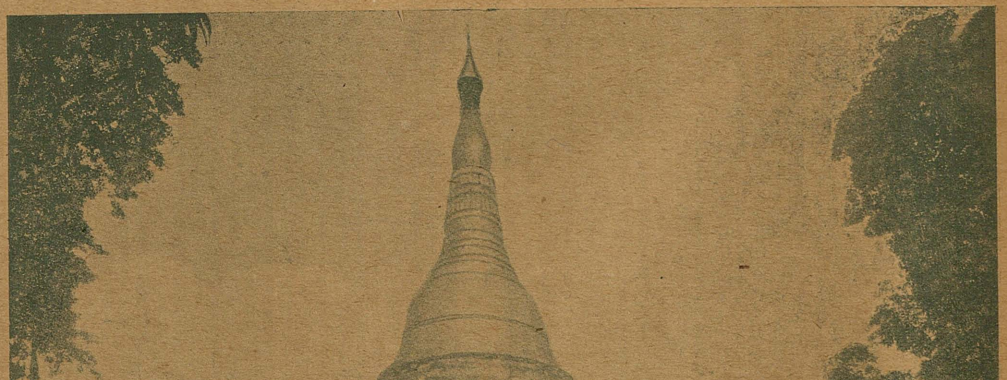

बर्मा का बहुत प्राचीन और सुप्रसिद्ध श्वेडेगोन नामक विशाल मन्दिर—जो अपनी नाना प्रकार की मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

आयर्लैंण्ड के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता—स्वर्गीय मेक्स्विनी—जिन्होंने उपवास को ही मुक्ति का साधन मान कर, विदेशी सत्ता की जड़ हिला दी थी।

अपनी धर्मपत्नी सहित श्री० सुखदेव जी अग्रवाल—आप गोंदिया कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री तथा उत्साही कार्यकर्ता हैं और नौ मास तक कठिन कारागार भोग चुके हैं। देवी जी पर्दा-प्रथा तोड़ने वाली सर्व-प्रथम मारवाड़ी महिला हैं।

अमेरिका-पुलिस की एक मेक्ज़िको—बालिका—जो पुलिस के एक पुरुष-अफ़सर को 'जियू जितसू' नामक दाव-पेंच सिखा रही है।

राजपूताना के सुप्रसिद्ध दार्शनिक—महात्मा श्री० उत्तमनाथ जी महाराज

श्रीमती डॉ० मालिनीबाई भालचन्द्र सुखतङ्कर, एम० बी०, बी० एस०—जिन्हें बम्बई के कॉरपोरेशन ने अपना कौन्सिलर निर्वाचित किया है।

श्री० नरसिंहदास जी अग्रवाल, विशारद—आप जबलपुर ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सभापति हैं और साल भर की सज़ा काट चुके हैं।

मिस एम० हयडरसन, जिनकी चित्रकला सम्बन्धी निपुणता के लिए बम्बई के सर जे० जे० स्कूल ऑफ़ आर्ट ने 'मेयो मेडल' नाम का पदक प्रदान किया है।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

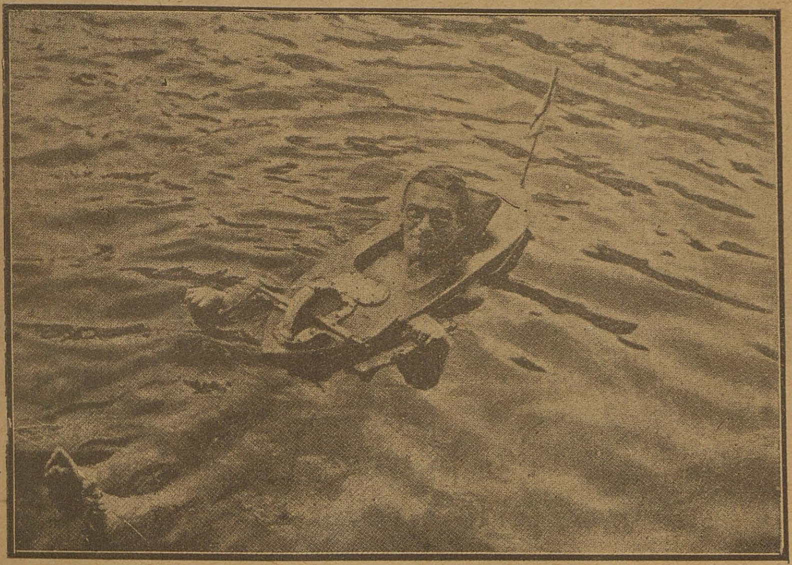

संसार की यह सबसे छोटी किश्ती है। इसकी लम्बान कुल ३ फ़ीट है, जिसे बर्लिन (जर्मनी) के एक कारीगर ने तैयार की है। बीच के सूराख़ में धड़ डाल कर और हाथ से दोनों ओर लगी हुई चर्ख़ी घुमाने से किश्ती बहुत तेज़ भागती है। आगे अथवा पीछे दोनों ओर इसे चलाया जा सकता है।

श्रीमती शकुन्तलाबाई इनामदार—आप औंध रियासत की रहने वाली हैं। चर्ख़ा प्रतियोगिता में आपने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

श्रीमती भारती अम्मल, बी० ए०, एल० पी०—जो ट्रावङ्कोर राज्य द्वारा वहाँ की कन्या-पाठशालाओं की असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर नियुक्त हुई हैं। इस राज्य की यह पहली महिला हैं, जिन्हें यह उच्च पद प्रदान किया गया है।

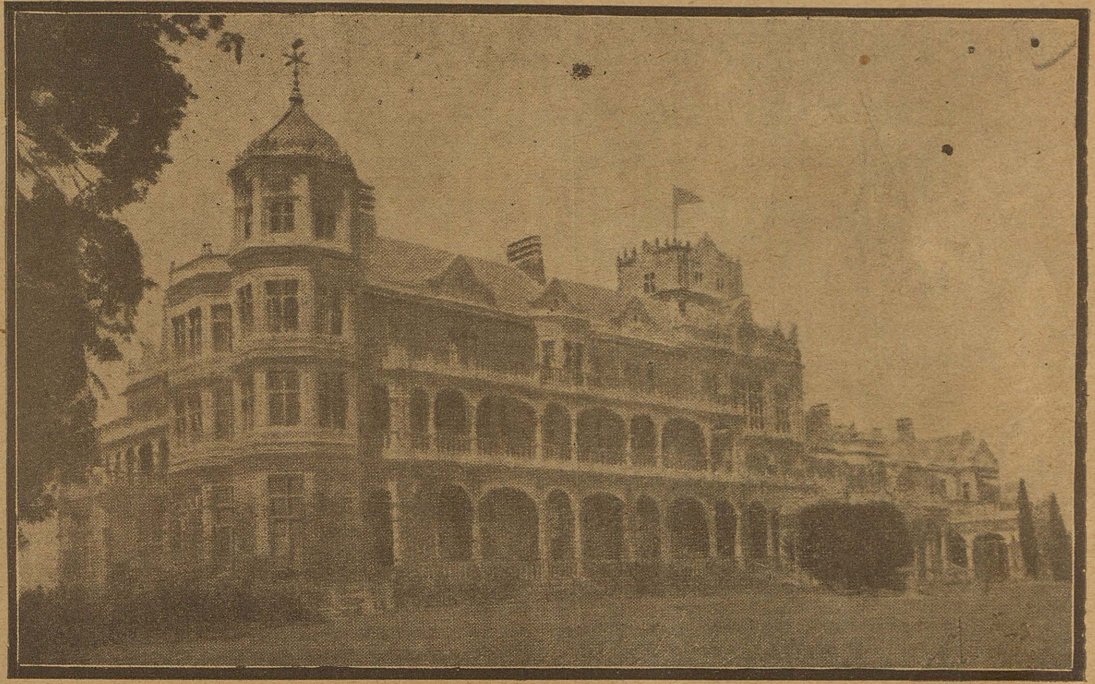

शिमला-शैल पर वायसरॉय के रहने का गगनचुम्बी राज-महल

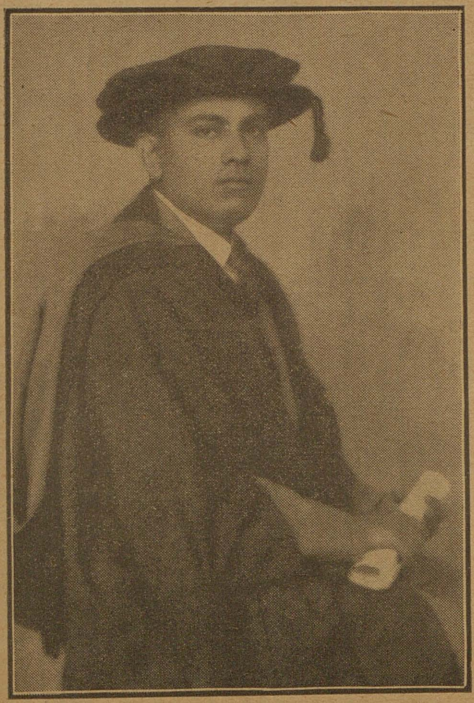

डॉक्टर रामनाथ, एम० एस्-सी०, डी० आई० सी०, पी० एच०, डी० (लण्डन)—काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय ने आपको भूगर्भ विद्यान्तर्गत शिलाजात (Paleontology) विद्या का प्रोफ़ेसर नियुक्त किया है।

स्वर्गवासिनी श्रीमती त्रिवेणी बाई वीरापुरी—आप वारसी (ज़िला शोलापुर) की एक प्रमुख कार्यकर्त्री और 'वीर प्रभा' नाम की विख्यात पत्रिका की सम्पादिका थीं। आपके अकाल स्वर्गवास से इस ज़िले की बड़ी क्षति हुई है।

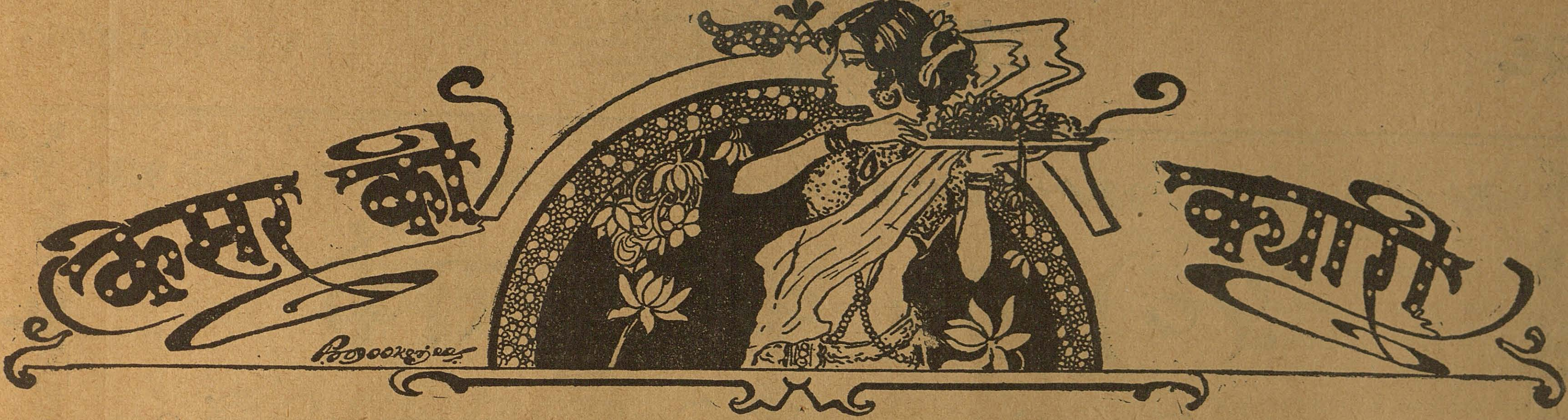

बुरा ज़माने को हम इसलिए नहीं कहते, कि है शुमार तुम्हारा भी तो ज़माने में !
अभी तो मेरी वफ़ाओं की क़द्र ख़ाक नहीं, ज़माना याद करेगा किसी ज़माने में ।

लड़ें वह मेरी एवज़ तुझसे रहम खा-खाकर,
अगर हो लैलीयो शीरीं तेरे ज़माने में !
मआले[१] कार ख़ुदा जाने "दाग़" क्या होगा,
ख़ुदा से काम पड़ा आख़िरी ज़माने में !
—"दाग़" देहलवी

लिखा गया यह मेरी उम्र के फ़िसाने[२] में,
बहुत से ग़म हुए इस मुख़्तसिर[३] ज़माने में !
वह कह रहा है, जो की हो वफ़ा तो मैं भी करूँ,
किसी के साथ, किसी ने, किसी ज़माने में !
चलो ख़ुशी न मिली, हमको रञ्जोग़म तो मिले,
किसी तरह तो बसर हो गई ज़माने में !
बुरा ज़माने को हम इसलिए नहीं कहते,
कि है शुमार तुम्हारा भी तो ज़माने में !
बहारे उम्र, कोई बाग़ की बहार नहीं,
गई ज़माने से और आ गई ज़माने में !
बयाने ऐशे-गुज़श्ता[४] से अब है क्या हासिल,
पुराने वक़्त की बातें नए ज़माने में !
निगाहे ग़ौर से मैं देखता हूँ तारों को,
यह उनके ज़र्रे हैं जो मिट गए ज़माने में !
हमें कुछ और तरद्दुद, तुम्हें कुछ और अफ़कार[५],
ग़रज़ कोई भी नहीं चैन से ज़माने में !
हमीं हैं वजह मसर्रत[६], हमीं हैं बाइसे[७] ग़म,
अगर हमीं नहीं, तो कुछ नहीं ज़माने में !
यह वाक़िआ नहीं दुनिया को भूलने वाला,
ज़माना ग़र्क़[८] हुआ "नूह" के ज़माने में !
—"नूह" नारवी

वफ़ा में हम हैं, वह कामिल हैं ज़ुल्म ढाने में,
यह बात फैल गई हर तरफ़ ज़माने में !
फ़ुज़ूल सर्फ़ किया वक़्त आने-जाने में,
हमारी सैर न पूरी हुई ज़माने में !
अभी तो मेरी वफ़ाओं की क़द्र ख़ाक नहीं,
ज़माना याद करेगा किसी ज़माने में !
यह क्या ग़ज़ब है, कहीं वह नज़र नहीं आता,
निगाहें ढूँढ़ रही हैं उसे ज़माने में !
किसी को क़त्ल, किसी को हलाक कर डाला,
वह चाहते हैं हमीं हम रहें ज़माने में !
फ़ना[९] के बाद यह इश्क़ो वफ़ा की क़द्र हुई,
फिराई जाती है मैयत[१०] मेरी ज़माने में !

१—नतीजा, २—कहानी, ३—संक्षेप, ४—गुज़रा हुआ आनन्द, ५—फ़िक्र, ६—आनन्द, ७—सबब, ८—डूबा, ९—मरने पर, १०—लाश,

ज़माने भर में तो है उसके हुस्न का चर्चा,
किसी ने शक्ल न देखी मगर ज़माने में !
करो जो ग़ौर तो दिल ही ज़लीलो ख़्वार नहीं,
निगाहे नाज़ भी बदनाम है ज़माने में !

घड़ी में कुछ, घड़ी में कुछ; अभी क्या थे, अभी क्या हो ?

[नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी]

अगर उसका मेरा झगड़ा यहीं तै हो तो अच्छा हो,
ख़ुदा जाने ख़ुदा के सामने कल क्या न हो, क्या हो ?
न उल्फ़त हो, न आफ़त हो, न शिकवा[१] हो, न झगड़ा हो !
बुरा उनको जो अपने दिल में हम समझें तो अच्छा हो,
गुज़रती है बहारे[२] ज़िन्दगी किस वहम[३] बातिल में,
जो ऐसा हो, तो ऐसा हो, जो ऐसा हो तो ऐसा हो !
हमें उस शोख़ हरजाई पे क्योंकर एतबार आए,
किसे मालूम किसका था, वह किसका है, वह किसका हो ?
वह हरदम की अयादत[४] से, मेरी घबरा के कहते हैं,
ग़ज़ब में जान है अपनी; न मर जाए, न अच्छा हो !
तुम्हारे वादए फ़रदा[५] पे क्योंकर एतबार आए,
घड़ी में कुछ, घड़ी में कुछ; अभी क्या थे, अभी क्या हो ?
बजा है वाक़ई तक़सीर[६] जो कुछ है हमारी है,
न हम शिकवा करें उनका, न हमसे उनसे झगड़ा हो !
उन्हीं के ज़ुल्म का शिकवा उन्हीं से क्यों किया मैंने,
वह क्या जानें करें क्या जौर[७] अब क्या जानिए क्या हो ?
मुहब्बत में हज़ारों ज़ुल्म लाखों रञ्ज होते हैं,
मुनासिब तो यही अब है; न मैं चाहूँ न तुम चाहो !
नहीं एक चाल तुम चलते, नहीं एक तरह तुम रहते,
ज़माना हो, फ़लक[८] हो, गरदिशे तक़दीर, हो क्या हो ?
हज़ार अफ़सोस उस पर और उसकी कमनसीबी पर,
जिसे हसरत की हसरत हो, तमन्ना की तमन्ना हो !
वह फ़रमाते हैं मुझको देख कर मैं तो न मानूँगा,
अगर यह "नूह" है तूफ़ान उठाए ग़र्क़ दुनिया हो !

१—शिकायत, २—पुरुष, ३—झूठा ख़याल, ४—किसी बीमार को देखने जाना, ५—कल का वादा, ६—क़सूर, ७—ज़ुल्म, ८—आकाश।

नज़र न आओ किसी को तो है नज़र का क़ुसूर,
हज़ार शक्ल से ज़ाहिर हो तुम ज़माने में !
मेरी निगाह से देखें वह तेरी आँखों को,
दिखा रही हैं जो आँखें मुझे ज़माने में !
हज़ार बार जिए, हम हज़ार बार मरे,
यह ज़िन्दगी थी, कोई ज़िन्दगी ज़माने में !

ख़ुद उनको चाहने वालों की आरज़ू होगी,
अगर बदल गई दुनिया किसी ज़माने में !
किसी को नाज़, किसी को है रश्क[११] ऐ "बिस्मिल",
कि इतने हो गए मशहूर हम ज़माने में !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

मिला जो लुत्फ़ हसीनों को दिल दुखाने में,
रहा न चैन से दम भर कोई ज़माने में !
हिजाब[१२] इसलिए है उनको बाहर आने में,
कि देख ले न ज़माना कहीं ज़माने में !
मेरी फ़ुग़ाँ[१३] को समझते हैं आप बेतासीर,
कहीं न आग लगा दे यही ज़माने में !
वह कहते हैं कि ज़माना है चाहने वाला,
मगर मिलेगा न मुझसा उन्हें ज़माने में !
हवाए शौक़ ने बरबादे इश्क़ ही रक्खा,
फिरा रही है मुझे हर तरफ़ ज़माने में !
मिलेंगे और हसीं दिल अगर सलामत है,
फ़क़त नहीं हो तुम्हीं ख़ूबरू[१४] ज़माने में !
शिकायते ग़मो आज़ार[१५] क्या करूँ सरे हश्र[१६],
यह ख़त्म हो नहीं सकती किसी ज़माने में !
अज़ल[१७] की याद दिलाएँगे उनको हश्र के दिन,
कि हम-तुम एक जगह थे किसी ज़माने में !
ग़ज़ल यह ख़ूब कही तुमने हज़रते "बिस्मिल",
कई ज़माने नज़र आए इक ज़माने में !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

यह कह के बहते हैं आँसू कोई बहाने में,
मुझे भी ऐश था हासिल किसी ज़माने में !
मज़ा इसे बहुत आने लगा सताने में,
मिटा रहा है ज़माना हमें ज़माने में !
हम अपने हाल पे रोते हैं बैठ कर क्या-क्या,
उड़ाई जाती है ऐसी हँसी ज़माने में !
यूँहीं जिएँगे जो बेनामो बेनिशाँ होकर,
हमारा नामोनिशाँ रह चुका ज़माने में !
अगर यह सच है कि इनक़िलाबे[१८] आलम को,
हमारे दिन भी फिरेंगे किसी ज़माने में !
हम इसको जानते हैं, यह हमें भी है मालूम,
कि साथ देगा न कोई गिरे ज़माने में !
सबब यह है जो निशाना बने हैं ऐ "बिस्मिल",
हमीं को ताक लिया सबने अब ज़माने में !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

११—जलन, १२—पर्दा, १३—फ़रियाद, १४—अच्छी सूरत वाले, १५—दुख, १६—प्रलय, १७—आदि, १८—उलट-पलट।

५०) रु० की पुस्तकें

२) रु० मासिक क़िश्त पर कैसे ली जा सकती हैं ?

(१) जो लोग अपनी ज्ञान-वृद्धि के उत्सुक हैं और प्रत्येक मास पुस्तकें मँगवाया करते हैं—जिससे बार-बार उन्हें डाक-व्यय देकर सरकारी ख़ज़ाना भरना पड़ता है—उनकी सुविधा के लिए तथा हिन्दी के प्रचार को दृष्टि में रखते हुए यह निश्चय किया गया है, कि कार्यालय से ५०) रु० के मूल्य को इच्छानुकूल पुस्तकें इस स्कीम के अनुसार प्रत्येक मेम्बर को रेलवे-पार्सल द्वारा भेज दी जावें और वे नियमित रूप से प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में २) रु० कार्यालय को भेजते रहें।

(२) पुस्तकें केवल 'चाँद' तथा 'भविष्य' के प्रतिष्ठित ग्राहकों को ही दी जावेंगी, हर किसी को नहीं।

(३) कार्यालय का छपा हुआ प्रार्थना-पत्र इसी के साथ भेजा जा रहा है। ग्राहकों को इसी पर हस्ताक्षर करके भेजना चाहिए।

(४) प्रार्थना-पत्र स्वीकृत होने पर पुस्तकें देने पर विचार किया जायगा, यदि किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह उपस्थित हुआ, तो बिना किसी प्रकार का कारण बतलाए, उन्हें इन्कार कर दिया जायगा।

(५) सब प्रकार का इतमीनान हो जाने से यहाँ से इक़रारनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जायगा और साथ ही उनके पास पुस्तकों का बड़ा और नया सूचीपत्र भेज दिया जायगा, ताकि ग्राहक अपनी इच्छानुकूल पुस्तकें पसन्द करके अपना ऑर्डर बना कर भेज सकें।

(६) सूचीपत्र में जिन पुस्तकों का उल्लेख न होगा और यदि ग्राहक अन्य पुस्तकें मँगाना चाहेंगे तो उन्हें भेजने के लिए संस्था बाध्य न होगी।

(७) इन पुस्तकों पर किसी भी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायगा, चाहे वे अपनी प्रकाशित हों अथवा बाहरी (कमीशन केवल नक़दी पुस्तकें ख़रीदने पर ही देने का नियम है—इसे पाठक स्मरण रक्खें)।

(८) ऑर्डर देते समय ग्राहकों को ५०) रु० की जगह ६०-७० रुपयों की पुस्तकों का ऑर्डर बना कर भेजना चाहिए, क्योंकि प्रायः ऐसा होता है, कि माँगी हुई समस्त पुस्तकें स्टॉक में तैयार नहीं होतीं, अतएव उस समय जो भी पुस्तकें तैयार होंगी, उनमें से ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें भेज दी जावेंगी।

(९) पुस्तक भेजने में रेल का जो किराया लगेगा (जो नाम-मात्र का होता है) वह, तथा बिल्टी की रजिस्ट्री आदि का व्यय, ग्राहकों को ही देना होगा।

(१०) बिल्टी रेल तथा डाक-व्यय के अतिरिक्त ६) रु० की वी० पी० द्वारा भेजी जायगी, और शेष २२ क़िश्तें २) रु० मासिक की होंगी, जो प्रत्येक अङ्गरेज़ी मास के प्रथम सप्ताह में आ जाना चाहिए। भेजने में जो व्यय होगा वह ग्राहकों को ही देना होगा।

(११) यदि २ क़िश्तें पिछड़ गईं तो शेष सारा रुपया ग्राहकों का एक-मुश्त फ़ौरन चुका देना होगा! अन्यथा क़ानूनी कार्रवाही की जायगी और मुक़द्दमे के ख़र्च लिए ग्राहकों को ज़िम्मेदार होना पड़ेगा।

(११) यदि एक वर्ष तक प्रत्येक मास की क़िश्त समय पर अदा होती रही, तो उस ग्राहक को दूसरी बार भी ५०) रु० की पुस्तकें इसी शर्त पर भेज दी जावेंगी—पर यदि एक भी क़िश्त समय पर न पहुँची अथवा मुक़दमा आदि करना पड़ा तो उस ग्राहक से भविष्य में कोई व्यवहार न रक्खा जायगा।

हमें पूर्ण आशा है, पढ़ने के व्यसनी पाठक इस नई स्कीम द्वारा ईमानदारी से उचित लाभ उठावेंगे और हमें भी उत्तरोत्तर सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

* * *

उपरोक्त नियमों में किसी भी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं किया जायगा, व्यर्थ में आए हुए पत्रों का तब तक उत्तर नहीं दिया जायगा, जब तक पते का टिकटदार लिफ़ाफ़ा पत्रोत्तर के लिए न भेजा जायगा।

—मैनेजिङ्ग डाईरेक्टर की आज्ञा से

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,

इलाहाबाद

ऑर्डर-फ़ॉर्म

श्री० प्रबन्धक महोदय,

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

महाशय जी,

मुझे आपकी नई स्कीम बहुत पसन्द है। आप मेरा नाम इसके मेम्बरों की सूची में लिख लें और प्रकाशित होते ही पुस्तकों का नया सूचीपत्र तथा इक़रारनामे (Agreement) का फ़ॉर्म हस्ताक्षर करने के लिए भेज दें। मुझे ५०) रु० के मूल्य की पुस्तकें एक साथ मँगाना स्वीकार है। ६) की वी० पी० (डाक-व्यय सहित) स्वीकार कर ली जायगी और नियमित रूप से आपको २) रु० हर मास के शुरू में पहुँचते रहेंगे।

मेरा 'चाँद' / 'भविष्य' का ग्राहक-नम्बर —————— है।

हस्ताक्षर ——————

पूरा पता ——————

——————

——————

यदि पुस्तक मँगाना चाहते हों तो इसी ऑर्डर-फ़ॉर्म को साफ़-साफ़ भर कर भेजने की कृपा करें ताकि शर्तनामा हस्ताक्षर करने के लिए भेजा जा सके।

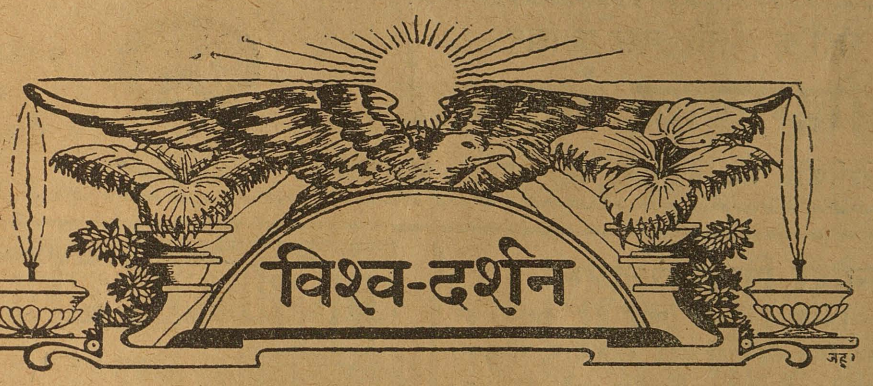

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर]

जर्मनी का शासन-विधान

सन् १९१८ तक जर्मनी में कैसर-शाही की तूती बोलती थी। राजतन्त्र का बोलबाला था। जर्मन-साम्राज्य संसार में एक सुसङ्गठित साम्राज्य समझा जाता था। प्रजा भी अपने सम्राट से सन्तुष्ट थी। साम्राज्यवाद में चालीस वर्ष के इतिहास में जर्मनी ने आशातीत उन्नति की थी। दूसरे देशों में भी जर्मन-साम्राज्य की बड़ी प्रशंसा होती थी।

परन्तु गत यूरोपीय महायुद्ध ने जर्मन-साम्राज्य के बारे में लोगों के बिचार बदल दिए। संसार को साम्राज्यवाद के मख़मली दस्ताने के अन्दर से फ़ौलादी पञ्जा स्पष्ट दिखाई देने लगा। प्रजातन्त्रवाद संक्रामक रोग की भाँति सारे यूरोप में फैल रहा था। उसकी लहरें राजसिंहासनों से टकरा रही थीं। रूस में ज़ार-शाही का अन्त हो रहा था और शासन की बागडोर जनता के हाथों में आ रही थी। भला जर्मनी इस लहर से कैसे बच सकता था? परन्तु उस समय जर्मन-साम्राज्य का भाग्यविधाता सम्राट होता था, जिसे क़ैसर (Caesar) कहते थे। सन् १८६७ में जिस समय उत्तरीय जर्मन-सङ्घ (North German Confederation) का निर्माण हुआ था, तो जर्मनी के प्रशा नामक प्रदेश का राजा उनका सभापति चुना गया था। परन्तु चार वर्ष पश्चात् वह जर्मन-साम्राज्य का सम्राट बन बैठा, पर ऐसा करने से उसके अधिकारों में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई थी। इसके लिए किसी सिंहासन का निर्माण न किया गया था और न कोर्ट, वेतन आदि ही निश्चित हुआ था।

परन्तु प्रशा के राजा को सम्राट की हैसियत से दो क्षेत्रों में विशेष शासनाधिकार प्राप्त थे। उनमें प्रथम राष्ट्रीय रक्षा (National Defence) और द्वितीय था वैदेशिक सम्बन्ध। इसके सिवा साम्राज्य की सेना का वह प्रधान सेनापति था। शान्ति के समय जर्मनी की सेना के सङ्गठन का वही निरीक्षण करता था और युद्ध के समय तो वह सेना का सर्वेसर्वा ही था। स्थल-सेना की तरह जल-सेना का भी वही प्रधान सेनापति था। वह युद्ध की घोषणा कर सकता था, पर साम्राज्य की पार्लामेण्ट की बड़ी सभा से उसे मञ्ज़ूरी लेनी पड़ती थी। पर यदि हठात् कोई शत्रु जर्मनी पर चढ़ आवे तो वह बिना किसी की मञ्ज़ूरी लिए ही युद्ध-घोषणा कर सकता था।

पूर्वोक्त वैदेशिक नीति सम्बन्धी अधिकार से अन्य देशों में जर्मन दूतों की नियुक्ति वही करता था। विदेशी दूत उसी के आदेशानुसार कार्य करते थे। इस सम्बन्ध में उसके अधिकार वही होते थे, जो आजकल अमेरिका के प्रेज़ीडेण्ट के हैं। वह अन्य देशों के साथ सन्धियाँ और उनसे मित्रता कर सकता था, इसके लिए उसे किसी से सलाह लेने की आवश्यकता न थी। पुराने विधान के अनुसार जर्मनी में एक पार्लामेण्ट होती थी, जिसकी छोटी और बड़ी दो शाखाएँ होती थीं। बड़ी सभा को बण्डस्रट (Bundesret) और छोटी को रीचस्टेग (Reichstag) कहते थे। पहली सभा जर्मनी-साम्राज्य के अन्तर्गत राज्यों की प्रतिनिधि सभा थी और दूसरी में जनता के प्रतिनिधि होते थे। बड़ी सभा में ५८ सदस्य होते थे। इनकी नियुक्ति राज्यों की तरफ़ से होती थी। प्रत्येक राज्य का कम से कम एक सदस्य होता था। अनेक राज्यों के दो, चार या छः सदस्य भी होते थे। प्रशा के १७ सदस्य होते थे। फलतः कुल सभा के तिहाई से कुछ कम सदस्य प्रशा के प्रतिनिधि होते थे। तथापि आबादी के अनुसार प्रशा के सदस्यों की संख्या आधे से कुछ अधिक होनी चाहिए थी। इन सदस्यों के कार्यकाल की कोई निश्चित अवधि न थी। प्रत्येक राज्य अपने सदस्यों को जब चाहता, वापस बुला सकता था। सदस्य-गण अपने-अपने राजा के आदेशानुसार मत देते थे। प्रत्येक राज्य के सदस्य एक होकर मत देते थे। अर्थात् मत राज्य का होता था, न कि सदस्य का। राज्य का एक सदस्य भी वोट दे सकता था। इसलिए यह आवश्यक न था कि राज्य के सभी सदस्य उपस्थित हों। वास्तव में यह सभा जर्मन साम्राज्यान्तर्गत राज्यों के दूतों की सभा होती थी।

छोटी सभा में प्रायः ४०० सदस्य होते थे। इनको जनता चुनती थी। प्रत्येक निर्वाचन-स्थान से एक सदस्य चुना जाता था। यो तों क़ानून बनाने में दोनों सभाओं के अधिकार बराबर थे, पर वास्तव में बड़ी सभा का अधिक हाथ होता था। प्रायः सभी आवश्यकीय बिल वहीं से प्रारम्भ होते थे। सम्राट जब चाहता, बड़ी सभा की सम्मति से छोटी सभा को तोड़ सकता था। अनेक अवसरों पर बड़ी सभा से सहमत न होने पर छोटी सभा तोड़ दी जाती थी। छोटी सभा का शासन पर कोई अधिकार न था। इन्हीं सब कारणों से छोटी सभा का प्रभुत्व नहीं के बराबर था। वह सदा बड़ी सभा का अनुकरण किया करती थी। किसी एक दल का छोटी सभा में बहुमत न होता था, और शासकगण एक दल को दूसरे दल से भिड़ाया करते थे।

पार्लामेण्ट की छोटी और बड़ी दोनों सभाओं को सम्राट् ही बुलाता था। छोटी सभा को वह बड़ी सभा की मञ्ज़ूरी से तोड़ भी सकता था। पार्लामेण्ट द्वारा पास किए गए तमाम क़ानूनों को वही जारी करता था। पर वह किसी क़ानून को रोक नहीं सकता था। दोनों सभाओं से पास होते ही बिल क़ानून बन जाता था। परन्तु जर्मन सम्राट् होने के अतिरिक्त वह अपने प्रशा-प्रदेश का स्वतन्त्र राजा भी था, अतः बड़ी सभा के तिहाई सदस्य उसके अधीन थे। फलतः वह जिस बिल को नापसन्द करता था, उसका बड़ी सभा से पास होना अत्यन्त कठिन था।

इसके सिवा उन दिनों जर्मनी में एक चान्सलर होता था, जिसकी नियुक्ति सम्राट् द्वारा होती थी। सम्राट् की तमाम आज्ञाओं पर चान्सलर के हस्ताक्षर होते थे। वह अपने कामों के लिए पार्लामेण्ट के प्रति उत्तरदायी नहीं होता था। वह केवल सम्राट् के प्रति ही उत्तरदायी होता था। यह चान्सलर बड़ी सभा का सभापति भी होता था। इसके सिवा छोटी सभा के वाद-विवादों में भी वह भाग ले सकता था। चान्सलर के अधीन मन्त्री होते थे। मन्त्रियों को किसी प्रकार की स्वतन्त्रता न होती थी। उनका काम था, चान्सलर की आज्ञाओं को कार्यान्वित करना। प्रिन्स बिसमार्क जर्मनी का प्रथम चान्सलर था। लोगों की धारणा है कि लूथा के बाद बिसमार्क ही सबसे बड़ा जर्मन राजनीतिज्ञ था।

जर्मनी के पुराने शासन-विधान को समझने के लिए प्रशा का शासन-विधान समझना अत्यावश्यक है। जर्मनी के अन्य सब राज्य मिल कर भी प्रशा से छोटे पड़ते थे। इसलिए जर्मन-पार्लामेण्ट में प्रशा की ही तूती बोलती थी। प्रशा में एक मन्त्रि-मण्डल तथा एक प्रधान मन्त्री होता था। पर वे जर्मन-पार्लामेण्ट के प्रति उत्तरदायी न थे। इसके सिवा जर्मन-पार्लामेण्ट के चुनाव का ढङ्ग ऐसा था कि बड़े-बड़े टैक्स देने वालों का पार्लामेण्ट में प्रभाव था। बिसमार्क ने एक अवसर पर कहा था कि जर्मनी की उन्नति का श्रेय उसकी सेना को है, न कि पार्लामेण्ट को। सेना ही सदा जर्मन-साम्राज्य का प्रधान अङ्ग रही है। क़ैसर ने एक बार अपनी प्रजा से कहा था कि 'वोट' तुम्हारे हैं, पर गोलियाँ हमारी हैं ("Ballots are yours, but bullets are mine".)।

जर्मनी की पुरानी सरकार का अन्त ९ नवम्बर, सन् १९१८ को हुआ। परन्तु यूरोपीय महायुद्ध के पूर्व से ही साम्राज्य का प्रभाव जनता पर से हट रहा था। सामाजिक लोकतन्त्रवादी (Social Democrats) ज़ोरों से सुधार माँग रहे थे। सन् १९०८ में सम्राट् ने उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को मानने का जनता को आश्वासन दिया था, पर उसने अपने वचन को कार्यान्वित नहीं किया। सन् १९१३ में छोटी सभा ने चान्सलर पर अविश्वास का प्रस्ताव पास कर, उससे त्यागपत्र देने को कहा। परन्तु चान्सलर ने स्तीफ़ा नहीं दिया और कहा कि मैं केवल सम्राट् के प्रति उत्तरदायी हूँ, पार्लामेण्ट का मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। इसके बाद से धीरे-धीरे जनता में असन्तोष बढ़ता रहा।

परन्तु युद्ध प्रारम्भ होते ही जनता चुप हो गई और सुधार के लिए आन्दोलन करना स्थगित कर दिया। इस समय सामाजिक लोकतन्त्रवादियों ने भी सरकार का पूर्ण समर्थन किया और युद्ध के लिए उसे प्रचुर धन दिया गया। इसके बाद जर्मनी की प्रारम्भिक जीतों ने जनता में और भी उत्साह भर दिया, इसलिए जनता सुधार की बात एकदम भूल गई। परन्तु बहुत शीघ्र जनता को असलियत का पता लगने लगा। वह समझ गई कि जर्मनी की विजय कोई सरल कार्य नहीं है। न मालूम युद्ध कब तक चले और अन्त में किस पक्ष की विजय हो। जनता को अनेक कष्ट उठाने पड़ रहे थे। अब तक तो वह शीघ्र विजय की आशा से उन कष्टों को सह रही थी, पर जब उसे शीघ्र विजय के कोई लक्षण न दिखाई पड़े, तो वह कष्टों से ऊबने लगी। और देश में राजनीतिक असन्तोष बढ़ने लगा। शासकों ने कठोरता से काम लिया। विरोधी पत्रों को दबा दिया गया। विरोधी या तो जेलों में बन्द कर दिए गए या युद्ध-क्षेत्र में भेज दिए गए। पर इतना प्रयत्न करने पर भी जनता में असन्तोष बढ़ता ही गया। फलतः अन्त में सरकार

"बी" केटलॉग दाम ॥)
"सी" केटलॉग दाम ।)

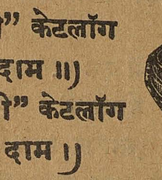

सोने-चाँदी के फ़ैन्सी ज़ेवर के लिए

सोनी मोहनलाल जेठाभाई

३२ आरमनी स्ट्रीट, टेलीफ़ोन नं० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता

पोस्टेज भेज कर मँगाइए !

गृहस्थ का सच्चा मित्र

३० वर्ष से प्रचलित, रजिस्टर्ड

चन्द्रामृत

बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा। हमेशा पास रखिए, वक्त पर लाखों का काम देगी। सूची मय कलेण्डर मुफ़्त मँगा कर देखो।

क़ीमत ॥) तीन शीशी २) डा० म० अलग।

पता—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

मनोहर पिल्स चन्द्रप्रभा

ताक़त का ख़ज़ाना है, जो खोई हुई ताक़त को वापस लाकर, धातु को गाढ़ा करके स्वप्न-दोष, शीघ्रता, अधिक विलासिता से उत्पन्न हुई रग व पट्ठों की कमज़ोरी को रफ़ा करके हर क़िस्म का प्रमेह, सूज़ाक, बवासीर, नवासीर, भगन्दर व औरतों के मासिक धर्म की ख़राबी के लिए अकसीर है। क़ीमत बड़ी शीशी ५) छोटी २॥)

बवासीर

ख़ूनी हो या बादी, बिला ऑपरेशन २४ घण्टे में तकलीफ़ को रफ़ा करके सिर्फ़ १ शीशी से ही आराम, क़ीमत बड़ी शीशी ५) ख़ुर्द २॥)

वै० भू० पं० मनोहरलाल मिश्र

आयुर्वेदिक मेडिकल हाल

चौक मैदानख़ाँ हैदराबाद, दक्षिण

होमियोपैथिक दवाइयाँ

विशुद्ध अमेरिकन दवाइयाँ प्रति ड्राम -)।, -)॥ व अमेरिका से असली दवा अङ्गरेज़ी पुस्तक, शीशी, काग, गोली आदि मँगा कर सस्ते दर में बेचते हैं।

हैज़ा व सब बीमारियों की दवा, हिन्दी में किताब ड्रापर सहित १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ दवाओं का दाम केवल २), ३), ३॥), ५॥), ६॥), ९), ११) रु० डाक-ख़र्च अलग। बायोकेमिक दवाइयाँ प्रति ड्राम -)॥ बायोकैमिक दवाइयों का बक्स, एक किताब व १२ दवाइयों के साथ मूल्य २॥) डाक-ख़र्च ॥-) अलग।

सूचीपत्र मुफ़्त

पता—मजुमदार चौधुरी एण्ड कम्पनी

नं० ६८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं रही!

आप "निरमोलिन" से अपने रेशमी, ऊनी आदि सब प्रकार के रङ्गीन और मुलायम कपड़े आसानी से धो सकते हैं।

इसमें किसी प्रकार की हानिकारक वस्तु नहीं मिली हुई है !

हर जगह मिल सकती है।

कलकत्ता सोप-वर्क्स,

(हिन्दुस्तान में सब से बड़ी सोप-फ़ैक्टरी)

बालीगञ्ज, कलकत्ता

डॉ० डब्लू० सी० राय, एल० एम० एस० की

पागलपन की दवा

५० वर्ष से स्थापित

मूर्च्छा, मृगी, अनिद्रा, न्यूरस्थेनिया के लिए भी मुफ़ीद है। इस दवा के विषय में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि—"मैं डॉ० डब्लू० सी० राय की स्पेसिफ़िक फ़ॉर इन्सेनिटी (पागलपन की दवा) से तथा उसके गुणों से बहुत दिनों से परिचित हूँ।" स्वर्गीय जस्टिस सर रमेशचन्द्र मित्र की राय है—"इस दवा से आरोग्य होने वाले दो आदमियों को मैं ख़ुद जानता हूँ।" दवा का दाम ५) प्रति शीशी।

पता—एस० सी० राय एण्ड कं०,

१६७/३ कार्नवालिस स्ट्रीट,

या (३६ धर्मतल्ला स्ट्रीट) कलकत्ता !

तार का पता—"Dauphin" कलकत्ता

अग्रवाल वर चाहिए

बीसा अग्रवाल के उच्च घराने की विवाह योग्य शिक्षित कन्याओं के लिए, जोकि यू० पी० की निवासी हैं, ऐसे वरों की दरकार है, जो १८ से २१ साल तक के स्वस्थ, सदाचारी, शिक्षित और कम से कम ५००) मासिक बँधी हुई आमदनी रखने वाले और आदर्श सुधारक हों। लेने-देने का ठहराव, फ़ज़ूल-ख़र्च व कुरीतियाँ कुछ न होंगी, किन्तु विवाह बहुत सादापन से आडम्बर-रहित होगा, जन्म-पत्री नहीं मिलाई जायगी, कोई भाई मन्तव्य-विरुद्ध लिखा-पढ़ी न करें। व्यापारी लाइन विशेष वाञ्छनीय है।

अग्रवाल समिति,

D. बलदेव बिलडिङ्ग झाँसी, JHANSI

बरसात में इन औषधों की परमावश्यकता है !

तत्काल गुण दिखाने वाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट-दर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ़्लूएन्ज़ा) बालकों के हरे-पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़बड़ी से उत्पन्न होने वाले रोगों की एकमात्र दवा है। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आना डाक-व्यय १ से २ शीशी का ।=)

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोने वाली कोई दवा है तो बस, वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकने वाला, इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत फ़ी शीशी ।), डा० ख़० १ से २ शीशी ।=)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती हैं। धोखे से नक़ली दवा न ख़रीदिए !

पता—सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

को झुकना पड़ा। उसने कुछ सुधारों को स्वीकार किया। पर साथ ही यह शर्त लगा दी कि युद्ध के पश्चात् ही सुधारों को कार्यान्वित किया जावेगा।

इसी बीच में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं और इन दोनों घटनाओं ने जर्मनी के इतिहास को एकदम बदल दिया। इनके कारण जनता का असन्तोष इतना बढ़ गया कि सरकार से कुछ करते-धरते न बना। पहिली घटना थी, मार्च १९१७ की रूसी-क्रान्ति। इस क्रान्ति ने जर्मनी के सामाजिक लोकतन्त्रवादियों में नई रूह फूँक दी। यदि रूसी जनता ज़ारशाही का नाश कर सकती थी, तो जर्मनी की जनता भी क़ैसरशाही को दफ़ना सकती थी। लोकतन्त्रवादियों ने असन्तुष्ट जनता को भड़काना प्रारम्भ किया। पार्लामेण्ट की छोटी सभा का एक साम्यवादी सदस्य मञ्च पर चढ़ गया और घोषित किया कि जर्मनी में शीघ्रातिशीघ्र प्रजातन्त्र स्थापित होगा। सभा में तूफ़ानी वाद-विवाद होने लगे। फलतः सरकार को सभा भङ्ग कर देनी पड़ी।

दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी, अमेरिका का युद्ध में शामिल होना। अमेरिका के युद्ध में शामिल होते ही जर्मनी की जनता समझ गई कि या तो युद्ध अब और भी बहुत दिनों तक चलेगा या शीघ्र ही जर्मनी की हार होगी। सरकार ने जनता से बारम्बार कहा कि अमेरिका की सेना के युद्ध-क्षेत्र में आने से पहिले ही हमारी विजय होगी, परन्तु जनता ने इस बात पर विश्वास नहीं किया।

इन दोनों घटनाओं के कारण जनता में असन्तोष की आग बुरी तरह भड़क उठी। सरकार ने भी स्थिति को सुधारने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वह सुधारों को बराबर टालती रही। वह अब भी विजय का स्वप्न देख रही थी। परन्तु शीघ्र ही उसकी आँखें खुल गईं। क्योंकि जर्मन-सेना बराबर पीछे हटने लगी। उसके जीते हुए स्थान एक के बाद एक तेज़ी से उसके अधिकार से निकलने लगे। सरकार घबरा उठी और शीघ्रातिशीघ्र शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करने लगी। अन्त में यहाँ तक नौबत आई कि उसने अमेरिका के प्रेज़िडेण्ट विलसन के पास सन्देशा भेज कर शान्ति की प्रार्थना की। इधर प्रजातन्त्रवादियों का भी ज़ोर बढ़ गया और सरकार को बाध्य होकर उनकी अधिकांश माँगें स्वीकार करनी पड़ीं। नवीन चान्सलर चुना गया। चुनाव-सम्बन्धी सुधार जारी किए गए। मन्त्रियों को पार्लामेण्ट के प्रति उत्तरदायी बनाया गया और छोटी सभा के स्थान पुनः बाँटे गए।

परन्तु सामाजिक लोकतन्त्रवादी और स्वतन्त्र साम्यवादी अब इतने ही सुधारों से सन्तुष्ट न हो सकते थे। वे पूर्ण प्रजातन्त्र चाहते थे। जर्मनी के श्रमजीवी भी उनकी माँगों का समर्थन कर रहे थे। प्रेज़िडेण्ट विलसन ने भी कहा कि जर्मनी के साथ उस समय तक रियायत न की जायगी, जब तक क़ैसरशाही का अन्त न कर दिया जावेगा। इधर कील नामक स्थान में जर्मनी के एक बेड़े ने विद्रोह कर दिया। इसके तीन दिन बाद ही बवेरिया ने भी बग़ावत का झण्डा खड़ा कर दिया। जनता ने क़ैसर से सिंहासन छोड़ देने और प्रजातन्त्र की स्थापना करने का तक़ाज़ा किया। यह विद्रोहानल बढ़ते-बढ़ते बर्लिन तक जा पहुँची। सरकार को यह आग बुझाने की हिम्मत ही न पड़ी। राजधानी को चान्सलर के अधिकार में छोड़ कर क़ैसर सेना के निवास-स्थान में जाकर छिप गया और अन्त में ९ नवम्बर को चान्सलर ने घोषणा की कि सम्राट ने सिंहासन छोड़ दिया।

इसके बाद सामाजिक लोकतन्त्रवादियों का नेता फ़्रीडरिक एबर्ट (Friedrich Ebert) नवीन चान्सलर नियुक्त किया गया। क़ैसर हॉलैण्ड भाग गया। पुराने सैनिक नेता प्राण लेकर स्वीडन या स्वीटज़रलैण्ड भाग गए। सारे देश में उलट-पलट होने लगा। राजाओं, बड़े ड्यूकों और छोटे ड्यूकों तथा शाहज़ादों ने अपने-अपने अधिकार छोड़े। उनके स्थानों पर अस्थायी कौन्सिलों की स्थापना हुई। इस प्रकार एक सप्ताह में ही जर्मनी एकतन्त्र से साम्यवाद प्रजातन्त्र में परवर्तित हो गया और तुर्रा यह कि ख़ून का एक बूँद भी नहीं गिरा।

पुरानी सरकार के स्थान पर एक अस्थायी सरकार की स्थापना की गई। एबर्ट ने छः सदस्यों की एक कौन्सिल बनाई। तीन सदस्य सामाजिक लोकतन्त्र दल के थे और बाक़ी तीन स्वतन्त्र साम्यवादी दल के। उसी समय यह भी घोषणा की गई कि जनता एक विधान-विधायिनी सभा चुनेगी और वही सभा भावी सरकार का निर्माण करेगी। जब तक भावी सरकार का निर्माण न हो जावे, तब तक उपर्युक्त कौन्सिल देश का शासन करेगी। इसी अस्थायी सरकार ने शान्ति स्थापित की।

परन्तु युद्ध समाप्त होते ही कौन्सिल में दो दल हो गए। तीन सामाजिक लोकतन्त्रवादी सदस्य केवल राजनीतिक क्रान्ति चाहते थे और जो कुछ हो गया था, उससे आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। परन्तु स्वतन्त्र साम्यवादी आर्थिक क्रान्ति भी चाहते थे। वे अपने काम को अधूरा समझते थे और आगे बढ़ना चाहते थे। जर्मनी भर में रूस की भाँति मज़दूरों और सैनिकों की कौन्सिलों का सङ्गठन किया गया। कौन्सिल में सामाजिक लोकतन्त्रवादियों की विजय हुई। स्वतन्त्र साम्यवादी कौन्सिल से अलग हो गए। उनके अलग होते ही जहाँ-तहाँ कम्यूनिस्ट विद्रोह होने लगा। एबर्ट ने रिक्त स्थानों को सामाजिक लोकतन्त्रवादियों से भर कर पूरा कर लिया और क्रान्ति दबा दी गई।

जनवरी सन् १९१९ में विधान-विधायिनी सभा का चुनाव हुआ। जर्मनी भर में चुनाव की धूम मच गई। ४२३ सदस्य चुने गए। इनमें ३९ औरतें भी थीं। दूसरे महीने वीमर (Weimer) नामक स्थान में सभा की बैठक हुई। सभा का काम था नवीन जर्मन-प्रजातन्त्र के लिए एक विधान तैयार करना।

वीमर-सभा (Weimer Assembly) में सभी पुराने दलों के प्रतिनिधि शामिल थे। सामाजिक लोकतन्त्रवादियों के १६५, यानी कुल सभा के तिहाई सदस्य थे। सभा ने शीघ्रता से कार्य आरम्भ किया। चार दिनों में भावी सरकार की एक अस्थायी योजना तैयार हो गई। एबर्ट अस्थायी प्रेज़िडेण्ट नियुक्त हुआ। फ़िलिप स्चीडमैन (Philip Scheidmann) उसका चान्सलर बनाया गया। मन्त्रि-मण्डल का भी निर्माण किया गया। सभा ने कुछ अस्थायी क़ानून भी बनाए। काम पूरा करने के लिए कुछ कमिटियाँ भी बनाई गईं।

३१ जुलाई, १९१९ को सभा ने एक विधान पास किया। ग्यारह दिन पश्चात् विधान लागू हो गया। स्वीकृति के लिए यह विधान जनता के सम्मुख नहीं रक्खा गया। यह विधान जर्मनी का वर्तमान शासन-विधान है।

पार्लामेण्ट की दोनों सभाओं के दो-तिहाई वोट से विधान में संशोधन किए जा सकते हैं। अगर बड़ी सभा, छोटी सभा द्वारा पास किए हुए किसी संशोधन को स्वीकार न करे, तो दो सप्ताह में उक्त संशोधन लागू हो जाता है, बशर्ते कि बड़ी सभा उसे जनता के सामने रखने को न कहे। परन्तु जनता के सामने जाने पर जब तक जनता संशोधन को पास न कर दे, तब तक वह लागू नहीं हो सकता। जनता स्वयं भी किसी संशोधन को एक प्रार्थना (Initiative Petition) द्वारा उपस्थित कर सकती है और तत्पश्चात् उसे वोटों (Referendum) द्वारा स्वीकार कर सकती है। पर एक संशोधन उसी समय जनता द्वारा स्वीकृत समझा जाता है, जब कुल वोटरों का बहुमत उसके पक्ष में अपनी राय दे दे। यही नहीं कि केवल वोट डालने वाले वोटरों का बहुमत ही पक्ष में हो।

विधान में कहा गया है, "जर्मनी एक प्रजातन्त्र राज्य है और जनता ही तमाम राजनीतिक अधिकारों की जननी है।" जर्मनी के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य प्रजातन्त्र होना चाहिए। उसमें एक ज़िम्मेदार मन्त्रि-मण्डल होना चाहिए। धारा-सभा का चुनाव जनता द्वारा होना चाहिए, आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Proportional Representation) के सिद्धान्त पर। उपर्युक्त बातों को मानते हुए प्रत्येक राज्य को स्वतन्त्रता है कि वह अपना विधान स्वयं तैयार कर ले और अपनी सरकार का स्वयं सङ्गठन करे।

कुछ स्पष्ट अधिकार राष्ट्रीय सरकार को दे दिए गए हैं। बाक़ी अधिकार अधीन राज्यों के हाथों में हैं। इस बारे में जर्मनी में एक विशेषता है। कुछ बातों में केवल राष्ट्रीय सरकार को ही अधिकार (Exclusive Jurisdiction) दिए गए हैं और कुछ बातें ऐसी हैं कि यदि राष्ट्रीय सरकार उनको अपने हाथ में नहीं लेती तो वह राज्यों के हाथ में चली जाती हैं। कुछ बातों में विशेष अवसरों पर राष्ट्रीय सरकार को अधिकार दिए गए हैं। कुछ बातों में राष्ट्रीय सरकार मुख्य-मुख्य सिद्धान्त निश्चित कर देती है। बाक़ी काम राज्य करते हैं। टैक्स के सम्बन्ध में राष्ट्रीय सरकार के अधिकार असीम हैं। पर यदि राष्ट्रीय सरकार राज्यों से आमदनी का कोई ज़रिया ले, तो उसे उन राज्यों की आर्थिक स्थिति का भी ध्यान रखना पड़ता है। पर कितना ध्यान रखना चाहिए, यह विधान बिल्कुल नहीं बतलाता। किन-किन बातों पर कितना और कैसे टैक्स लगाना चाहिए, यह भी विधान नहीं बतलाता।

प्रेज़िडेण्ट ही देश का उच्चतम शासक है। वह सात वर्ष के लिए चुना जाता है और दुबारा भी चुना जा सकता है। जर्मनी में वाइस-प्रेज़िडेण्ट नहीं होता। प्रेज़िडेण्ट का स्थान ख़ाली होने पर शासन का कार्य कैसे चले, यह क़ानून निश्चित करता है। क़ानून के अनुसार प्रेज़िडेण्ट के प्रथम चुनाव में विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है। यदि किसी भी उम्मीदवार को प्रथम चुनाव में विशेष बहुमत नहीं मिलता तो पन्द्रह दिन पश्चात् दुबारा चुनाव होता है। इस चुनाव में बहुमत से ही काम चल जाता है।

मार्च १९२५ में प्रेज़िडेण्ट के प्रथम चुनाव में आठ उम्मीदवार थे। उनमें से किसी को भी बहुमत नहीं मिला। पन्द्रह दिन बाद क्षेत्र में दो ही उम्मीदवार रह गए—हिण्डनबर्ग और डॉक्टर मार्क्स। हिण्डनबर्ग को दस लाख वोट अधिक मिले और वह चुन लिया गया।

उच्चतम अदालत के सम्मुख प्रेज़िडेण्ट पर मुक़दमा चलाया जा सकता है। और इस भाँति यह हटाया जा सकता है। अन्य देशों में पार्लामेण्ट की बड़ी सभा के सम्मुख देश के उच्चतम शासक पर मुक़दमा चलाया जाता है, पर जर्मनी में यह काम उच्चतम अदालत ही करती है। अवधि समाप्त होने के पूर्व प्रेज़िडेण्ट एक और उपाय से अपने पद से हटाया जा सकता है। पार्लामेण्ट की छोटी सभा (Reichstag) प्रेज़िडेण्ट को हटाने का प्रस्ताव दो-तिहाई मत से पास करती है। ऐसा होते ही प्रेज़िडेण्ट अपने पद से अस्थायी तौर पर अलग हो जाता है। तत्पश्चात् उपर्युक्त प्रस्ताव जनता के सामने रक्खा जाता है। यदि जनता बहुमत से प्रस्ताव को पास कर देती है, तो प्रेज़िडेण्ट पद से एकदम अलग हो जाता है और दूसरा प्रेज़िडेण्ट चुना जाता है। परन्तु

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

की

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा को छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—
महात्मा काउण्ट टॉल्सटॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—
प्रोफ़ेसर रुद्रनारायण जी
अग्रवाल, बी० ए०

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है; और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

'धर्म और भगवान मृत्यु-शय्या पर'

[श्री० रायज़ादा हरदेवसहाय जी, बी० ए०]

"भविष्य" के गत ३० जुलाई, १९३१ के अङ्क में एक महाशय बड़े ज़ोर-शोर से "धर्म और भगवान मृत्यु-शय्या पर" नामक लेख में अपनी विद्वत्ता और बुद्धिमानी का परिचय देते हुए धर्म और भगवान का तीव्र शब्दों में तिरस्कार करते हैं। इतना ही नहीं, उनकी दृष्टि में जो मनुष्य धर्म और भगवान से प्रेम रखते हैं, वे प्रथम श्रेणी के मूर्ख हैं।

मैं प्रथम इसके कि अपना वक्तव्य आरम्भ करूँ, ऐसे महानुभावों के साहस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता, जो ईश्वर पर भी छींटे डालने में नहीं हिचकिचाते। वास्तव में ऐसे उच्च कोटि के विज्ञान-विशारदों से सब कुछ सम्भव है। इससे पूर्व भी कई विज्ञान-विशारदों ने भगवान में लोगों की श्रद्धा को हास्यप्रद बताया है और भगवद्भक्तों को 'मूर्खता' का पुरस्कार प्रदान किया है। इसका मूल कारण यही है कि बेचारे अपने विज्ञान के बल से, जिससे वह संसार को, दुष्कर से दुष्कर वस्तु को सरल तथा सहज तथा अप्राप्त से अप्राप्त वस्तु को भी प्राप्त करने का गौरव प्राप्त करते हैं, उस परब्रह्म परमेश्वर को, सर्वव्यापी को नहीं देख सकते। बेचारे यह नहीं जानते कि वहाँ तक पहुँचाने के लिए असीम योग-बल की आवश्यकता है। भला, जिसने सारे संसार की रचना की है और जो इतना महाशक्तिशाली है, वह विज्ञाना-कला के द्वारा कैसे दृष्टिगोचर हो सकता है, वह एक छोटी-मोटी वस्तु अथवा कोई स्थूल पदार्थ नहीं है, वह एक सर्वव्यापी असीम शक्ति है। सत्यवादी, पुरुषार्थी तथा धर्म के अनुयायी ही उस तक पहुँचने में समर्थ हो सकते हैं। परन्तु विज्ञानियों को तो अपने विज्ञान पर अभिमान है, वे उसी के बल से संसार की सारी वस्तुओं को और प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को समझने का दावा करते हैं। और जब वे ईश्वर को अपने विज्ञान के द्वारा जानने में असमर्थ होते हैं, तो बस यही कह देते हैं कि ईश्वर कोई वस्तु नहीं है, यह लोगों का मिथ्या विचार है, भ्रम है। ख़ैर, अगर उपर्युक्त महानुभाव भी केवल ईश्वर पर ही आक्षेप करते, तो कोई आश्चर्य न था। परन्तु जहाँ तक मेरा अनुमान है, वैज्ञानिकों में आप पहले सज्जन हैं, जिन्होंने ईश्वर के साथ ही धर्म का भी बहिष्कार किया है। वास्तव में आपने यह नूतन वैज्ञानिक आविष्कार करके संसार का अतुल उपकार किया है।

समय का परिवर्तन बड़ा बलवान है। एक समय था, जब कि भारतवर्ष में कोई भी ऐसा न था, जो धर्म और ईश्वर से विमुख हो। लोग इन दो वस्तुओं के अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को सर्वश्रेष्ठ नहीं मानते थे। उनके हृदय में इनके लिए सच्चा प्रेम था। इनके अभाव में वे अपने जीवन को भी तुच्छ समझते थे। धर्म और ईश्वर पर वे अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने को उद्यत रहते थे। इसके अनेकानेक उदाहरण हमें प्राचीन इतिहास में मिलते हैं। प्राचीन-काल के मनुष्य यह भली-भाँति समझते थे कि अगर वे अपने धर्म से च्युत हो गए, तो फिर उनके इहलोक और परलोक दोनों नष्ट हो गए। "यतो अभ्युदय निश्रेयस्य स धर्मः" का वह पूर्ण रूप से अनुसरण करते थे। ईश्वर की आराधना में वे सदा तत्पर रहते थे। ईश्वर के प्रेमी और धर्मावलम्बी होते हुए भी उन्होंने सांसारिक कामों से मुख नहीं मोड़ लिया। वे सर्व कलाकौशल-सम्पन्न थे, जिसकी चर्चा दूर-दूर के देशों में थी। दूर-दूर से मनुष्य शिक्षा ग्रहण करने के हेतु इस देश में आते थे। उस समय भारतवर्ष उन्नति के शिखर पर था, सभी देशों की सभ्यता पर भारतवर्ष की सभ्यता की छाप थी। मैसोपोटैमिया, ग्रीस और रोम इत्यादि भी इसके सामने पानी भरते थे। इसकी शिल्प-कला, विज्ञान, चिकित्सा, सांख्य, दर्शन, राजनीति, ज्योतिष आदि जगद्विख्यात थे। विज्ञान द्वारा उन्होंने ऐसे आश्चर्य-जनक काम कर दिए थे, जिन तक आजकल के विज्ञान का पहुँचना तो दूर रहा, उसे समझने में भी वह असमर्थ है। उस समय के मनुष्य वीर, यशस्वी, तेजस्वी और विद्वान थे तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याओं में निपुण थे। वे अपने कर्तव्य, धर्म तथा जन्मदाता—ईश्वर—दोनों से भली-भाँति परिचित थे। इसीसे इतने ज्योति-स्वरूप और शक्तिशाली थे।

परन्तु यह सर्वथा सत्य और स्पष्ट है कि चिराग़ तले अँधेरा होता है। यही कारण है कि भारत जैसे धर्म-प्रधान देश में भी ईश्वर और धर्म के विरोधी दिखाई देने लगे हैं। अस्तु, श्री० कालाकाँकर-कुमार ने अपने "धर्म और भगवान मृत्यु-शय्या पर" लेख में प्रिन्सिपल श्री० बासुदेव कृष्ण ताटके जी का, जिन्होंने अपने कर्तव्य की पूर्ति में धर्म और भगवान की रक्षा के हेतु एक लेख लिखा था, बुरी तरह से मज़ाक़ उड़ाया है। और उसका मुख्य कारण वह यह बताते हैं कि अपने मत की पुष्टि में श्री० ताटके जी ने प्रमाण तो कोई दिया नहीं, वरन् इस कमज़ोरी को छिपाने के लिए जैसा कि उनकी राय में प्रायः सभी समालोचक करते हैं, लच्छेदार भाषा का प्रयोग किया है। हो सकता है, परन्तु मैं श्री० कुमार जी से यह पूछना चाहता हूँ कि इस उपदेश का उन्होंने स्वयं कहाँ तक पालन किय है? उन्होंने स्वयं अपने लेख के समर्थन में कौन से प्रमाण दिए हैं? वह किन कारणों से धर्म और भगवान को त्याग देने का उपदेश देते हैं? वास्तव में दूसरों को उपदेश देना सहज है, परन्तु स्वयं उसको व्यवहार में लाना कठिन। आगे चल कर श्री० कुमार जी स्वयं ही फ़रमाते हैं:—"जब मनुष्य पशुओं की अवस्था में थे और जब वे वाक्शक्ति और बुद्धि से रहित थे, तो उन्हें ईश्वर का भूत नहीं सताता था। तब वे पशुओं के समान प्रकृति के उपादानों के अधीन रह कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। उन्हें अपनी उदरपूर्ति के अतिरिक्त कोई चिन्ता न थी। उस समय उनमें दैवी-शक्ति का कभी आभास भी नहीं हुआ था।" ठीक, उनका कहना सर्वथा सत्य है। अब उनको धर्म और भगवान का बोध कराने के लिए किसी विशेष तर्क की आवश्यकता नहीं है। उनकी क़लम स्वयं ही इसको प्रमाणित कर रही है। वास्तव में सत्य अनिवार्य है और अन्त में उसी की विजय होती है। चन्द्रमा बादलों की कालिमा में अल्प समय के लिए ढँक जाय, परन्तु वे बादल उसको सदा के लिए नष्ट नहीं कर सकते। वह उज्ज्वल प्रकाश से मनुष्यों के हृदय को आनन्दित करता है। हर मनुष्य के अन्तःकरण में सत्य विराजमान है, भेद केवल इतना ही है कि वह अज्ञानता के वश उसको पहचान नहीं सकता। उसको पहचानने के लिए उसे अन्धकाररूपी बादल को अपने हृदय के आकाश-मण्डल से हटाना पड़ेगा। जहाँ अज्ञानता है, वहाँ सत्य का लोप होता है और जहाँ ज्ञान है, वहाँ वह प्रकट हो जाता है। अनजान में, श्री० कालाकाँकर जी इस बात को मानते हैं कि मनुष्यों को पशुओं की अवस्था में, जब कि वे वाक्शक्ति और बुद्धि से रहित थे, ईश्वर और धर्म का ज्ञान नहीं होता था। उस समय उनको उदर-पूर्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं सूझता था। दूसरे मानी में, इस पशुता से निकलने के लिए मनुष्य के लिए यह परमावश्यक है कि वह ईश्वर और धर्म को अपनाए। जो मनुष्य इनको अपमान और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं, वे पशु हैं। पशुओं और मनुष्यों का भेद इन्हीं दो वस्तुओं अर्थात् धर्म और भगवान पर निर्भर है।

ईश्वर है या नहीं? इसका बहुत सुगमता से पता चल सकता है। इस बात को मानने में किसी को भी हिचकिचाहट न होगी कि हर वस्तु का बनाने वाला कोई न कोई होना चाहिए। इसी के आधार पर हम संसार में मनुष्यों की बनाई हुई सब वस्तुओं का पता लगा सकते हैं। अब यह सोचना स्वाभाविक और आवश्यक है कि उन उपादानों (Raw Materials) का, जिन से मनुष्य ने अपने हाथ से भिन्न-भिन्न पदार्थ बनाए हैं, अथवा इस समस्त सृष्टि का रचयिता कौन है? क्योंकि रचयिता होना चाहिए अवश्य। विज्ञानकार सृष्टि की उत्पत्ति एक क्षुद्र व सूक्ष्म ज़र्रे, जिसको वह 'एटम' (Atom) प्रमाणु के नाम से पुकारते हैं, बताते हैं। थोड़ी देर के लिए मान लिया कि ऐसा ही है, परन्तु फिर यह भी पूछना अनिवार्य है कि वह एटम कहाँ से पैदा हुआ? उसको किसने बनाया? फिर, क्या अगर एटम से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि मृत्यु के पश्चात् हम सब ख़ाक में सदा के लिए नष्ट हो जायँगे? क्या हमारी इतनी कठिनाइयों से संग्रह की हुई विद्या और कीर्त्ति का परिणाम कुछ नहीं है? क्या जीवन का उद्देश्य उदर-पूर्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है? अगर सचमुच हमें अपने कर्मों का उत्तरदायी न

विश्वदर्शन

(२९वें पृष्ठ का शेषांश)

अगर जनता प्रस्ताव को बहुमत से पास नहीं करती, तो उसके मानी यह लगाए जाते हैं कि वही प्रेज़िडेण्ट दुबारा चुना गया है और वह तब से सात वर्ष तक फिर प्रेज़िडेण्ट रहता है। यही नहीं, प्रेज़िडेण्ट को हटाने का प्रस्ताव करने वाली पार्लामेण्ट की छोटी सभा फ़ौरन तोड़ दी जाती है। अगर छोटी सभा प्रेज़िडेण्ट को हटाने का प्रयत्न करती है, तो आवश्यकता पड़ने पर उसे स्वयं हटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जर्मनी के प्रेज़िडेण्ट के अधिकार फ्रान्स के प्रेज़िडेण्ट की भाँति देखने में बहुत कुछ हैं, पर वास्तव में मन्त्रियों के उत्तरदायित्व के सिद्धान्त के कारण वास्तविक अधिकार बहुत कम हैं। प्रेज़िडेण्ट के तमाम आज्ञाओं और आदेशों पर चान्सलर या मन्त्री का हस्ताक्षर होता है। हस्ताक्षर करते ही चान्सलर या मन्त्री कार्य के लिए उत्तरदायी हो जाते हैं। प्रेज़िडेण्ट क़ानूनों को कार्यान्वित करता है, शान्ति क़ायम रखता है; सिविल और सैनिक अफ़सरों को नियुक्त करता है और हटाता है; वैदेशिक नीति को सञ्चालन करता है, सन्धियाँ करता है। पर युद्ध और सन्धि के लिए छोटी सभा की स्वीकृति की आवश्यकता होती है

(अगले अङ्क में समाप्त)

विशेषांकों की धूम !! [बिना मूल्य भेंट]

साहित्य-अङ्क मूल्य १)
कला-अङ्क मूल्य २)
प्रवासी-अङ्क मूल्य १)

३० अक्टूबर तक नए ग्राहक बनने वालों को उक्त तीनों विशेषाङ्क बिना मूल्य भेंट !

"मासिक पत्रों में 'विशाल-भारत' ही एक ऐसा पत्र है, जिसके विचारों की गम्भीरता, लेखों का चुनाव और हर तरह की उपयोगी सामग्री सङ्कलित करने की परिपाटी बहुत ही उत्तम है।.........हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में 'विशाल-भारत' अपना सानी नहीं रखता—यह सर्वोत्कृष्ट पत्र है।"
—'प्रताप'

विशेषाङ्कों का पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य ६।=) मनीऑर्डर से भेजिए, या वी०पी० से मँगाइए।

'विशाल-भारत' के ग्राहक बनने वालों के लिए पुस्तकों का मूल्य घटाया गया

१ 'कुमुदिनी' (उपन्यास) ले० श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, धन्यकुमार जैन, मू० ३) ग्राहकों को २॥=)
२ 'गल्पगुच्छ' कहानियाँ— " " मू० १॥) " १।-)
३ 'षोड़शी' (कहानियाँ)— " " मू० १॥) (छप रही है)
४ 'रूस की चिट्ठी' (भ्रमण-कहानी) " " मू० १॥।) ग्राहकों को १॥-)
५ 'भेड़ियाधसान' (हास्यरस)—ले०, "परशुराम" " मू० १॥) " १।-)
६ 'लम्बकर्ण' (सचित्र हास्य)— " " मू० १।) " १=)
७ 'प्रेम-प्रपञ्च' (उपन्यास)—ले० तुर्गनेव; अनुवादक, जगन्नाथप्रसाद मिश्र, बी० ए०, मू० १।) " १=)
८ 'मुसोलिनी और नवीन इटली'—ले० पी०एन० राय; अनुवादक ब्रजमोहन वर्मा, मू० २॥) (छप रही है)

पता—'विशाल-भारत' कार्यालय, १२०।२, अपर सरकूलर रोड, कलकत्ता

जक्सन लीवर रिस्टवाच २॥।) में

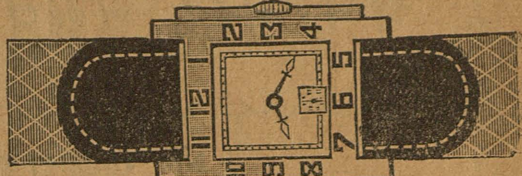

यह हाथ-घड़ी अभी विलायत से बन कर आई है। देखने में अति सुन्दर और चलने में मज़बूत, क़ीमत में कम, दूसरी घड़ी आपको न मिलेगी, मौक़ा न चूकें, वरना पछताना पड़ेगा। क़ीमत २॥।); एक साथ तीन मँगाने से पै० पो० माफ़, ६ लेने से एक टेबुल टाइमपीस और १२ लेने से एक यही रिस्टवाच इनाम मिलेगी। हर घड़ी की गारण्टी १० साल और रेशमी बैन्ड मुफ़्त दिया जायगा।

पता—
भारत यूनियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी
पो० बक्स २३९४ से ७ कलकत्ता

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहोगे बन जाओगे जिस की इच्छा करोगे मिल जावे गा मुफ़्त मंगवाओ पता साफ़ लिखो।
गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

दबा दाद
बदबू, जलन आदि से रहित
२४ घंटे में दाद को खोनेवाली
की० एक दर्जन१=) डा० ख० ।=)
पता:-चन्द्रसेन एण्ड को० इटावा नं० ७

असल रुद्राक्ष माला

-) आना का टिकट भेज कर १० दाना नमूना तथा रुद्राक्ष-माहात्म्य मुफ़्त मँगा देखिए।
रामदास एण्ड को०
३ चोरबागान स्ट्रीट, कलकत्ता

यदि धन और ज़ेवर सुरक्षित नहीं

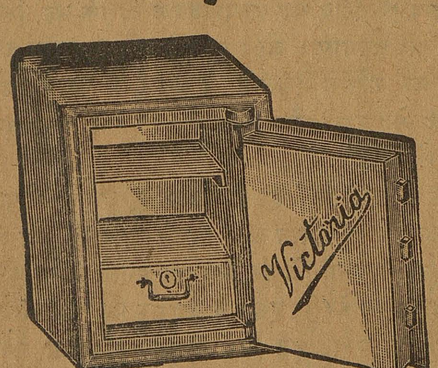

हैं तो आज ही हमारे कारख़ाने का अङ्गरेज़ी सूचीपत्र मँगाइए। इस कारख़ाने में हर तरह की, हर साइज़ की और हर दाम की लोहिया तिजोरी, अलमारी, टैंक्स् (ऑइल इञ्जिन) के लिए तथा घरू काम के मिलते हैं, मज़बूत ताला-चाबी भी मिलता है। यह तिजोरी ऐसी है कि चोर लाख कोशिश करे, मगर तोड़ नहीं सकता, न आग में जल सकती है।

जी० घोष एण्ड को, ६४ हरीसन रोड, कलकत्ता

मुश्क की
अत्यन्त आश्चर्यजनक .ख़ुशबू

इस "मुश्क-सोप" का रङ्ग, उसकी सुगन्धि, पवित्रता और स्पर्श-मात्र अत्यन्त सुखदायक है।

नेशनल सोप एण्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड

फ़ैक्टरी :—
१०८ ए०,
राजा दिनेन्द्र स्ट्रीट

ऑफ़िस :—
७, स्वैलो लेन,
कलकत्ता

२०वीं सदी का आश्चर्य

यह एक लीवर जेबी घड़ी है और उसके साथ इक्स्ट्रा "जार प्रूफ़ मूवमेण्ट" और कभी न टूटने वाला शीशा भी है।

५ साल की गारण्टी

घड़ी कैसी है, इस बात की परीक्षा लेने के लिए इसको कहीं मज़बूत ज़मीन पर पटक दीजिए। अगर इसकी कोई मशीन या शीशा टूट जाय तो उसको वापस कर दीजिए।

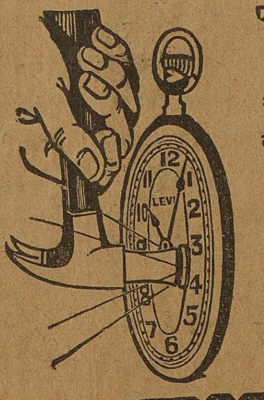

पसन्द न होने पर दाम वापस

क़ीमत सिर्फ़ २।-); डाक-महसूल ६ आने अलग; तीन घड़ी एक साथ लेने से डाक-महसूल माफ़ और ६ घड़ी एक साथ लेने से एक घड़ी मुफ़्त में मिलेगी। इस पते से पत्र-व्यवहार कीजिए :—

दि यङ्ग इण्डिया वाच कम्पनी,
१ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता

होना पड़ेगा, तो फिर क्यों न हम ख़ूब मज़े उड़ाएँ और मनमाना अत्याचार करें ? क्या हमें जीवन के बाद समूलोच्छेद न होना पड़ेगा ? आज ही लोगों को ऐसा विश्वास हो जाय तो फिर देखिए, संसार में अनाचारों व दुष्कर्मों का रङ्ग। इससे हमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि संसार की उत्पत्ति एटम या ऐसे ही अन्य पदार्थ से नहीं हो सकती। संसार का बनाने वाला, अवश्य कोई बुद्धि वाला, गुण वाला तथा शक्तिशाली है, जिसने हमें जीवन प्रदान कर उसको व्यतीत करने में पूर्ण स्वतन्त्रता दी है। परन्तु हमारे सब कामों का निश्चय होना अवश्य है। हमारे सब कामों को वह अपने अनेक नेत्रों से देखता है और इसीलिए पूर्ण स्वतन्त्रता होते हुए भी हम मनमाना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। हमें धर्म के अनुकूल ही चलना पड़ेगा, प्रतिकूल नहीं। ईश्वर से डर कर ही हर एक कार्य को करना पड़ेगा, निडर होकर नहीं।

पाठक हँसे बग़ैर नहीं रह सकेंगे कि श्री० कुमार जी धर्म और ईश्वर की उत्पत्ति 'स्वप्न' से बताते हैं। यह विज्ञानकारों में ध्रुव तारे की भाँति अलग जगमगाते हैं। मालूम होता है कि इनके वेद-शास्त्र पृथक् ही हैं। आप फ़रमाते हैं कि जिस समय मनुष्यों को रात्रि में अपने पिता अथवा मुखिया स्वप्न में दिखाई दिए, तो वह "स्वप्न के वास्तविक कारण न जानने से यही समझने लगे कि इस संसार के अतिरिक्त दूसरा संसार भी है।" इस प्रकार, उनके कथनानुसार, धर्म और भगवान का बीज मनुष्यों के हृदयों में बोया गया। इन बातों से मालूम होता है कि कुमार जी ने पाश्चात्य विद्वानों की सुनी सुनाई बातों पर ही विश्वास करके यह बात लिख मारा है, ईश्वर के सम्बन्ध में स्वयं कुछ जानने की चेष्टा नहीं की। वास्तव में ईश्वर को मानने का कारण स्वप्न नहीं, वरन् वर्तमान संसार है।

मेरा अभिप्राय इस लेख को लिखने का विज्ञान पर आक्षेप करना किञ्चित-मात्र नहीं है। विज्ञान ने अपने स्थान पर जो लाभ संसार को पहुँचाया है, उसको मैं हृदय से मानने के लिए तैयार हूँ। परन्तु जब यह दूसरों के कार्यक्षेत्र में भी पैर पसारने का प्रयत्न करता है, जैसा कि उक्त महोदय ने कहा है, तो यह घोर प्रतिवादन के योग्य है। ऐसे मनुष्यों को मैं विज्ञान के अन्ध-हिमायती ही कहूँगा। सर औलाइवर लौज (Sir Oliver Lodge) लिखते हैं :—

"When it (Science) endeavours to conclude that its scope is complete and all-inclusive, that nothing exists, in the universe but mechanism, and that the aspect of things from a scientific point of view is their only aspect—then it is becoming narrow and bigoted and deserving of rebuke."

अर्थात—"जब यह (विज्ञान) यह समझने का साहस करता है कि इसकी सीमा सबके अन्तर्गत है, कि इसके बाहर संसार में अन्यथा कुछ नहीं है, अथवा इसके रूप से ही चीज़ों की कल्पना ठीक है—उस समय यह सङ्कीर्ण व सङ्कुचित हो रही है और अपमान के योग्य है।"

अन्त में मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि धर्म के विरोधियों को वह सुबुद्धि दे, ताकि उनकी वह अज्ञानता, जिसके अधीन वह व्यर्थ के तर्क-वितर्क में पड़ जाते हैं और भले व बुरे के भेद से विस्मरण हो जाते हैं, दूर हो।

* * *

भारतवर्ष के जेलख़ाने

[श्री० विश्वम्भरसहाय जी 'विनोद', बी० ए०, एसिस्टेण्ट एडिटर 'टुडे']

गत अहिंसात्मक युद्ध के फल-स्वरूप भारतवर्ष की कारागार-समस्या हमारे सामने और भी नग्न रूप में आ उपस्थित हुई है। जेलख़ाने, जो दूसरे सभ्य देशों में सुधार-गृह (Reformatory) के नाम से विख्यात हैं, हमारे देश में उसका बिल्कुल उलटा है। जो नवयुवक तथा नेतागण जेलख़ानों से लौटे हैं, वे अच्छी तरह बतला सकते हैं कि वहाँ मनुष्य को जानवर बनाने में कोई कमी नहीं की जाती। यदि इन बन्दी-गृहों को 'पशु-गृह' (Cattle House) भी कहा जाय, तो कोई अत्युक्ति न होगी। पिछले चार मास हुए, मद्रास-कौन्सिल में वहाँ की सरकार ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह एक कमिटी बना कर अपने प्रान्त के जेलख़ानों की जाँच कराएगी। ऐसी ही प्रतिज्ञा भारत-सरकार ने भी कुछ दबी ज़बान से की थी। परन्तु अभी तक कुछ नहीं हुआ; कोई कमिटी इत्यादि नहीं बनी। इससे प्रतीत होता है कि गवर्नमेण्ट इस प्रकार की जाँच के लिए अन्दर से तैयार नहीं है। बम्बई के एक सुप्रसिद्ध अङ्गरेज़ी दैनिक पत्र ने अपने ३१ मई, सन् १९३१ के अङ्क में इस विषय पर टिप्पणी करते हुए लिखा था—"भारत के जेलख़ानों की समस्या का शीघ्र से शीघ्र संशोधन होना चाहिए। जनता ने बहुत समय तक इस बुराई को बर्दाश्त किया, अब यह असहनीय हो गई है। परन्तु नौकरशाही यह कभी भी स्वीकार न करेगी कि इस विषय में रूस से सहायता ली जाय, कारण कि हमारी सरकार तो अपने घमण्ड में ही चूर है।"

इससे पूर्व कि हम आगे कुछ लिखें, कुछ शब्दों में यह बता देना चाहते हैं कि जेलख़ानों की आवश्यकता क्यों होती है ? प्रत्येक देश की सरकार का और कर्तव्यों के साथ-साथ यह कर्तव्य होता है कि देश में शान्ति रहे, शान्ति क़ायम रखने के नियमों को जो भङ्ग करे, उसे दण्ड दिया जाय तथा दण्ड स्वरूप उसे कारागार में बन्द किया जाय। परन्तु विलायत का "माई मैगज़ीन" (My Magazine) अपने अक्टूबर की संख्या में लिखता है—'जेलख़ाना एक भयानक शब्द है। संसार के सभ्य लोगों की इसके प्रति घृणा दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जनता का विश्वास इस पर से हटता जा रहा है कि इससे पतित मनुष्य का सुधार हो सकता है। एक समय ऐसा था कि पाँच-पाँच शिलिङ्ग की चोरी के लिए मनुष्यों को प्राणदण्ड दिया जाता था। ऐसे लोगों को क़तारों में खड़ा करके गोली से मार दिया जाता था। भेड़ चुराने तक के लिए प्राणदण्ड निश्चित था। मनुष्य को इस बात पर ही सूली पर लटका दिया जाता था कि उसने दूसरे मनुष्य के घर में सेंध क्यों लगाई।"

इङ्गलैण्ड में यह दशा सन् १८६१ तक रही। जनता ने जेलख़ाने के पाशविक नियमों का कड़ा विरोध किया। अन्त में सन् १८६१ में कुछ बातों को छोड़ कर प्राणदण्ड लगभग उठा ही लिया गया। अमर शहीद श्री० जोहन होवर्ड तथा एलिज़बेथ फ़्राई ने आजीवन यह प्रयत्न जारी रक्खा कि इङ्गलैण्ड के जेलख़ानों में सुधार हो, और महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में बहुत से सुधार हुए भी। इतना ही नहीं, चार्ल्स डिकेन्स तथा चार्ल्स रीड ने इस विषय पर बहुत से लेख लिखे तथा लोकमत को सङ्गठित किया कि इन "पशु-गृहों" का सुधार किया जाय। जेलख़ानों का सुधार कराने के लिए बहुत से नवयुवकों ने जेल-यन्त्रणाएँ भोगीं; परन्तु अपने मार्ग से च्युत नहीं हुए। इस सब यत्न का फल यह हुआ कि इङ्गलैण्ड के जेलख़ानों में बहुत से सुधार हो गए हैं। वहाँ की सरकार अपना यह कर्तव्य समझती है कि मार्ग से विचलित मनुष्य, जो कारावास में आते हैं, उनका उचित सुधार किया जाय। उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है, उनके स्वास्थ्य का पूर्णतया ध्यान रक्खा जाता है, उन्हें समाचार-पत्र पढ़ने को दिए जाते हैं और बहुत सी सुविधाएँ उन्हें पहुँचाई जाती हैं। क्या हमारी सरकार इन अनुभवों से लाभ नहीं उठा सकती ? उठा सकती है। लेकिन इसको क्या ग़रज़, जो इन व्यर्थ की बातों में अपनी मग़ज़पच्ची करे। कहा यह जाता है कि राज्य-कोष में धन की कमी है; नहीं तो न जाने हम क्या-क्या कर देते। क्या कभी कोई समय ऐसा था अथवा आएगा, जब कि धन की कमी न होगी ? लेकिन नहीं, यह बहाना है। इसे कौन नहीं समझता। इङ्गलैण्ड के जेलख़ानों में एक क़ैदी दूसरे क़ैदियों के ऊपर अफ़सर या वार्डर नहीं बनाया जाता। इस कार्य के लिए अलग से संरक्षक नियुक्त किए जाते हैं। सरकारी अस्पताल का सिविल-सर्जन जेलख़ाने का सुपरिण्टेण्डेण्ट नहीं बनाया जाता। दोनों व्यक्ति भिन्न-भिन्न होते हैं। एक का कर्तव्य होता है, जेलख़ाने में शान्ति स्थापित रखना तथा दूसरा यह देखता है कि किसी क़ैदी का स्वास्थ्य तो ख़राब नहीं होता। परन्तु यहाँ एक ही व्यक्ति से दोनों काम लिए जाते हैं। क्या भारत-सरकार नहीं समझती कि हमारे देश के जेलख़ाने नरक बने हुए हैं; इनके सुधार का कोई उपाय सोचा जाय। घोर आन्दोलन के पश्चात् सन् १९१८ में भारत-सरकार ने एक कमिटी देश भर के जेलख़ानों की जाँच के लिए बैठाई थी। कमिटी की सिफ़ारिशें भी निकल गईं। सब कुछ हो गया। लेकिन आज १३ वर्ष व्यतीत हो गए, जेलख़ाने के रङ्ग-ढङ्ग में कोई भी तबदीली नहीं हुई।

इस कमिटी के प्रधान सर अलेक्ज़ैण्डर कार्डिव नियुक्त किए गए थे। २२ अक्टूबर, सन् १९२३ को इस कमिटी ने अपनी जाँच पूरी की। लन्दन के 'पूर्व भारत-सङ्घ' के सम्मुख अलैक्ज़ैण्डर महाशय ने 'भारत के जेलख़ानों' पर एक निबन्ध पढ़ा था। आपका कहना था—"भारत के जेलख़ानों में ३०-४० वर्ष के अन्दर क़ैदियों के रहन-सहन में तो तरक़्क़ी हुई है, लेकिन उनके चरित्र-सुधार के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया गया। साथ ही भारत के उन अधिकारियों ने, जो जेल की देख-भाल के लिए नियुक्त हैं, यूरोप और अमेरिका के जेल-सुधार-विभागों से कोई लाभ नहीं उठाया। फल यह हुआ है कि भारत के जेलख़ाने क़ैदियों का लाभ पहुँचाने की अपेक्षा हानिप्रद साबित हुए हैं।" सर एडवर्ड हैनरी, जो कभी बङ्गाल-सरकार में नौकरी कर चुके थे, उस सभा

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

गीतावली (इं० प्रे०) १)
तुलसी ग्रन्थावली (बेल० प्रे०) ४)
दादूदयाल की वाणी (इं० प्रे०) ॥)
” ” (”) १)
नयनामृत प्रवाह (ब० प्रे०) ॥)
पूर्तिप्रमोद (”) ।=)
भूषण ग्रन्थावली (हिं० मं०) १।)
मेघदूत (लक्ष्मणसिंह) ॥=)
रहिमन शतक (रहीम) (बेल० प्रे०) =)
रहीम (हिं० मं०) ≡)
रामचरित मानस (इं० प्रे०) ३॥)
” ” (सटीक) (”) ६)
” ” (हिन्दी पु० ए०) १॥।=)
रामायण (सटीक) (ज्वालाप्रसाद) ४)
” ” (रामेश्वर) ४)
” (बेल० प्रे०) ४॥), ६)
रामायण (सटीक) (न० कि० बु० डि०) १०)
वृन्द सतसई (मे० चं० ब० दा०) ॥।)
विद्यापति की पदावली (इं० प्रे०) २)
विनय-पत्रिका (सटीक) (वियोगी) २॥), २॥।), ३)
” ” (बेल० प्रे०) २॥), ३)
” ” (रा० ना० बा०) २)
विहारी सतसई (न० कि० प्रे०) १=)
विहारी सतसई (पद्म-सिंह) (दो भाग) ४॥)
व्यङ्गार्थ कौमुदी (ब०प्रे०) ।)
संक्षिप्त सूरसागर (इं० प्रे०) २॥)
सुन्दर विलास (बेल० प्रे०) १-)
सूक्ति-सरोवर (मि० बं० का०) २॥)
सूक्ति-सुधा (हिं० मं०) १)
सूर-पञ्चरत्न (रा० ना० बा०) १॥)
हिन्दी में मुसलमान कवि (ब० प्रे०) १॥।)

२—वर्तमान कवियों की कविता-पुस्तकें

(क) पं० श्रीधर जी पाठक की पुस्तकें

ऊजड़ ग्राम ।=)
आराध्य शोकाञ्जलि ।≡)
एकान्तवासी योगी ≡)
काश्मीर-सुषमा =)
गोखले गुणाष्टक =)
देहरादून ।=)
श्रान्त पथिक ।)

(ख) बाबू मैथिलीशरण गुप्त कृत

अनघ ॥।)
किसान ।=)
जयद्रथ-बध =)
झङ्कार ॥=)
पत्रावली ।-)
पलासी-युद्ध १॥)
पञ्चवटी ।=)
भारत-भारती १), २)
मेघनाद-बध ३॥)
रङ्ग में भङ्ग ।)
विरहिणी ब्रजाङ्गना ।)
वीराङ्गना ॥।)
वैतालिक ।)
शकुन्तला ।=)
शक्ति ।)
स्वदेश-सङ्गीत ॥।)
हिन्दू ॥)

(ग) पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत

काव्योपवन (ख० वि० प्रे०) ॥।)
चुभते चौपदे १॥)
चोखे चौपदे १॥)
पद्य-प्रसून १॥)
पद्य-प्रमोद ॥।)
प्रिय-प्रवास २।)

(घ) अन्यान्य सुकवियों के काव्य-ग्रन्थ

अनाथ (सियारामशरण) ।)
अनामिका (सु० ग्रं० प्रे० मं०) ।=)
अन्त्याक्षरी (मि० बं० का०) ॥।)
अहिरावण-बध (राधे-श्याम) ≡)
आत्मार्पण (गं० पु० मा०) ॥)
एकतारा (हिं० सा० भ०) १)
कविता-कलाप (इं० प्रे०) ३)
कविता-कौमुदी (द्वितीय) ३)
कीचक-बध (वर्मन) ॥=)
कुमार-सम्भव (इं० प्रे०) ।)
गङ्गावतरण (इं० प्रे०) ॥।), १)
ग्राम्य गीत (हिं० मं०) ३)
चयनिका (रा० ना० बा०) ॥)
जज़बाते-बिस्मिल (दो भा०) (अभ्यु० प्रेस) २)
तृप्यन्ताम् (ख० वि० प्रे०) ≡)॥
त्रिशूल-तरङ्ग (प्रका० पु०) ॥=)
दूर्वादल (सियाराम-शरण) ॥=)
दुर्गा-चरित्र (राधे-श्याम) ≡)
नवीन बीन (हिं० पु० भं०) २)
निर्माल्य (,,) १)
पल्लव (इं० प्रे०) २)
प्रह्लाद चरित्र (रा० श्या०) ।)
प्रेम-पुष्पाञ्जलि (,,) ॥=)
वीर सतसई (सा० भ० बि०) ।)
बूढ़े का ब्याह (हिं० ग्रं० र०) ।=)
भीष्म-पराक्रम (रा० श्या०) ।)
भीष्म-प्रतिज्ञा (रा० श्या०) ।)
मन की लहर (प्रताप ना०) ≡)॥
मानसी (हिं० मं०) ।)
मीठी गुञ्जार (रा०श्या०) =)
मेघदूत (इं० प्रे०) ॥)
मौर्य-विजय (सियाराम०) ।)
राधेश्याम-कीर्तन (रा० श्या०) ॥)
राधेश्याम गीता (,,) १=)
राधेश्याम रामायण (,,) ४)
,, ,, महाभारत (,,) ॥।)
राष्ट्रीय गान (चाँ० का०) ।)
राष्ट्रीय झङ्कार (दो भाग) १)
राष्ट्रीय वीणा (,,) १)
वीणा (इं० प्रे०) १)
वीर पञ्चरत्न (व० प्रे०) २॥।), ३)
श्यामायन (राधेश्याम) ॥)
श्रीकृष्ण उपदेश (पु०भं०) ॥)
श्रीमद्भगवद् गीता (हिं० प्रे०) ॥=)
” ” (गी० प्रे० गोरखपुर) १।)
” ” (,,) ॥≡), ॥।=)
सत्यनारायण-कथा (रा० श्या०) ।)
सुदामा-चरित्र (रा०श्या०) ।)
स्वप्न (हिं० मं०) ॥)

३—सन्तबानी संग्रह

हर एक महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया हुआ है।

कबीर-साखी-संग्रह १=)
कबीर साहब की अखरावती =)
कबीर साहब की ज्ञान-गुदड़ी ।=)
कबीर साहब की शब्दावली
” (पहिला भाग) ॥।)
” (दूसरा भाग) ॥।)
” (तीसरा भाग) ।≡)
” (चौथा भाग) ≡)
केशवदास की अमी-घूँट -)।
ग़रीबदास जी की बानी १।-)
गुरु नानक की प्राणसङ्गली
” (पहला भाग) १॥)
” (दूसरा भाग) १॥।)
गुलाल साहब की बानी ॥।=)
चरनदास की बानी ॥।-)
” (दूसरा भाग) ॥।)
तुलसी साहब की शब्दावली १=)
” ” (दूसरा) १॥)
दरिया साहब (बिहार वाले) ।-)
दरिया साहब (मारवाड़) ।≡)
दादूदयाल की बानी १॥)
” ” (दूसरा भाग) १।)
पलटू साहब (भाग १) ॥।)
” ” (भाग २) ॥।)
” ” (भाग ३) ॥।)
बाबा मलूकदास ।)॥
बुल्ला साहब ।)
भीखा साहब ॥=)॥
यारी साहब =)
रैदास जी की बानी ॥)
सन्तबानी-संग्रह (भाग १) साखी तथा जीवन-चरित्र १॥)
सन्तबानी-संग्रह (भाग २) १॥)

अय्यारी, तिलस्मी, जादूगरी, जासूसी और डकैती आदि विषय के उपन्यास

अनोखा जासूस (भा० दा० सं०) २)
अभागे का भाग्य (ब० बु० डि०) ३)
अमीरअली ठग (व० प्रे०) ॥।=), १।=)
अरब सरदार (व० प्रे०) ॥)
अर्थ में अनर्थ (ब० बु० प्रे०) १॥=)
अङ्गरेज़ डाकू (व० प्रे०) ॥=)
आहुतियाँ (छा० हि० पु०) ॥।)
आफ़त की पुड़िया (हिं० पु० ए०) १॥)
काजर की कोठरी (ब० बु० डि०) ॥।)
कापालिक डाकू (व० प्रे०) १॥), २)
काला कुत्ता (व० प्रे०) ॥)
काला साँप (,,) ।=)
क़िले की रानी (ब० बु० डि०) ॥।)
कुसुमकुमारी (,,) १।)
कृष्णवसना सुन्दरी (नि० चं०) १॥।), २।)
क़ैदी की करामात (ब० प्रे०) १॥), २)
ख़ूनी औरत (ब० प्रे०) १।)
खोई हुई दुलहिन (ब० प्रे०) ।)
गुप्त गुफा (ब० प्रे०) १॥), २)
गुलबदन (व० प्रे०) १॥), २)
गुलाब में काँटा (,,) १॥), २।)
गङ्गाजमुनी (हिं० पु० ए०) ४॥)

के अध्यक्ष। आपने अपना अन्तिम भाषण देते हुए कहा था—"भारतवर्ष में जेलख़ानों की दशा अत्यन्त शोचनीय है, जब मैं प्रथम बार भारत में गया था, जेलख़ानों में हज़ार पीछे ८० मनुष्य के मरने की रिपोर्ट आती थी। इतना सुधार अवश्य हुआ कि वह संख्या ८० से २० उतर आई, परन्तु .कैदियों के चरित्र-सुधार में कोई तबदीली नहीं हुई। जेल में .कैदियों को ही दूसरे क़ैदियों के ऊपर अफ़सर बनाने का तरीक़ा भी ठीक नहीं है। इसमें भी सुधार होने की आवश्यकता है। वेतन देकर संरक्षक रक्खे जायँ तो कहीं अच्छा हो, लेकिन धन की कमी कुछ नहीं करने देती।" इत्यादि, इसे तो सरकारी अथवा नीम सरकारी मत समझिए। अब यदि आप उन लोगों के बयान पढ़ें, जो पिछले युद्ध के शिकार हुए थे, जिन्हें अपने बङ्गले-कोठियाँ छोड़ कर अङ्गरेज़ी सरकार के मेहमान बनने का मौक़ा मिला था, तो आप अपने दाँतों तले उँगली दबाएँगे कि आख़िर जेलख़ानों में इतना अन्याय क्यों है?

सर अलैक्ज़ैण्डर कार्डिव ने इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया था कि "भारत की स्थिति ही कुछ निराली है, यहाँ .कैदी ही उपयुक्त अफ़सर समझा गया है। वह वार्डर होने पर दूसरे .कैदियों को दबा कर रख सकता है।" वास्तव में देखा जाय तो जो .कैदी वार्डर बनाए जाते हैं, वह प्रायः ऐसे होते हैं जो कड़ी-कड़ी सज़ाएँ काटने को जेलों में आते हैं; जिनमें न कोई शिक्षा होती है, और न सभ्यतापूर्वक किसी से बोलना ही जानते हैं। दीवान-बहादुर केशव पिल्ले ने एक जेलख़ाने का निरीक्षण करने पर निम्न-लिखित मत प्रकट किया था—"जब मैं जेल में निरीक्षणार्थ पहुँचा, तो एक क़ैदी वार्डर को, जो साफ़ा और पायजामा पहने था, देखा। उसके हाथ में एक बड़ा मज़बूत बेत था और वह कुछ दूसरे क़ैदियों से, जिसमें हिन्दू-मुसलमान दोनों थे, काम ले रहा था। मैंने उससे पूछा, तुम यहाँ कैसे आए? उसका उत्तर था—'मैं डोम जाति का हूँ, हमारा पेशा कला करने का है। मुझे डाके में चार साल की सज़ा मिली है।' देश के भले-भले मनुष्यों और स्त्रियों को, जो एक विशेष ध्येय के लिए जेलों में गए थे, इसके निरीक्षण में रक्खा जाता है। साधारण .कैदी बेड़ियाँ पहना कर खेतों में काम करने भेजे जाते हैं। इनकी देख-भाल के लिए इन्हीं में से किसी को ओवर्सियर बना दिया जाता है। यह ओवर्सियर दूसरे .कैदियों से कुछ अच्छे वस्त्र पहनता है। इनके ऊपर .कैदियों में से ही वार्डर होता है, इसी को जेलख़ाने का भैरव समझना चाहिए। यहाँ तक इसका आतङ्क जेल में छाया रहता है कि मामूली जेल-अफ़सर भी इससे दबते हैं, क्योंकि इसकी पहुँच बड़े-बड़े अफ़सरों तक रहती है। अफ़सर लोग यदि दिन को रात और रात को दिन कहें तो इसका उत्तर यही होगा कि 'हुज़ूर, मैं भी ऐसा ही सोच रहा था।' कहने का तात्पर्य यह है कि वह लोग इससे जो चाहे सो काम ले सकते हैं। जेलख़ाने में शान्ति क़ायम रखने के ढोंग में जो चाहे किया जाय, कोई कुछ कहने वाला नहीं! वहाँ 'अमन' के अर्थ किए जाते हैं कि चाहे अफ़सर लोगों की कैसी ही अनुचित आज्ञा हो, उसको ज्यों का त्यों काम में लाना। यह .कैदी वार्डर अफ़सरों का दाहिना हाथ समझा जाता है। इसे कुछ थोड़े से पैसे भी, तनख़्वाह के रूप में दिए जाते हैं। इसे काम भी मामूली ही करना पड़ता है। जब कभी कोई निकृष्ट काम जेल में होता है, तो इसकी आवश्यकता पड़ती है, अर्थात् किसी को पीटना था जब कभी और कोई भयानक कष्ट पहुँचाना हो।"

श्रीयुत रावेश्वकर शुक्ल जी अखिल भारतवर्षीय स्वतन्त्रता-सङ्घ के प्रधान थे तथा शाहपुर नमक-सत्याग्रह के नेता थे। वे जेल से लौटने पर लिखते हैं—"मैं लगभग ४ महीने यरवदा जेल में रहा, मुझे मुख्य जेल तथा कैम्प-जेल दोनों का अनुभव है। 'सी' क्लास के .कैदियों के साथ जिस असभ्यता तथा सख़्ती का बर्ताव किया जाता था, उसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति के बाहर है। जो चोरी, डाके तथा जारी के जुर्मों में सज़ा पाकर जेलख़ाने में आए थे, वे इनके अफ़सर बनाए जाते थे। देश के सम्मानित नेता तथा पुरुष इनके हाथों से ठुकते थे। इन वार्डर लोगों को सत्य का अवतार माना जाता है। इनके सामने सब मनुष्य झूठ समझे जाते हैं, चाहे वह कितने ही शिक्षित तथा सम्मानित क्यों न हों।" एक दूसरे राजनैतिक क़ैदी, जो युक्त-प्रान्त की जेल में रह चुके थे, अपने वक्तव्य में कहते हैं—"राजनैतिक .कैदियों के ऊपर .कैदियों में से ही ओवर्सियर नियुक्त कर दिए जाते हैं। उन्हें सदैव यह डर लगा रहता है कि न जाने यह अफ़सर कब किस क़सूर पर डण्डा रोल दे।" प्रमाण पर प्रमाण इस दारुण कथा के दिए जा सकते हैं, लेकिन क्या लाभ, कोई सुनने वाला ही नहीं। इस पर तुर्रा यह है कि इसमें अङ्गरेज़ों का क्या दोष, बहुधा जेलख़ाने के सुपरिण्टेण्डेण्ट हिन्दुस्तानी ही होते हैं। वह यदि चाहें तो अपने भाइयों के सुधार की बातें कर सकते हैं। यह कौन कहता है? गोरे अख़बार। मेरठ में, जो कभी सेन्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट रह चुके थे, एक बार बातचीत करते हुए बोले कि माना अधिकार हमको है, लेकिन हम इन्सपेक्टर जनरल की आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं कर सकते। यह उनके अधिकार हैं!

अब हम आपको पश्चिम के जेलख़ानों का दिग्दर्शन कराएँगे। वहाँ क्या हालत है? अमेरिका एक प्रजातन्त्र राज्य समझा जाता है। होना यह चाहिए था कि वहाँ जेलख़ानों की दशा सर्वोत्तम होती, लेकिन ऐसा नहीं है, फिर भी भारतवर्ष से तो हज़ार गुना वहाँ क़ैदियों के सुधार का ध्यान रक्खा जाता है। जब क़ैदी जेल में दाख़िल होता है, उसे नीच, अधम, पशु नहीं समझा जाता, उसके साथ मनुष्यता का बर्ताव किया जाता है। जेलख़ाने में देश भर के प्रमुख पत्र आते हैं, क़ैदियों के विभाग उनके अमीर-ग़रीब होने पर निश्चित नहीं किए जाते, बल्कि उनकी योग्यता देखी जाती है कि कौन किस श्रेणी में रक्खा जाय। हमारे यहाँ अमुक क़ैदी की हैसियत क्या है, क्या इसकी सालाना आमदनी है, इत्यादि बातों को देख कर उसको श्रेणी-बद्ध किया जाता है। जेलख़ानों में गिरजे बने हुए हैं, जो क़ैदी चाहे रविवार को ईसा मसीह की आराधना-पूजा गिरजे में जाकर कर सकता है। हर एक जेलख़ाने में एक पुस्तकालय होता है, जिसमें साधारणतया चरित्र-सुधार विषय पर पुस्तकें रक्खी जाती हैं। यदि क़ैदी चाहता है कि बाहर से पुस्तकें मँगा कर पढ़ें तो भी पूरी सहायता की जाती है। किसी क़ैदी पर डण्डे की मार नहीं पड़ सकती, नियम भङ्ग करने पर यथावत् दण्ड दिया जाता है। जहाँ तक भोजन से सम्बन्ध है, साधारण क़ैदियों को जेलख़ाने में अपने घर से अच्छा भोजन मिलता है। इङ्गलैण्ड में अमेरिका से अधिक सुविधाएँ क़ैदियों को पहुँचाई जाती हैं, कुछ क़ैदी तो ऐसे भी होते हैं, जिनको पुलिस की संरक्षता में अपने सम्बन्धियों से घर पर भी मिलने जाने की सुविधा है। सब से बड़ी जो बात वहाँ के जेलख़ानों में देखी जाती है, वह है आपस का विश्वास। यदि .कैदी से जेलख़ाने के अन्दर कोई क़सूर हो जाता है, तो वह झूठ नहीं बोलता। पूछने पर सच-सच कह देता है। .कैदी की बात का विश्वास किया जाता है। यदि वह क़सूर करता है, तो उसे स्वीकार कर लेता है, और यदि नहीं तो साफ़-साफ़ कह देता है कि नहीं। फिर किसी की हिम्मत नहीं कि उसका अविश्वास करे। इससे भी अच्छी हालत आप यूरोप के दूसरे देशों में पाएँगे। फ़्रान्स, जर्मनी तथा रूस, इन देशों में जेलख़ानों का प्रबन्ध करने में बड़ी मेहनत की जाती है। अफ़सर लोग बड़े प्रेम से .कैदियों को सुधारना अपना कर्तव्य समझते हैं। रूस के जेलख़ानों की दशा इन सब में उत्तम समझी जाती है। वहाँ सफ़ाई का बड़ा ध्यान रक्खा जाता है। इतना ही नहीं, यदि बाहर की संस्थाएँ भी जेल-अफ़सरों को किसी रूप में .कैदियों के सुधारने के हेतु कुछ सहायता देना चाहें, तो वह बड़े धन्यवादपूर्वक स्वीकार की जाती है। फ़्रान्स और जर्मनी में तो ऐसा भी है कि सार्वजनिक, धार्मिक अथवा सामाजिक संस्थाएँ यदि जेलख़ाने में जाकर धर्म-प्रचार करना चाहें, तो उन्हें बिना सङ्कोच के वहाँ जाने की आज्ञा दी जाती है। इसी प्रकार प्रायः जब सामाजिक संस्थाएँ कभी-कभी स्वास्थ्य तथा स्वच्छता पर मैजिक लालटेन द्वारा .कैदियों को उपदेश करना चाहती हैं, तो उन्हें हर प्रकार की सुविधा सरकार की ओर से दी जाती है। किसी-किसी जेलख़ाने के अन्दर ही बायस्कोप .कैदियों के मनोविनोदार्थ बने हुए हैं। वे वहाँ .फुटबाल, हॉकी तथा दूसरे खेल भी खेल सकते हैं। .कैदियों में आपस में 'टीम' बन जाती है और सब खेल जेलख़ाने के अन्दर ही होते हैं। रूस में तो इतना भी कहीं-कहीं होता जा रहा है कि जेल के बहुत से प्रबन्ध में .कैदियों का हाथ रहता है। जेल के अन्दर ही उनकी सोवियट बन जाती है, जो साधारण प्रबन्ध स्वयं करती है। यह है स्वतन्त्र देश के जेलख़ानों की झाँकी।

इस अभागे देश में पहिले तो कुछ होता ही नहीं, यदि बहुत मार-पुकार मचाई तो कमीशन बैठ गया या कोई कमिटी बैठा दी गई, इसलिए कि जेलों का निरीक्षण करे और जो-जो सुधार हो सकते हैं, उनको बतावे। कमीशन को लम्बे-लम्बे भत्ते दिए जाते हैं, साल-छः महीने कमीशन दो-चार जगह बैठकें करता है, फिर साल-डेढ़ साल रिपोर्ट छपने में लग जाता है, इस प्रकार बात ३-४ साल को टल जाती है। फिर कहीं रिपोर्ट निकली; कौन्सिलों में प्रश्न किए गए कि सरकार अमुक रिपोर्ट पर क्या सोच रही है? टका सा उत्तर मिलता है कि अभी कोष में रुपया नहीं है, इसलिए गवर्नर महोदय मय मन्त्रि-मण्डल के खेद प्रकट करते हैं कि रिपोर्ट की सिफ़ारिश पर कोई कार्यवाही न होगी। फिर सुधार हो तो कैसे हो? समस्या बड़ी टेढ़ी है। आवश्यकता है कि प्रत्येक ज़िले में जेल-सुधार कमिटियाँ बनाई जाएँ तथा भरसक आन्दोलन किया जाय, ताकि इस संस्था में उचित सुधार हो। पत्रकार इस सम्बन्ध में बहुत-कुछ सहायता दे सकते हैं।

* * *

ख़ुशी की ख़बर !

बिना उस्ताद के सङ्गीत सिखाने में बाज़ी जीतने वाली पुस्तक "हारमोनियम, तबला एण्ड बाँसुरी मास्टर" तीसरी बार छप गई है। नई-नई तर्ज़ों के ६२ गायनों के अलावा ११५ राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया गया है। इससे बिना उस्ताद के उपरोक्त तीनों बाजे बजाना न आवे तो मूल्य वापिस देने की गारण्टी है! अब की बार पुस्तक बहुत बढ़ा दी गई है, किन्तु मूल्य वही १) डा० म० ।–) पुस्तक बड़े ज़ोरों से बिक रही है।

पता—गर्ग एण्ड कम्पनी, नं० ५, हाथरस

उस्तरे को बिदा करो

हमारे लोमनाशक से जन्म भर बाल पैदा नहीं होते। मूल्य १), तीन लेने से डाक-ख़र्च माफ़

शर्मा एण्ड को०, नं० १, पा० कनखल (यू० पी०)

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

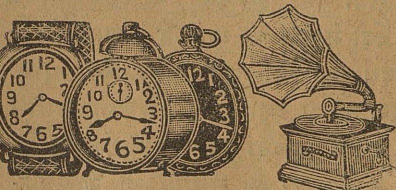

मशहूर दाद की दवा। २४ घण्टे में दाद को आराम करती है ! ६ डब्बी का दाम ।=), एक साथ १२ डब्बी दाद की दवा मँगाने से तीन सच्ची घड़ियाँ ; गारण्टी ३, ४, ५ वर्ष। और डेढ़ दर्जन मँगाने से १ किडी ग्रामोफ़ोन इनाम। डाक-व्यय १।) पृथक।

पता—बी० बी० भवन,
हाटखोला, कलकत्ता

रोल्ड गोल्डन रिस्टवाचेज़ के लिए सब से बड़ी रियायत

कोई भी ४॥) में चुन लीजिए

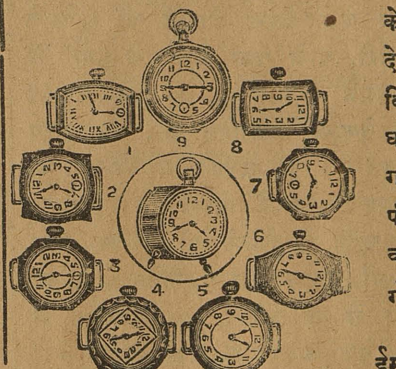

ऊँचे दर्जे की रोल्ड गोल्डन रिस्टवाच, बहुत मज़बूत, ख़ूबसूरत, छोटा साइज़, नया चालान केवल थोड़े समय के लिए दी जाती है। यह ख़ूबसूरत घड़ी सुन्दर रेशमी फ़ीते से युक्त, देखने में १५०) की घड़ी के मानिन्द है, जो केवल ४॥) में दी जाती है। किसी भी घड़ी को चुन लीजिए और ऑर्डर देते समय पसन्द की हुई घड़ी का नम्बर अवश्य लिखिए। प्रत्येक घड़ी के साथ ५ वर्ष की पूर्ण गारण्टी रहती है। एक साथ ३ घड़ियाँ ख़रीदने वालों को १ बी टाइम-पीस इनाम में दी जायगी, ६ ख़रीदने वालों को १ रेलवे रेगूलेटर पाकेट वाच तथा १ दर्जन ख़रीदने वालों को इनमें से कोई भी एक रोल्ड गोल्डन रिस्टवाच मुफ़्त दी जायगी। पोस्टेज और पैकिङ्ग अतिरिक्त।

ईस्ट इण्डिया वाच कम्पनी (सेक्सन पी) पो० बीडन स्ट्रीट, कलकत्ता

१) में ४ घड़ियाँ, दो जूते सैकड़ों इनाम

आश्चर्य नहीं, बात सच्ची है !

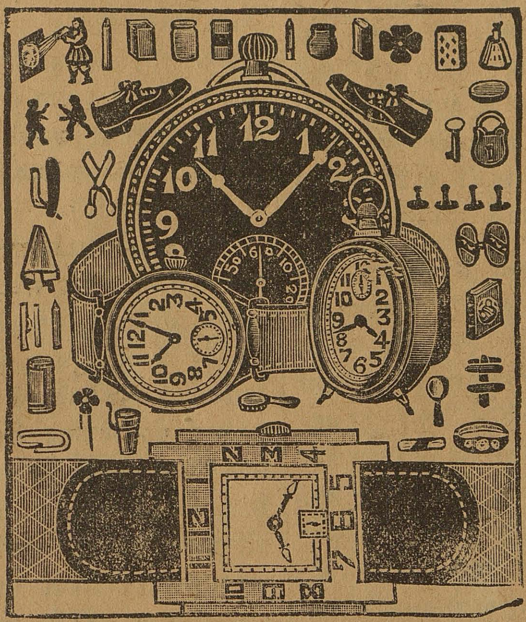

मस्तान सीमसीम—इसकी ख़ुशबू का गुण ख़रीदे वही जाने, १ शीशी का १) तसवीर की सारी चीज़ें दशहरा के उपलक्ष में मुफ़्त भेजी जाती हैं। एक सप्ताह के अन्दर ऑर्डर आने से रिस्ट-वाच, पाकेट-वाच और सच्चा टाइम बताने वाली १ जर्मन बुल सण्ड घड़ी तीन वर्ष की गारण्टी सहित और दो जूता, बायस्कोप, कहाँ तक गिनावें, तसवीर में जितनी चीज़ आप देखते हैं, सभी इनाम में भेजी जाएँगी। डाक-व्यय ॥-) प्रति सप्ताह की देरी करने से एक एक घड़ी इनाम कम मिलेगा और ५ सप्ताह के बाद इनाम कुछ नहीं।

पता—एल० एक्स० फ़ोर्ड वाच कं० हाटखोला, कलकत्ता

५) को पुस्तकें १॥) में

१ विश्वव्यापार—सोडावाटर, ख़िज़ाब इत्र, बालसफ़ा, रबड़ की मुहर, अञ्जन, मञ्जन बना धन कमाओ मू० १।)
२ नवीन कोकशास्त्र—८४ आसनों के चित्र, स्त्री-पुरुष सर्व गुप्त भेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, शकुन का पूरा वर्णन मू० १।)
३ इङ्गलिशटीचर—घर बैठे अङ्गरेज़ी पढ़ना सीख लो मू० १।)
४ करामात—मैस्मेरिज़्म, हिप्नोटिज़्म, छाया-पुरुष वर्णन मू० १।)

सब पुस्तकें एक साथ १॥) में डाक-व्यय ॥)

पता—बी० आर० जैसवाल, पोस्ट-डिबाई (E.I.R)

केवल २ सप्ताह तक डाक-ख़र्च ।=) माफ़

६८ चित्रों सहित चौदह विद्या-चौंसठ कला

यह ग्रन्थ १४ विद्या और ६४ कलाओं से युक्त है, यथा

[१] वैद्य-विद्या-सब प्रकार के रोगों की अचूक दवाएँ [२] कोक-विद्या—स्त्री-पुरुषों के समस्त गुप्त विषयों का वर्णन [३] शाकुनिक विद्या—शकुन व पक्षियों की बोली जानना [४] योग-विद्या—मृतात्माओं से वार्तालाप [५] ज्योतिष-विद्या—मनुष्यों के कर्मफल आदि जानना [६] शिल्प-विद्या—हींग, इत्र, साबुन, ख़िज़ाब, स्याही कौड़ियों में बना लेना [७] राजनीति-विद्या—राज्य नियम, कोर्ट फ़ीस आदि क़ायदे [८] वास्तु-विद्या—गृह निर्माण रीति [९] सङ्गीत-विद्या—हारमोनियम सीखना [१०] रसायन-विद्या—नक़ली सोना, मोती आदि बनाना [११] कृषि-विद्या—खेती के सम्पूर्ण नियम [१२] यन्त्र [१३] मन्त्र [१४] तन्त्र आदि विद्याएँ। अन्त में नट-विद्या और ६४ कलाओं का सचित्र वर्णन पृष्ठ २२०, मूल्य सजिल्द १।) रु० डाक-ख़र्च माफ़। पता—

भारत राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़ नं० ६

आप व्यापारी हैं

तो थोड़ी ही पूँजी में अधिक लाभ और नाम कमाने के लिए हमारी दवाओं की एजेन्सी लीजिए, बहुत जल्द मशहूर और मालामाल हो जाएँगे।

पता—श्री० जगदीश औषधालय, डालीगञ्ज, लखनऊ

भृगुसंहिता का गुप्त रहस्य

प्राचीन, हस्तलिखित, अपूर्व ग्रन्थ ४०० पृष्ठों में हिन्दी में छप रहा है, अगर भृगु जी के चमत्कारों की सत्यता का प्रमाण देखना हो तो अवश्य मँगावें, मूल्य ३) ग़रीबों से २)

सी० एस० पण्ड ब्रादर्स, महराजगञ्ज, ज़िला सारन

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

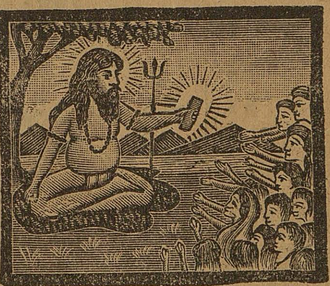

जो कवच २) में मिलता था, आज वह सिर्फ़ १५ दिन के वास्ते मुफ़्त भेजा जाता है। यह कवच संसार भर के जादू, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष-चमत्कारों से परिपूर्ण है, इसके धारण करने से हर तरह के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़दमे में जीत, सन्तान-लाभ, हर तरह के सङ्कटों से छुटकारा, इम्तिहान में पास होना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना, हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशान्तरों का हाल क्षण भर में जान लेना, भूत-प्रेतों को वश में कर लेना, स्वप्न-दोष का न होना मरे हुओं से बातचीत करना, राज-सम्मान होना, कहाँ तक गिनाएँ, बस जिस काम में हाथ डालिएगा, फ़तह ही फ़तह है। १५ दिन तक फ़्री, बाद १५ दिन के १ कवच का मूल्य २), तीन का ५॥), डाक-महसूल ॥=); ध्यान रहे, मरे हुओं की १ पुश्त तक का हाल बतावेगा, दूसरे के ज़िम्मेदार हम नहीं। अगर कोई झूठा साबित करे तो १५) इनाम। सन्तान चाहने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही कवच मँगावें।

पता—एस० कुटी, हाटखोला (कलकत्ता)

बेरोज़गारों को शुभ समाचार

भारतवर्ष भर में अपनी तरह का पहला कॉलेज है, जो निर्धनों के साथ विशेष रियायत करता है, व आसूदा सज्जनों से केवल ५०) रुपया फ़ीस दाख़िला रूप में लेकर दो माह के मामूली समय में ड्राइवरी और फ़िटर का पूरा काम सिखा देता है। यह सरकार से रजिस्ट्री शुदा कॉलेज है। नियमावली आज ही पत्र लिख कर मुफ़्त मँगा कर देखिए।

नोट—नियमावली के लिए पता पूरा और साफ़-साफ़ लिखें।

पता—मैनेजर, इम्पीरियल मोटर ट्रेनिङ्ग कॉलेज, नं० १, चाँदनी चौक, नियर इम्पीरियल बैङ्क, देहली

डॉक्टर सुधीन्द्र बोस की चिट्ठी

अमेरिका में बेकारी की समस्या

यह प्रत्यक्ष है कि अमेरिका के संयुक्त-राज्य की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। कहा जाता है कि आगामी छः मास में वहाँ विकट सङ्कट उपस्थित होने वाला है। अमेरिका के मज़दूर-सङ्घ के सभापति ने चेतावनी दी है कि यदि अमेरिकन सरकार ने किसी ऐसे जन-कार्य का कार्यक्रम प्रारम्भ न किया, जो अधिकाधिक बेकारों को काम बता सके, तो भय है कि देश की आर्थिक रचना विध्वंस न हो जाए। माना कि आर्थिक रचना इतनी शीघ्र विध्वंस नहीं हो सकती, परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका के सामने समस्या बड़ी जटिल उपस्थित हो गई है।

आज वहाँ लगभग ७०,००,००० जन बेकार हैं—अर्थात् न तो वे आवश्यक रोटी ही प्राप्त कर सकते हैं, न वस्त्र और न घर। परन्तु यह तो गणना हुई वास्तविक बेकारों की। उनके सम्बन्धियों को मिला कर तादाद लगभग ३,००,००,००० तक पहुँचेगी, जो समस्त आबादी का चौथाई हिस्सा है।

अभी तो मौसम भी कुछ अच्छा है, परन्तु कुछ मास में जब कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगेगा, तो डर है कि बेकारों की गिनती और भी बढ़ जाएगी। गत वर्ष के शरद् ऋतु में तो उनके पास कुछ साधन शेष रह भी गए थे, परन्तु इस वर्ष वे बिलकुल निस्सहाय होंगे। यदि दिसम्बर मास तक उनको काम दिलाने का कोई निश्चित साधन न निकला, तो भीषण सङ्कट का सामना होगा।

हाल में ही सरकारी सभा में प्रेसीडेण्ट हूवर ने दृढ़तापूर्वक कहा था कि बेकारों को केन्द्रीय सङ्घ द्वारा कोई सहायता नहीं मिलनी चाहिए। उनका मत यह है कि यह स्थानीय प्रश्न है, इसलिए इस समस्या का हल निश्चय ही उन प्रान्तों को करना चाहिए, जहाँ-जहाँ यह विपदा उत्पन्न हुई हो। उन्होंने इस सम्बन्ध में यह विचार प्रकट किया कि सङ्कट के निवारण का उपयुक्त साधन यह है कि केन्द्रीय, सरकारी तथा स्थानीय बेकारों की संस्थाएँ अधिकतः सहयोग करें। परन्तु इस बात में शङ्का है कि क्या उक्त संस्थाओं के केवल पुनर्सङ्गठन तथा सहयोग से ही यह समस्या हल हो जाएगी। प्रेसीडेण्ट साहब ने बेकारों की हालत की जाँच के लिए एक कमिटी नियत की थी, उस कमिटी ने हाल में ही अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिससे ज्ञात होता है कि आगामी शरद् ऋतु में सहायता की आवश्यकता यदि सन् १९३०-३१ के जाड़े से अधिक न हुई, तो उसके बराबर अवश्य रहेगी। व्यक्तिगत रूप से इस कारण जो दान प्राप्त हुआ था, उसका अन्त हो चला है। स्थानीय (प्रान्तिक) सरकारों ने भी, जिनमें से कई का कोष ख़ाली हो रहा है, सहायतार्थ कार्यों के निमित्त रक़म में बहुत बड़ी कमी कर दी है। फिर यदि करोड़ों बेकार व भूखे अपने उद्धार के लिए केन्द्रीय (सङ्घ) सरकार पर आँखें न लगाएँ तो किधर जाएँ। मिस्टर हूवर केन्द्रीय कोष द्वारा सहायता प्रदान करने का विरोध सम्भवतः इसलिए कर रहे हैं कि वे सङ्घ सरकार के कार्यों में कमी करना चाहते हैं। कुछ भी हो, यह प्रत्यक्ष है कि सामाजिक राज्य-प्रणाली में बेकारी का प्रश्न विशेष महत्व का है।

अमेरिका में कई वर्षों से पैदावार असाधारण रूप से ज़्यादा हो रही थी। परन्तु कहीं-कहीं कृषक अपना लगान नहीं चुका सकते थे, जिसकी वजह से लगान स्थगित कर दिया गया था। हुआ यह कि ज़्यादा पैदावार होने के कारण भाव मन्दा हो गया, जिससे यथेष्ट दाम न मिले। अब यह कहा जाता है कि भावों को स्थित रखने के लिए पैदावार में कमी करनी चाहिए।

टेक्साज़ प्रान्त के गवर्नर ने रूई के विषय में परामर्श करने के लिए आवश्यकतावश एक कॉन्फ़्रेन्स की, जिसमें अमेरिका के सभी रूई पैदा करने वाले प्रान्तों के प्रतिनिधि बुलाए गए थे। इस कॉन्फ़्रेन्स ने यह सलाह दी है कि रूई पैदा करने वाले प्रान्तों में ऐसा क़ानून बनाया जाना चाहिए कि जिससे रूई की पैदावार में कमी हो। कॉन्फ़्रेन्स ने टेक्साज़ प्रान्त को (जो सब से ज़्यादा रूई उत्पन्न करता है) ही परामर्श दिया है कि वह ऐसा क़ानून बनाने में अग्रसर हो और अन्य सब प्रान्त भी उसका अनुकरण करें।

आजकल टेक्साज़ प्रान्त की धारा-सभा का विशेष अधिवेशन हो रहा है, जिसमें इस आशय का एक बिल पेश है कि आगामी २ वर्षों तक रूई की फ़सल न बोई जावे। कौन जानता है कि यह माँग कहाँ तक पूरी की जा सकेगी, परन्तु इसके विशेष महत्त्व में किसी को शङ्का नहीं है।

अब तक जो बातचीत खेती की ज़मीन में कमी करने की हो रही थी, वह सब व्यक्तिगत इच्छा के आधार पर थी। अन्य देशों में यह कार्य सरकारी निश्चय द्वारा होना क्या नवीन बात नहीं? परन्तु अमेरिका में व्यक्तिगत भावों को इतना विस्तार दिया गया है कि उनके कारण ऐसा कोई नियम अब तक न बन सका। अब इस रूई सम्बन्धी नए क़ानून के पास हो जाने के बाद देखना है कि क्या अमेरिका-निवासी इस बात को सहन कर सकेंगे कि उनके शख़्सी अधिकारों पर कुठाराघात करते हुए सरकार उनसे वे ज़मीनें छीन ले, जिनमें पैदावार ज़्यादा होने से आर्थिक सङ्कट वर्तमान हो जाता है।

क़ानून द्वारा रूई के पैदावार में कमी की माँग निस्सार नहीं कही जा सकती। तेल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पहिले ही यह सब कार्रवाई हो चुकी है। तेल के प्रान्त और रूई के प्रान्तों में बहुत-कुछ समानता भी है और यह भी एक विशेष बात है।

अमेरिका की उच्चतम धारा-सभा शख़्सी अधिकारों को स्थित रखने के लिए पूरी तरह इच्छुक है। यहाँ तक कि इस गुण में उससे कोई अमेरिकन व्यक्ति आगे नहीं निकल सकता। परन्तु अब देखना है कि वह इन अधिकारों में सरकारी आज्ञाओं द्वारा बाधा डालने पर क्या करती है। तेल के सम्बन्ध में जो बाधाएँ डाली गई थीं, उनके लिए वह केवल इच्छुक ही नहीं थी, बल्कि चिन्तित थी और उसको कार्यरूप में सिद्ध करने के हेतु यथासम्भव सब कुछ किया भी था।

—'हिन्दू'

दाम ५) **बाल जड़ से काला** नमूना २)

यह तेल बालों का पकना रोक कर पका बाल जड़ से काला पैदा न करे तो दाम वापस।

पता—बाल काला मेडिकल स्टोर,

कमलो सिमरी (लहेरिया सराय)

बहरेपन की अपूर्व दवा !

हमारी दवा से बहरापन, चाहे थोड़ा हो या बहुत, एकदम दूर हो जाता है, इसकी हम गारण्टी दे सकते हैं। पूरे विवरण के लिए इस पते से पत्र-व्यवहार कीजिए—'ओ' वर्क्स, बीडन स्कायर, कलकत्ता,

फ़ोन नं० बड़ा बाज़ार ९८०

प्रतिष्ठाता

डाक्टर एस.के.बर्म्मन

डाबर (डाक्टर एस॰ के॰ बर्म्मन) लिमिटेड कलकत्ता

स्थापित सन् १८८४ ई०

स्टार SKB ट्रेड मार्क रजिस्टर्ड

विभाग नं० १४, पोष्ट-बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।
५० वर्ष से प्रचलित शुद्ध भारतीय पेटेण्ट दवाएँ।

डाबर श्रृङ्गार-सामग्रियों के नमूने का बक्स (Regd.)

(इसमें ८ प्रकार की श्रृङ्गार-सामग्रियाँ हैं)

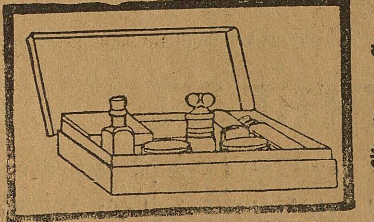

जिन लोगों ने हमारी औषधियों का व्यवहार किया है, वे उनके गुणों से भली-भाँति परिचित हैं।

कम मूल्य में हमारे यहाँ की श्रृङ्गार-सामग्रियों की परीक्षा हो सके, इसलिए हमने अपने यहाँ की चुनी हुई श्रृङ्गार-सामग्रियों के "नमूने का बक्स" तैयार किया है। इसमें नित्य प्रयोजनीय सामग्रियाँ नमूने के तौर पर दी गई हैं।

मूल्य १ बक्स का १।।=) एक रुपया दस आना। डा० म० ।।)

नोट—समय व डाक-ख़र्च की बचत के लिए अपने स्थानीय हमारे एजेण्ट से ख़रीदिए

बिना मूल्य—सम्वत् १९८८ का "डाबर पञ्चाङ्ग" एक कार्ड लिख कर मँगा लीजिए।

एजेण्ट—इलाहाबाद (चौक) में बाबू श्यामकिशोर दुबे

इसे कठिनता से भेद कहा जा सकता है, और यदि इसे भेद ही कहना हो, तो अधिक से अधिक यह खुला हुआ भेद है। इसे इतनी अधिक स्त्रियाँ जानती हैं, कि यदि हम इच्छा भी करें, तो भी ओटीन के स्त्री-सुलभ यौवन और सौन्दर्य को पकी हुई अवस्था में भी बनाए रखने और बढ़ाने की विशेषताओं को अस्वीकार नहीं कर सकते। रात को पाँच मिनट की ओटीन की मालिश सारे दिन की सौन्दर्य-क्षति को पूरा करके दूसरे दिन के लिए नवीन सौन्दर्य का निर्माण कर देती है।

ओटीन स्नो का दैनिक व्यवहार धूप या हवा, वर्षा या धूल, हास्य या रोदन—सब के प्रभाव का सामना करके उसे नष्ट कर देता है और रङ्ग को ताज़ा, यौवनपूर्ण और प्रफुल्लित बनाए रखता है।

ओटीन पदार्थ पवित्रता और पूर्ण शृङ्गार की चरम सीमा है। आरम्भ से अन्त तक इनमें किसी प्रकार की पशु की चर्बी आदि का मिश्रण नहीं किया जाता, और इनकी तैयारी और पैकिङ्ग की सारी कार्यवाही में हाथ का स्पर्श नहीं होता।

ओटीन क्रीम—रात की मालिश के लिए।

जिल्द को स्वच्छ करने, नम बनाने और सजीवता देने के लिए।

ओटीन स्नो—दैनिक व्यवहार के लिए।

धूप, धूल और पसीने के प्रभाव को नष्ट करने के लिए।

सब स्थानों पर मिलता है।

"फेनका" बाल बनाने का साबुन

यह अत्यन्त सुगन्धित, निर्विकार, कृमिनाशक, पवित्र और स्निग्ध साबुन है। फेन में अधिकता और स्थायित्व है, जिससे बाल बनाने में सुविधा होती है। आप अपने यहाँ के किसी भी स्टेशनर से ख़रीद सकते हैं।

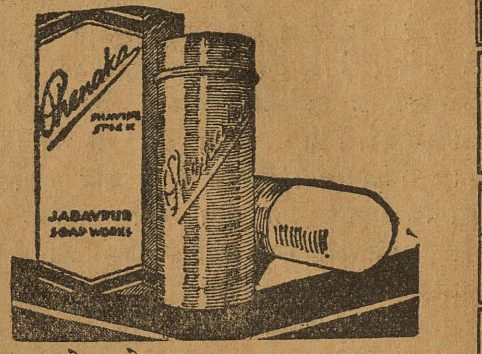

बनाने वाले :—
जादवपुरसोप-वर्क्स,९स्ट्रग्डरोड, कलकत्ता
व्यापार सम्बन्धी पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से कीजिए :—
ब्रॉडकास्ट कम्पनी,५८ जॉन्स्टनगञ्ज,इलाहाबाद

(रजिस्टर्ड) हैज़े का जानी दुश्मन (रजिस्टर्ड)

रत्नामृत

मूल्य ।।।) शीशी नमूना ≡), डाक-ख़र्च अलग

"रत्नाकर" पत्र का नमूना एक कार्ड डाल कर मुफ़्त मँगाइए!

पता—रत्नाकर भवन, इटावा (यू० पी०)

कलकत्ता होमियो फ़ारमेसी को

असली और ताज़ी दवाइयाँ –)। प्रति ड्राम क्रमशः २४, ३०, ४८, ६० और १०४ शीशियों वाले फ़ैमिली बॉक्स की क़ीमत मय एक ड्रापर और हिन्दी में एक चिकित्सा-विधान के ३), ३।।) ४।।), ६।।) और १०।।।=); गोलियाँ दूध की मिठाई, ट्यूब फ़ाइल्स, कार्क, कार्डबोर्ड-केस वग़ैरह सस्ते दाम पर मिलते हैं। उल्लिखित फ़ैमिली बॉक्स यदि अङ्गरेज़ी में चिकित्सा-विधान सहित लेना हो तो १) अधिक लगेगा।

१५ होमियोपैथिक डॉक्टरों के नाम भेजने से "वेडी मेकम" १२ टिश्यू दवा मुफ़्त मिलती है।।

पता—एस० आर० बिस्वास एण्ड सन्स, ७५-१ कोलूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता

बिजली की स्याही

यानी गुप्त पत्र-व्यवहार

लिखते ही अक्षर गुम हो जाते हैं—जिससे मित्र मण्डली आश्चर्यान्वित होती है।

नोट—अक्षर देखने की कला पारसल के साथ भेजी जाती है। नमूना ≡) का टिकट भेज कर मँगाइए।

इण्टर नेशनल मार्केट; पो० ब० १२६, कलकत्ता

दुखदाई बवासीर

ख़ूनी या बादी, नई या पुरानी ख़राब से ख़राब चाहे जैसी बवासीर, भगन्दर हो, सिर्फ़ एक दिन में "हमारी दवा" बिना ऑपरेशन के जादू की तरह असर कर, अद्भुत फ़ायदा करेगी, तीन दिन में जड़ से आराम। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, फ़ायदा न हो तो चौगुना दाम वापस देंगे। क़ीमत २)

नेत्र सुधा-सागर सुर्मा

असली मोती तथा ममीरा आदि जङ्गली जड़ी-बूटियाँ मिला कर यह बना है, जिससे फूला, माड़ा, परवाल, रतौंधी, दिनौंधी, रोहे, गुहेरी, लाली, मोतियाबिन्द को आराम करने में रामबाण है, रोज़ाना लगाने से बुढ़ाई तक दृष्टि कम न होगी, यह नेत्र-रोगों की महौषधि है। क़ीमत १), तीन शीशी ३)

बहिरापन

कान के तमाम रोगों पर जैसे कान में पीप आना, जलन, खुजली, कान में भयङ्कर वेदना, कान बहना तथा बहिरापन नाश करने में हमारा चमत्कारी 'बहिरापन तेल' अमोघ है। हज़ारों कम सुनने वाले अच्छे हुए हैं। फ़ायदा न हो तो दाम वापस। क़ीमत २)

पता—शक्ति सुधा कार्यालय, बम्बई नं० ४

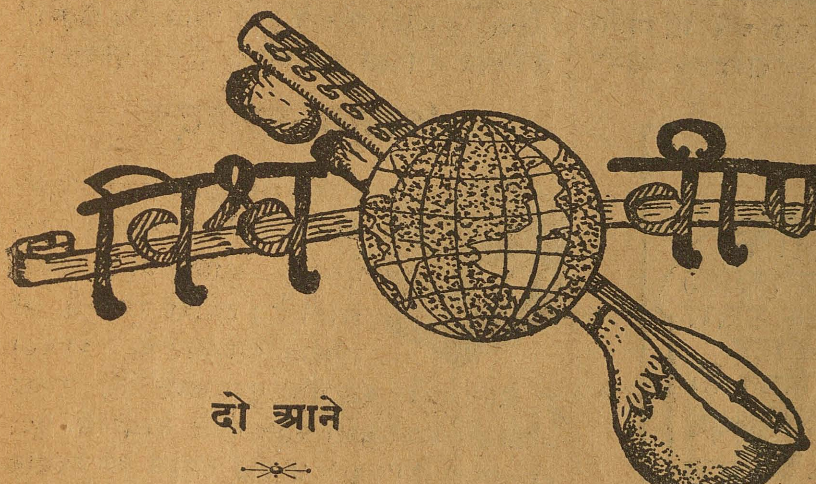

दो आने

शासन-सम्बन्धी ईमानदारी में मुर्शिदाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट जज ने संसार में अपनी उपमाएँ नहीं रक्खीं। कहा जाता है कि कैण्डी सिविल कोर्ट और ख़ज़ाने की रसीद में कहीं दो आने की ग़लती थी। बङ्गाल के एकाउण्टैण्ट जेनरल ने इस ग़लती को पकड़ लिया। फिर क्या था, साम्राज्य सङ्कट में पड़ गया। अगर ईमानदारी, जोकि अङ्गरेज़ों का कॉपी-राइट गुण है और जिसके आधार पर भारत का शासन चल रहा है, न रही तो रह क्या गया! ज़िला के दो बड़े अधिकारी मैजिस्ट्रेट और जज कैण्डी की ओर रवाना हो गए और दीवानी और फ़ौजदारी अदालतों के कर्मचारियों और दीवानी अदालत के चपरासी की जाँच की। आख़ीर में दो आना अपने पास से देकर और यह कह को डिस्ट्रिक्ट जज साहब ने एकाउण्ट पूरा कर दिया कि मैं इस मामले में किसी को दोषी नहीं पाता। यह त्याग अभूतपूर्व और व्यावहारिक ईमानदारी पवित्र है! दो आने के लिए शासन-सम्बन्धी इस ईमानदारी के प्रदर्शन का मूल्य डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट जज का सफ़र-ख़च और दूसरा ख़र्च है। उनका कहना है कि बहुत अधिक विरोध करना अच्छा उपाय नहीं है।

—"लिबर्टी"

❀ ❀ ❀

मरे घोड़े को मारना

मरे घोड़े को कोड़े से मारने से क्या लाभ? भारत-मन्त्री ने रुपए का सम्बन्ध स्टर्लिङ्ग से कर दिया है और स्पष्ट कह दिया है कि यह उपाय ब्रिटिश व्यापार के लिए लाभदायक है, इसलिए इसमें हस्तक्षेप नहीं हो सकता। अगर यही बात है तो हम नहीं समझते कि गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों के सामने वे अपना दृष्टिकोण समझाने का कष्ट क्यों करते हैं। आर्थिक मामलों में ब्रिटिश और भारतीय दृष्टिकोण बिल्कुल विरोधी रहे हैं और ब्रिटेन हमारे प्रबल विरोध करते रहने पर भी अपने प्रत्येक कार्य को करता रहा है। ब्रिटेन के आर्थिक सङ्कट में पड़ते ही विनिमय-दर की पवित्रता और आर्थिक स्थिरता की बात बिल्कुल ग़ायब हो गई।

—"एडवान्स"

❀ ❀ ❀

मिथ्या भावुकता

मज़दूर-दल ने भारत के सम्बन्ध में एक प्रोग्राम बनाया है। उसमें "ब्रिटेन और हिन्दुस्तान के लोगों में मैत्रीपूर्ण सहयोग के लिए अभूतपूर्व अवसर" का ज़िक्र किया गया है। हिन्दुस्तान इस प्रकार की भावुकताओं से ऊब गया है। वह कुछ ठोस वस्तु चाहता है। हम लोग "मैत्रीपूर्ण सहयोग" की बात बहुत समय से सुनते आ रहे हैं, अब ये भावुक वाक्य हमें अधिक उत्साहित नहीं करते। हिन्दुस्तान तीन दलों में से किसी पर भी अधिक विश्वास नहीं कर सकता, उसे अपने ध्येय पर पहुँचने के लिए अपने आप प्रयत्न करना होगा। पहले हिन्दुस्तान इनमें से एक पार्टी का साथ देकर ग़लती कर चुका है, परन्तु अब उसका अनुभव बढ़ गया है। मज़दूर-दल अपने शासन के समय सायमन कमीशन, दमन, और पहली गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का समर्थन कर चुका है। भारत के भविष्य के सम्बन्ध में मज़दूर-दल के जो विचार हैं, उन्हें जानते हुए हम कह सकते हैं कि भ्रातृ-सङ्घ को सफल बनाने की बातें बिलकुल मिथ्या हैं।

—"इण्डियन डेली मेल"

❀ ❀ ❀

घृणित से भी निकृष्ट!

प्रेस-बिल जैसा सेलेक्ट कमिटी में निर्धारित और एसेम्बली में पास हुआ था, वैसा ही, बिना किसी प्रकार परिवर्तन और बहस के कौन्सिल ऑफ़ स्टेट में भी पास हो गया। इस कौन्सिल में केवल एक सदस्य मि० सय्यद हसन इमाम की रुचि इस बिल की ओर दिखलाई पड़ी, जिन्होंने ११९ संशोधन पेश किए थे। पहला संशोधन नए प्रेस से ज़मानत माँगने के सम्बन्ध में था। परन्तु इस संशोधन का समर्थक केवल प्रस्ताव पेश करने वाला था। इस प्रकार बड़े राजनीतिज्ञों की गम्भीरता और बुद्धिमानी की थाह लेकर आप बाक़ी संशोधनों को बग़ल में दबा कर बाहर चले आए। नौकरशाही के प्रेमियों, गोलमेज़ के ब्रिटिश विरोधियों और जनता से घृणा करने वालों को, कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के इन्हीं बड़े लोगों के आचरणों से शासन-विधान में दूसरी व्यवस्थापक सभा करने का उत्साह मिलता है। कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के इन बड़े लोगों के आचरण घृणित से भी निकृष्ट हैं।

—"अमृतबाज़ार पत्रिका"

❀ ❀ ❀

मुसलमानों में शिक्षा की कमी

काश्मीर-दङ्गा जाँच-कमिटी ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा है कि सरकारी नौकरियों के सम्बन्ध में मुसलमानों की शिकायतें उचित हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इसी कारण से लोगों में विद्वेष फैलता है और स्वार्थी लोगों के प्रचार से जनता के भी विचार दूषित हो जाते हैं। कमिटी का कहना है कि राज्य की नौकरियों में मुसलमानों की कमी का कारण उनका मुसलमान होना नहीं है, बल्कि मुसलमानों में शिक्षा की कमी होना है। कमिटी ने सिफ़ारिश की है कि जहाँ मुसलमान बहुत कम हैं, वहाँ नौकरियों में हिन्दू ग्रेजुएटों की जगह मुसलमानों की संख्या बढ़ाने के लिए इन्ट्रेन्स पास मुसलमान रक्खे जा सकते हैं। नौकरियों में मुसलमानों की संख्या बढ़ाने की सिफ़ारिश का समर्थन करते हुए भी हमें यह कहना पड़ता है कि कमिटी की यह सिफ़ारिश कि हिन्दू ग्रेजुएटों की जगह इन्ट्रेन्स पास मुसलमान रक्खे जायँ, शिक्षा की कमी पर ब्याज देना है। इससे शिक्षा की उन्नति में सहायता नहीं मिलती। राज्य की नौकरियों में कार्य की उत्तमता में बिना कमी किए हुए मुसलमानों की संख्या बढ़ाने का उचित उपाय यह है कि जहाँ हिन्दू और मुसलमान उम्मीदवारों की योग्यता क़रीब-क़रीब एक सी हो, वहाँ हिन्दू की जगह मुसलमान लिया जाय। अगर देश के शासन में मुसलमान अधिक भाग लेने के लिए उत्सुक हैं, तो उन्हें शिक्षा के लिए अधिक प्रयत्न करना चाहिए और उच्छृङ्खलता कम दिखलानी चाहिए, जिसका परिणाम आख़ीर में उनके लिए और राज्य भर के लिए हानिकारक होता है।

—"सिन्ध ऑब्ज़रवर"

* * *

शासन-व्यय में कमी करने के प्रस्ताव

हम सर जॉर्ज शुस्टर के, शासन-व्यय में कमी करने के आर्थिक प्रस्तावों पर पहले विचार कर चुके हैं। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा है, त्यों-त्यों यह भाव दृढ़ होता जा रहा है कि गवर्नमेण्ट की स्थिति बचाने की चिन्ता में वे ग़रीबों के हितों की उपेक्षा करते जा रहे हैं। हम मानते हैं कि आय और व्यय में भारी अन्तर है। सरकार उनको बराबर नहीं कर सकती और नए टैक्सों का लगाना और शासन-व्यय में कमी करना आवश्यक है। परन्तु इसके साथ ही हम अनुभव करते हैं कि चाक़ू चलाने का कार्य बुद्धिमानी और न्याय के साथ होना चाहिए। सर जॉर्ज शुस्टर के प्रस्तावों से कोई भी ख़ुश नहीं हुआ। कोई व्यक्ति ख़ुशी से टैक्स नहीं देता, यहाँ तक कि वे भी, जो दे सकते हैं। परन्तु टैक्स लगाने वाले अधिकारियों का यह कर्तव्य है कि टैक्स दया के साथ नहीं, तो विचार के साथ लगाएँ।

१,०००) रु० वार्षिक आमदनी इनकम टैक्स लगाने के लिए बहुत कम है। यह उन लोगों के लिए हानिकारक है, जो अपने आपको सभ्य कहते हैं और ऊपर से अपने आपको बनाए रहते हैं। यह ठीक है कि गल्ले का भाव सस्ता है, लेकिन उसी हिसाब से रुपया भी कम है और दूसरे व्यय ज़्यादा हैं। लड़कों की पढ़ाई में काफ़ी ख़र्च होता है। मकान के किराए बढ़ते ही जा रहे हैं। जो व्यक्ति ८३) रु० महीने पाता है, वह मुश्किल से अपना ख़र्च चला पाता है और क़र्ज़ में रहता है। उसी से इनकम टैक्स लेने का विचार हो रहा है। कम से कम रुपयों के देने से भी उसके कुटुम्ब का बजट अस्त-व्यस्त हो जायगा। जीवन की किसी न किसी आवश्यक वस्तु में उसे कमी करनी ही पड़ेगी। निस्सन्देह उच्च वेतन पाने वाले अफ़सरों पर भी इस टैक्स का प्रभाव पड़ेगा। लेकिन उन्हें उतनी कठिनाई न होगी। उन्हें अपनी आवश्यकताओं को न रोकना पड़ेगा। उन्हें केवल अपनी विलासिता में कमी करनी पड़ेगी। इसलिए बिल के विचार में इस बात को न भूलना चाहिए। वेतनों में कमी का भी प्रबन्ध न्यायोचित ढङ्ग से होना चाहिए।

वेतन की जो हद कमी न करने के लिए बतलाई गई है, वह सन्तोषजनक नहीं है। हम जानते हैं कि कमी करना अनिवार्य है, परन्तु उसमें एक क्रम होना चाहिए। ५००) रु० महीना पाने वाला व्यक्ति अपने व्यय में कमी करके ५०) रु० आसानी से बचा सकता है, परन्तु

२०) रु० महीना पाने वाले व्यक्ति के वेतन से ५) रु० कम कर देना कष्टकारक होगा। सम्भवतः उस व्यक्ति को एक बार बिना भोजन ही रह जाना पड़े। जब हम देखते हैं कि उच्च अफ़सरों के वेतनों में जो १० फ़ी सदी कमी की जायगी, उसमें इनकम टैक्स वग़ैरह भी शामिल रहेगा, तब मालूम होता है कि उनके वेतन में वास्तव में साढ़े सात फ़ी सदी कमी को
इन प्रस्तावों के विरुद्ध कम वेतन पाने वाले क्लर्कों की शिकायतें उचित हैं और हम समझते हैं कि इनमें बाद संशोधन करना पड़ेगा।

कम वेतन पाने वाले क्लर्कों को इनकम टैक्स देने के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष कर भी देना पड़ेगा। उन्हें लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, तम्बाकू, नमक और प्रत्येक विदेश से आई हुई वस्तु के लिए अधिक देना पड़ेगा, जिसका वे प्रयोग करते हैं। हम अर्थ-मन्त्री की कठिनाइयों को समझते हैं, परन्तु हमें विश्वास है कि वे ग़रीबों पर अनुचित बोझ का लादना रोक सकते थे। बहुत-कुछ भाग उन लोगों पर रक्खा जा सकता था, जो अधिक दे सकते हैं।

वर्तमान नीति परिस्थिति को केवल और भी गम्भीर बनाने वाली प्रमाणित होगी। —"इण्डियन नेशन"

ख़ूबसूरत फ़ोटो खींचने वाले "भारतीय कैमरा" के विषय में दिल्ली के सुप्रसिद्ध हिन्दी दैनिक पत्र

'अर्जुन'-सम्पादक

लिखते हैं :—"हमने 'भारतीय कैमरा' का इस्तेमाल करके देखा। फ़ोटो बहुत अच्छी आती है। हमारी राय में जो शौक़ीन विलायत के ४०)-५०) के कैमरे ख़रीद कर शौक़ पूरा करते हैं, उनका शौक़ इस कैमरे द्वारा बहुत थोड़े दामों में पूरा हो सकता है।" ३।×४। इञ्च साइज़ की तस्वीर खींचने वाले कैमरा का मूल्य ३) डाकख़र्च ।॥-) १ प्लेट, काग़ज़, मसाले व हिन्दी में आसान तरकीब मुफ़्त।

पता—दीन ब्रादर्स अलीगढ़, नं० ९

५) को पुस्तकें १॥) में

१—विश्वव्यापार-भण्डार—अर्क कपूर, सोडा-वाटर, रोशनाई, सिगरेट, शर्बत, रबड़ की मुहर बना धन कमाओ। मू० १)

२—साबुनसाज़ी—हर प्रकार के साबुन बनाना सीख लो। मू० १)

३—हिन्दी-इङ्गलिश टीचर—बिना मास्टर अङ्गरेज़ी पढ़ना-लिखना, बोलना, तार, अर्ज़ी वग़ैरह सीख लो। मू० १)

४—हारमोनियम, तबला, सितार गाइड—२-३ माह में गाना-बजाना बिना उस्ताद तीनों चीज़ों को सीख लो। मू० १)

पूरा सेट १॥) में ख़र्च ॥) एक पुस्तक का पूरा दाम
पता—सत्यसागर कार्यालय, नं० २५ अलीगढ़ सिटी

इस प्रतिष्ठित फ़र्म से हम पूर्णतया परिचित हैं और हमारा विश्वास है कि यहाँ से माल मँगाने वालों को कभी शिकायत करने का मौक़ा न मिलेगा।

—स० "भविष्य"

ग्रामोफ़ोन, फ़ोटो का सामान, गृह-सिनेमा, घरेलू जर्मन औषधियाँ, परफ़्यूमरी इत्यादि के थोक तथा खुदरा विक्रेता—

बी० सराफ़ एण्ड कम्पनी

नं० १५ चितरञ्जन एभेन्यु साउथ कलकत्ता

सूचीपत्र के लिए लिखें

सिर्फ़ एक महीना के लिए क़ीमत कम कर दी गई

५ रु० को पुस्तकें २ रु० में

सचित्र कोकशास्त्र—८४ आसनों के चित्र, स्त्री-पुरुषों के गुप्त भेद, लक्षण, गर्भाधान नियम, मनचाही सन्तान पैदा करना, नामर्द को मर्द और बाँझ को सन्तान युक्त बनाना, शकुन, सामुद्रिक, वशीकरण, यन्त्र-मन्त्र सहित मू० १)

हिन्दी-इङ्गलिश टीचर—बिना मास्टर केवल तीन माह में अङ्गरेज़ी पढ़ना-लिखना, बोलना-चालना, तार, अर्ज़ी वग़ैरः लिखना सब सीख लो मू० १)

सच्चा जादूगर—अनेक आश्चर्यान्वित खेल-तमाशे जैसे रुपया गुप्त करना, लोहे की गरम ज़ञ्जीर को हाथ से सूतना, मनुष्य को पशुवत बना देना, जूते का कबूतर बनाना, बिना आग चावल पकाना इत्यादि सीख लेंगे। मू० १)

सचित्र करामात—मैस्मरेज़्म हिप्नाटिज़्म, छाया पुरुष सिद्धि, दूसरे को वश में करना, गड़े धन का पता लगाना, मृतक मित्रों से बातचीत करना, हाथ फेर कर तथा फूँक मार कर आरोग्य करना, भूत, भविष्यत का हाल जानना, करामाती अँगूठी, प्लानचेट इत्यादि बनाना लिखा है। मू० १)

उपरोक्त ४ पुस्तकें केवल एक माह तक ही दो रुपए में डाक-ख़र्च ।=)

पता—विजय ट्रेडिङ्ग क०, नं० १, अलीगढ़ सिटी

इससे बढ़ कर और क्या कर सकते हैं ?

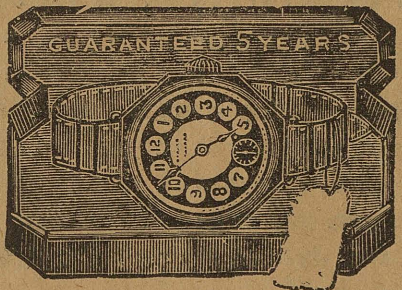

नापसन्द होने से मूल्य वापिस, लिखित गारण्टी ५ वर्ष

'रेडियम' रिस्टवाच

घोर अन्धकार में भी साफ़-साफ़ समय बताती है। बढ़िया 'स्विस' मशीन, अत्यन्त सुन्दर, छोटा साइज़ और मनोहर शक्ल, ठीक समय बताने में इतनी सच्ची है कि कभी एक मिनट का फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। टिकाऊ और मज़बूत ऐसी है कि वर्षों तक मरम्मत की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। ज़्यादा तारीफ़ करना व्यर्थ है। व्यवहार से ही इसकी असली जाँच होगी।

निकल सिल्वर की ५॥) ; सुनहरी पालिश की ६॥)

डॉक-ख़र्च ।=) अलग, दो एक साथ लेने से डाक ख़र्च मुफ़्त।

यूनियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी, १७७, हरीसन रोड (H/2) कलकत्ता

गर्मी और सुज़ाक की अकसीर दवा

यह पानी रोग चाहे नया हो या पुराना, लेकिन इस दवा से १ ही दिन में फ़ायदा और ३ हफ़्ते में जड़ से आराम हो जाता है और फिर यह रोग कभी नहीं पास फटकता है। अच्छे मार्ग में चलने से यह दवा सालसा के माफ़िक़ ख़ून को साफ़ करके नया ख़ून रग-रग में दौड़ा देती है। उपदंश (गर्मी), आतशक और मेह प्रमेह (गनोरिया वा सुज़ाक) को जड़ से खो देती है। स्त्रियों के भी सुज़ाक, जिसके कारण बार-बार पेशाब का उतरना, जलन होना, बूँद-बूँद पेशाब गिरना, मूत्र नली से पानी के समान या गाढ़ा मवाद के समान दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलना आदि तुरन्त इस दवा से आराम होते हैं। जरूर मँगा कर देखिए, ३ सप्ताह यानी २१ दिन की ४२ ख़ुराक की क़ीमत सिर्फ़ २॥); डाक-ख़र्च ॥=) इस दवा में नुक़सान पहुँचाने वाली कोई भी चीज़ नहीं, सब काष्ट औषधियाँ (जङ्गली जड़ी-बूटियाँ) हैं। सेवन-विधि दवा के साथ दी जाती है।

भारत भैषज्य-भण्डार, ७८ नं० कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता

६॥) में एक वर्ष 'चाँद' पढ़िए; और हर महीने पुरस्कार लीजिए !

क्या आप 'चाँद' के ग्राहक हैं ?

यदि नहीं, तो शीघ्र ही बन जाइए !

क्योंकि

अक्टूबर मास से 'चाँद' में ऐसी विशेषताओं का समावेश किया गया है जो किसी हिन्दी के पत्र में देखने को भी न मिलेंगी, जैसे :-

१—'चाँद' का सम्पादन इङ्गलैण्ड, जर्मनी, फ़ान्स आदि देशों के बढ़िया से बढ़िया मासिक पत्रों के ढङ्ग पर होने लगा है।

२—'चाँद' में इस महीने से सिनेमा तथा रङ्गमञ्च सम्बन्धी लेख, समाचार तथा चित्र प्रकाशित होने लगे हैं।

३—'चाँद' में वैज्ञानिक जगत की आधुनिक खोजों के समाचारों के लिए एक नया स्तम्भ खोल दिया गया है।

४—'चाँद' में निकलने वाले लेखों, कहानियों तथा कविताओं का स्टैण्डर्ड और भी ऊँचा कर दिया गया है।

५—'चाँद' की ओर से शीघ्र ही एक चिकित्सा-विभाग स्थापित होने वाला है, जिसके द्वारा ग्राहकों के चिकित्सा-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर दिए जायँगे।

६—'चाँद' में जो सबसे बड़ी नई विशेषता है, वह है इसका 'पुरस्कार-प्रतियोगिता' विभाग। 'चाँद' में प्रति मास एक ऐसी विचित्र, परन्तु सरल बात रहेगी, जिसके हल करने वाले ग्राहक को पुरस्कार दिया जायगा। अक्टूबर के 'चाँद' में ही एक खाना-पूर्ति (Cross-word puzzle) निकला है, जिसके सही उत्तर देने वाले को १५) का पुरस्कार मिलेगा। नवम्बर के विशेषाङ्क में भी पुरस्कार के लिए एक पहेली रहेगी। परन्तु याद रखिए, यह पुरस्कार केवल 'चाँद' के रजिस्टर्ड ग्राहकों को ही मिलेगा।

आज ही अक्टूबर का 'चाँद' मँगा कर पढ़िए और स्थाई ग्राहकों में नाम लिखा लीजिए !

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

लन्दन-प्रवासी जिन डॉक्टर धनीराम 'प्रेम' की कहानियों को पढ़ने के लिए 'चाँद' और 'भविष्य' के पाठक उत्सुक रहते हैं, जिनकी पहली ही कहानी 'डोरा' ने कहानी-संसार में हलचल मचा दी थी, बल्लरी उन्हीं की ग्यारह सरस सुन्दर कहानियों का संग्रह है। इसकी 'डोरा' कहानी में जहाँ आप करुणा की आहत सिसकियों से तड़प उठेंगे, 'कहानी-लेखक' में हास्य और कौतूहल का सामञ्जस्य देख कर अवाक् रह जायँगे, वहीं 'वेश्या का हृदय' और 'वह मुस्कान' में अन्तर के घात-प्रतिघातों का चित्र देख कर आपको स्तम्भित रह जाना पड़ेगा। 'चाँद' और 'भविष्य' में छपी हुई कई कहानियों के अतिरिक्त इसमें 'वह मुस्कान', 'गीत', और 'डोरा का रूमाल' आदि कई नई कहानियाँ भी हैं। जिन्होंने डोरा नाम की कहानी पढ़ी है, वे यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि 'डोरा के रूमाल' का क्या हुआ। यह बात पाठकों को 'डोरा का रूमाल' कहानी पढ़ने पर ही मालूम होगी और यह कहानी इसी पुस्तक में पढ़ने को मिल सकेगी।

यह उन अनमोल कहानियों का संग्रह है, जो आज तक हिन्दी-संसार में अप्राप्य थीं। इसकी प्रत्येक कहानी अत्यन्त रोचक, मधुर एवं अमूल्य है। जिस विषय को लेकर देवी जी ने कहानी प्रारम्भ की है, उसका सजीव चित्र दिखला दिया है। किसी कहानी में दीनता की करुण पुकार है, तो किसी में वीर-रस की धारा प्रवाहित हो रही है। किसी में दाम्पत्य प्रेम का स्वर्गीय आनन्द उमड़ रहा है, तो किसी में मातृ-भूमि का आर्तनाद एवं उसकी दयनीय विवशता देख कर हृदय छटपटा उठता है और देशभक्ति की उमङ्ग से मनुष्य पागल-सा हो उठता है। अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी कहानियाँ आपने आज तक न पढ़ी होंगी। भाषा ऐसी सरल एवं मधुर है कि एक छोटा सा बच्चा भी आनन्द उठा सकता है। पुस्तक छप रही है, शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए!

व्यवस्थापक—'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक इलाहाबाद,

Edited, Printed and Published by Shrimati Lakshmi Devi, at The Fine Art Printing Cottage, 28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitzation possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for faciliating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

CSDS
centre for the study of developing societies

BRITISH LIBRARY